# बवंडर बाहर-भीतर

अभिमन्यु अनत



इस सग्रह की कहानियॉ मुख्यत मॉरीशस की राजनीति, समाज, धर्म, सस्कृति आदि के जीवत सत्यो का उद्घाटन करती हैं। मॉरीशस की स्वतत्रता के बाद वहॉ के समाज मे राजनेताओ का जा पतन हुआ है, तस्करी, भ्रष्टाचार और देशद्रोहिता जिस रूप मे पनपी है, आदमी-आदमी के रिश्ता मे जो गिरावट आई है, स्त्री के शोषण की जो परिस्थितियॉ बनी हुई है, नैतिकता एव मानवीय रिश्ते जेसे खंडित हो रहे हैं, उन्हे लेखक ने सजीवता के साथ इन कहानियो मे प्रस्तुत किया है। ये कहानियॉ ऐसे बवडर को उजागर करती हैं जो मॉरीशस के जन-जीवन को अदर-बाहर दोनो ओर से मथ रहा है।

बवडर

बाहर-भीतर

# [illegible] बाहर-भीतर

अभिमन्यु अनत

[illegible]
के सौजन्य से प्राप्त

ज्ञान गंगा, दिल्ली

# बाहर-भीतर

अभिमन्यु अनत

के सौजन्य से प्राप्त

ज्ञान गंगा, दिल्ली

प्रकाशक ज्ञान गगा, २०५-सी चावडी बाजार, दिल्ली-११०००६
सर्वाधिकार सुरक्षित / सस्करण प्रथम, २००२ / मूल्य एक सौ पचास रुपए
मुद्रक प्रिट परफैक्ट, नई दिल्ली ISBN 81 88139-20-3

BAWANDAR BAHAR BHEETAR *stories* by Abhimanyu Anat
Published by Gyan Ganga 205-C Chawri Bazar Delhi 110006
Rs 150 00

# भूमिका

अभिमन्यु अनत के कहानी सग्रहो—'खामोशी के चीत्कार' (१९७६), 'इनसान और मशीन' (१९७६), 'वह बीच का आदमी' (१९८१) तथा 'एक थाली समदर' (१९८७) के बाद अब उनका पाँचवाँ कहानी सग्रह 'बवडर बाहर-भीतर' सन् २००२ मे छपकर पाठको के सम्मुख है। इस अतराल का कारण यह नहीं है कि अनत ने कहानी लिखना बद कर दिया है, बल्कि सत्यता यह है कि इस सग्रह के बाद भी सौ से अधिक कहानियाँ सग्रहो मे छपने से रह गई हैं। कई बार लेखक से तथा अनत के मेरे जेसे मित्रो स भी अनजाने मे ऐसी लापरवाही हो जाती है, परतु मेरा विश्वास है कि शेष कहानियाँ भी शीघ्र ही सग्रहो के रूप मे पाठको तक पहुँच सकेगी।

अभिमन्यु अनत मॉरीशस की हिदी कहानी के केद्र-बिदु हैं। अभिमन्यु के हिदी कहानी मे पदार्पण से एक नए युग, एक नई चेतना और एक नई सवेदना का युग आरभ होता है। यह ऐसा ही था जैसे प्रेमचद ने हिदी कहानी का कायाकल्प कर दिया। अभिमन्यु ने मॉरीशस की हिदी कहानी को आधुनिक रूप दिया और उसे अतीत की यत्रणा, वर्तमान के मानवीय सकट एव अनाचार तथा भविष्य मे मानव-मुक्ति के आह्वान से सार्थक बनाया। अभिमन्यु की कहानियो का अतीत गोरे मालिको की दासता, शोषण और अत्याचार से घिरा है और वर्तमान अपने ही मालिको की राजनीति, देशद्रोहिता, स्वार्थपरता, भेद-भाव, मूल्यहीनता, पतनशीलता तथा घोर अमानवीय एव अलोकतात्रिक प्रवृत्ति से, लेकिन इसपर भी कहीं-कहीं मानव-मुक्ति की किरण भविष्य की कल्पना मे चमक जाती है। अभिमन्यु कल्पनाजीवी नहीं हैं और न दिवास्वप्न-प्रेमी, वह अपनी कहानियो मे अपने देश की चिता और नियति के सत्य को उद्घाटित करते है। वह किसी साहित्यिक 'माफिया' या 'दलित-स्त्री' विमर्श के बिना ही अपने समाज के पीडितो और शोषितो के साथ हैं।

इनका उत्थान ही उसके लिए देश का उत्थान है।

'बवडर बाहर-भीतर' कहानी सग्रह मे सत्रह कहानियॉ है, जिनमे चार लघुकथाएँ हैं। ये कहानियॉ मुख्यत मॉरीशस की राजनीति, समाज, धर्म, सस्कृति आदि के जीवत सत्यो का उद्घाटन करती हैं। मॉरीशस की स्वतत्रता के बाद वहॉ के समाज मे राजनेताओ का जो पतन हुआ है, तस्करी, भ्रष्टाचार और देशद्रोहिता जिस रूप मे पनपी है, आदमी-आदमी के रिश्तो मे जो गिरावट आई है, स्त्री के शोषण की जो परिस्थितियॉ बनी हुई हैं, नैतिकता एव मानवीय रिश्ते जैसे खडित हो रहे है, उन्हे लेखक ने सजीवता के साथ इन कहानियो मे प्रस्तुत किया है। ये कहानियॉ ऐसे बवडर को उजागर करती हैं जो मॉरीशस के जन-जीवन को अदर-बाहर दोनो ओर से मथ रहा है।

मॉरीशस मे लोकतत्र लोक का नहीं, भ्रष्ट नेताओ का तत्र हो गया है। चुनाव मे दॉव-पेच, जात-पॉत, झूठे आश्वासन आदि सभी वहॉ जड जमा रहे है। मत्री बनने पर तस्करी और रिश्वत लेने मे भय समाप्त हो रहा है। जनता ने गोरे मालिको के अत्याचार सहन किए, अब अपने चुने नेताओ को सहन कर रही है। राजनीति मे हिसा तक घुस आई है। धर्म अब साप्रदायिक दगो मे बदल रहा है। मनुष्य के आपसी रिश्ते विकृत हो रहे हैं। पति-पत्नी के रिश्तो मे मॉ, प्रेमी या प्रेमिका आकर विद्वेष, घृणा और टूटन पैदा कर रही हैं। स्त्री पुरुष के स्वार्थो की शिकार है तथा वह अपना स्वतत्र मार्ग बना रही है, लेकिन वेश्यावृत्ति फैल रही है और विदेशी मॉरीशस की लडकियो से शादी करके उन्हे अपने देश मे वेश्या बना रहे है। वेश्यावृत्ति का ऐसा आलम है कि बच्चे भी दलाली मे उतर रहे हैं। मॉरीशस का समाज ऐसे ही बाहर-भीतर के बवडर मे घिरा है। मानवीय पतन उसे चारो ओर से घेरे चले जा रहा है। मॉरीशस के इस समाज की यदि हम भारत से तुलना करे तो दोनो देशो की समस्याएँ एक जैसी प्रतीत होती हैं।

मेरा विश्वास है, ये कहानियॉ पाठक को आज के मॉरीशस का परिचय दे सकेगी और अभिमन्यु की कहानी-यात्रा के इस मोड को भी जानने और समझने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

**—कमल किशोर गोयनका**

ए-९८ अशोक विहार
फेज प्रथम दिल्ली-११००५२
१ जनवरी २००२

# अनुक्रम

# इतिहास का वर्तमान

एक बार जब बोनोम नोनोन अपने मित्र बिसेसर के साथ अपनी कुटिया के सामने ढपली बजाता हुआ जोर-जोर से सेगा गाने आर नाचने लगा था तो मेस्ये गिस्ताव रोवियार उस तक पहुँच आया था। उस शाम पहले ही से जीवे की बोतल खाली किए बैठे नोनोन ने जगेसर से चिलम लेकर गॉजे के दो लबे कश भी ले लिये थे। उस ऊँचे स्वर के गाने के कारण मेस्ये रोवियार ने नोनोन को डॉटते हुए कहा था कि वह जगलियो की तरह शोर मत करे। रोवियार की नजर बिसेसर पर नही पडी थी, क्योकि अपने पुराने मालिक के बेटे को दूर ही से ढलान पार करते बिसेसर ने देख लिया था। बिसेसर का घर नदी के उस पार था, जो इस इलाके मे नही आता था। इस इलाके मे बिसेसर का आना मना था, पर अपन मित्र नोनोन से मिलने वह कभी-कभार आ ही जाता था। शक्कर कोठी के छोटे मालिक गिस्ताव का आलीशान मकान, जिसे बस्ती के लोग 'शातो' कहत थे, वास्तव मे एक महल ही तो था। नोनोन की झोपडी से ऊपर जहॉ पहाडी दूर तक समतल थी ओर जहॉ यह महल स्थित था, वह स्थान तीन ओर से हरे-भरे मनमोहक पेडो से घिरा हुआ था।

उस ऊँचाई पर आज सेगा के उस दिन के शोर से भी अधिक ऊँचे शोर के साथ वाला सगीत 'शातो' से गूँजता हुआ बोनोम नोनोन की कुटिया तक पहुँच रहा था। रात चॉदनी लिये हुई थी। बादल के टुकडे मस्ती के साथ पश्चिमी क्षितिज की तरफ भागे जा रहे थे। बादलो के पीछे जब-तब चॉद के छिप जाने से ऊपर के पेडो की डालियो के हिलने से पत्तो के बीच 'शातो' की रोशनी झिलमिला उठती। उस कोलाहल के बीच भी नोनोन अपनी ढपली के साथ अपने भाई सिमोन का रचा हुआ सेगा गुनगुनाता रहा। हवा मे ऊपर से आती हुइ रात की रानी तथा अन्य फूल-पौधो की भीनी-भीनी गध नोनोन और बिसेसर की नाको को छूती हुइ माहौल मे बनी रही।

इन भीनी-भीनी गधो ने एक बार फिर बिसेसर के भीतर अपने इकलौते बेटे की याद को ताजा कर दिया। ऐसी ही चॉदनी रात थी। ऐसी ही ठडक। ठीक सामने के नोनोन द्वारा सुलगाई अँगीठी के अगारे जैसी ही आँच बिसेसर अपने घर के भीतर ताप

रहा था, जब गिस्ताव रोवियार दो बदूकधारियो के साथ उसके दरवाजे पर धक्के देकर भीतर आ गया था। बिसेसर की बीमार पत्नी चारपाई पर थी। बदूकधारियो को देख वह चिल्ला उठी थी। उससे भी अधिक जोर से गिस्ताव रोवियार चिल्लाया था।

'कहॉ हे वह सुअर का बच्चा ?'

एक बदूक बिसेसर की कनपटी पर और दूसरी बिसेसर की पत्नी की छाती पर तन गइ थी। इस घटना के सप्ताह भर बाद बिसेसर की पत्नी, रमेसर की मॉ अपने बेटे की हाय-हाय मे चल बसी थी। रमेसर आज तक लौटकर घर नहीं आया। छह महीने बाद बस्ती मे कानाफूसी होती रही थी।

'मेस्ये गिस्ताव रोवियार की बेटी ने जिस बच्चे को जन्म दिया था, उसे नदी के हवाले कर दिया गया।'

सवाल और भी धीमी आवाज मे पूछा जाता रहा।

'पर ऐसा क्यो ?'

'क्योकि बच्चे का रग सॉवला था ओर उसकी ऑखे नीली न होकर काली थी। बिसेसर का शक्कर कोठी के इलाके मे प्रवेश वर्जित हो गया। उसी घडी से बिसेसर जब भी चोरी-चुपके अपने दोस्त नोनोन के सामने होता तो वह बातो के दौरान अनायास विषयातर लाकर कह जाता।'

'मेरा रमेसर अगली पूर्णमासी तक घर लोटकर रहेगा।'

बोनोम नोनोन रमेसर को हमेशा आगाह करता रहा था कि वह छोटे मालिक की कोठीवाले इलाके से अपने को हमेशा दूर रखे। नोनोन का बाप इस द्वीप मे अपने दो बेटो के साथ दास के रूप मे लाया गया था। दासो की फेहरिस्त मे नोनोन का नाम गाब्रियेल जोजे ताननारीव था। उस समय नोनोन अपना उन्नीसवॉ साल पूरा कर चुका था। जब दास-प्रथा का अत हुआ तो नोनोन पच्चीस साल का था। सुनता रहा था कि अब उसके लोगो को चाबुको की मार नही सहनी पडेगी। उन्हे कोल्हू के बैल बनने की नौबत अब फिर नही आएगी। लेकिन वक्त के साथ नोनोन को लगा कि दास-प्रथा का अत बद कमरे मे कागज पर हुआ था। वह जिस शक्कर कोठी मे मजदूर था, वहॉ दासता नही मिटी थी। न उसके साथ ओर न ही भारत से लाए गए गिरमिटिया मजदूरा के साथ। उन्ही दिनो के यातना शिविरो मे से एक मे उसकी मुलाकात बिसेसर से हुइ थी। दोनो एक दिन अपने गोरे मालिक के हाथ से कोडा छीनकर उसके सामने तनकर खडे हो गए थे। सभी मजदूर सहमे हुए दूर खडे रह गए थे और देखते-ही-देखते गोरे मालिक के चार सरदार दोनो पर बदूके लिये झपट पडे थे। नोनोन ने झट अपने से छह साल छोटे बिसेसर का हाथ थामा था और पहाड की ओर

जानेवाली चक्करदार पगडडी पर दोनो दौड गए थे। पूरी शाम, पूरे दिन और आधी रात भागते रहने के बाद नोनोन और बिसेसर ने नोनोन के बडे भाइ सियोन की बस्ती मे पहुँचकर पनाह पाइ थी।

अपने भाई की मृत्यु के बाद आज उसी बस्ती मे नोनोन अस्सी की अवस्था को पार कर रहा था। बस्ती के किसी घर के लिए कुएँ से पानी लाकर चार पेसे कमा लेता था तो किसी घर के लिए लकडियाँ लाकर चवन्नी का हकदार हो जाता था। पहली बार जब बिसेसर ने 'शातो' से आ रहे उस जोरो के सगीत पर आश्चय प्रकट करते हुए पूछा था कि ये इतने जोर से गाने-बजानेवाले कौन हा सकते हे, तो नोनोन ने बताया था, 'यार, यह मशीन की आवाज हे, गाने-बजानेवाली मशीन।'

बहुत बाद मे बिसेसर अपनी आँखो से उस गाने-बजानेवाली मशीन को महेद्र के घर मे देख पाया था। उस दिन जब बिसेसर को पहली बार नदी से निकलती हुई वह दो-तीन सालवाली लडकी दिखाई पडी थी तो उसने देखा था कि महेद्र उसकी बगल मे चल रहा था। शाम का समय था। दोनो पडोस के मेस्ये मारते की कोठी से गन्ने काट-लादकर घर लौट रहे थे।

बिसेसर ने किनारे खडे होकर अपने साथी से पूछा था, 'महेद्र! यह छोटी बच्ची इस सुनसान डगर पर?'

बिसेसर के साथी ने सामने देखा था और किसी भी बच्ची को न देखकर पूछ बैठा था, 'कहाँ?'

'वह पेडो की आड मे जा छिपी।'

एक सप्ताह बाद फिर उसी ठौर पर ठिठककर बिसेसर ने दोबारा उस बच्ची को देखा और महेद्र को साथ लिये नदी किनारे के पेडो के बीच पहुँचकर वह बच्ची को ढूँढता रहा था। ऐसा और भी कई बार हुआ और हर बार महेद्र ने लगभग एक बात कही, 'तुम गाँजे का दम लेना बद करो।'

और हर बार बिसेसर भी एक ही जैसा जवाब देता रहा था, 'मेरी बात मानो, मैंने उस बच्ची को नदी से निकलकर चलते देखा है। बार-बार मेरी आँखो को धोखा हो सकता है क्या?'

बार-बार महेद्र कहता रहा कि दिन भर की भारी थकान के बाद दिमाग का कुछ इस तरह डगमगा जाना सभव हो सकता है।

जब अपने मित्र नोनोन को पहली बार बिसेसर ने यह बात बताई थी तो वह यही कह गया था कि कभी-कभार थकान से ऐसा हो जाया करता है। लेकिन जब आज पाँचवी या छठी बार के लिए बिसेसर ने यह कहा कि आज तो वह बच्ची उसके एकदम

रहा था, जब गिस्ताव रोवियार दो बदूकधारियो के साथ उसके दरवाजे पर धक्के देकर भीतर आ गया था। बिसेसर की बीमार पत्नी चारपाई पर थी। बदूकधारियो को देख वह चिल्ला उठी थी। उससे भी अधिक जोर से गिस्ताव रोवियार चिल्लाया था।

'कहॉ है वह सुअर का बच्चा ?'

एक बदूक बिसेसर की कनपटी पर और दूसरी बिसेसर की पत्नी की छाती पर तन गई थी। इस घटना के सप्ताह भर बाद बिसेसर की पत्नी, रमेसर की मॉ अपने बेटे की हाय-हाय मे चल बसी थी। रमेसर आज तक लौटकर घर नहीं आया। छह महीने बाद बस्ती मे कानाफूसी होती रही थी।

'मेस्ये गिस्ताव रोवियार की बेटी ने जिस बच्चे को जन्म दिया था, उसे नदी के हवाले कर दिया गया।'

सवाल और भी धीमी आवाज मे पूछा जाता रहा।

'पर ऐसा क्यो ?'

'क्योकि बच्चे का रग सॉवला था और उसकी ऑखे नीली न होकर काली थी। बिसेसर का शक्कर कोठी के इलाके मे प्रवेश वर्जित हो गया। उसी घडी से बिसेसर जब भी चोरी-चुपके अपने दोस्त नोनोन के सामने होता तो वह बातो के दोरान अनायास विषयातर लाकर कह जाता।'

'मेरा रमेसर अगली पूर्णमासी तक घर लौटकर रहेगा।'

बोनोम नोनोन रमेसर को हमेशा आगाह करता रहा था कि वह छोटे मालिक की कोठीवाले इलाके से अपने को हमेशा दूर रखे। नोनोन का बाप इस द्वीप मे अपने दो बेटो के साथ दास के रूप मे लाया गया था। दासो की फेहरिस्त मे नोनोन का नाम गाब्रियेल जोजे तानानारीव था। उस समय नोनोन अपना उन्नीसवॉ साल पूरा कर चुका था। जब दास-प्रथा का अत हुआ तो नोनोन पच्चीस साल का था। सुनता रहा था कि अब उसके लोगो को चाबुको की मार नही सहनी पडेगी। उन्हे कोल्हू के बैल बनने की नौबत अब फिर नही आएगी। लेकिन वक्त के साथ नोनोन को लगा कि दास-प्रथा का अत बद कमरे मे कागज पर हुआ था। वह जिस शक्कर कोठी मे मजदूर था, वहॉ दासता नही मिटी थी। न उसके साथ और न ही भारत से लाए गए गिरमिटिया मजदूरो के साथ। उन्ही दिनो के यातना शिविरो मे से एक मे उसकी मुलाकात बिसेसर से हुई थी। दोनो एक दिन अपने गोरे मालिक के हाथ से कोडा छीनकर उसके सामने तनकर खडे हो गए थे। सभी मजदूर सहमे हुए दूर खडे रह गए थे और देखते-ही-देखते गोरे मालिक के चार सरदार दोनो पर बदूके लिये झपट पडे थे। नोनोन ने झट अपने से छह साल छोटे बिसेसर का हाथ थामा था और पहाड की ओर

जानेवाली चक्करदार पगडडी पर दोनो दौड गए थे। पूरी शाम, पूरे दिन और आधी रात भागते रहने के बाद नोनोन और बिसेसर ने नोनोन के बडे भाई सियोन की बस्ती मे पहुॅचकर पनाह पाई थी।

अपने भाई की मृत्यु के बाद आज उसी बस्ती मे नोनोन अस्सी की अवस्था को पार कर रहा था। बस्ती के किसी घर के लिए कुएँ से पानी लाकर चार पैसे कमा लेता था तो किसी घर के लिए लकडियॉ लाकर चवन्नी का हकदार हो जाता था। पहली बार जब बिसेसर ने 'शातो' से आ रहे उस जोरो के सगीत पर आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा था कि ये इतने जोर से गाने-बजानेवाले कौन हो सकते है, तो नोनोन ने बताया था, 'यार, यह मशीन की आवाज है, गाने-बजानेवाली मशीन।'

बहुत बाद मे बिसेसर अपनी ऑखो से उस गाने-बजानेवाली मशीन को महेद्र के घर मे देख पाया था। उस दिन जब बिसेसर को पहली बार नदी से निकलती हुई वह दो-तीन सालवाली लडकी दिखाई पडी थी तो उसने देखा था कि महेद्र उसकी बगल मे चल रहा था। शाम का समय था। दोनो पडोस के मेस्ये मारते की कोठी से गन्ने काट-लादकर घर लौट रहे थे।

बिसेसर ने किनारे खडे होकर अपने साथी से पूछा था, 'महेद्र। यह छोटी बच्ची इस सुनसान डगर पर ?'

बिसेसर के साथी ने सामने देखा था और किसी भी बच्ची को न देखकर पूछ बैठा था, 'कहॉ ?'

'वह पेडो की आड मे जा छिपी।'

एक सप्ताह बाद फिर उसी ठौर पर ठिठककर बिसेसर ने दोबारा उस बच्ची को देखा और महेद्र को साथ लिये नदी किनारे के पेडो के बीच पहुॅचकर वह बच्ची को ढूँढता रहा था। ऐसा और भी कई बार हुआ और हर बार महेद्र ने लगभग एक बात कही, 'तुम गॉजे का दम लेना बद करो।'

और हर बार बिसेसर भी एक ही जैसा जवाब देता रहा था, 'मेरी बात मानो, मैने उस बच्ची को नदी से निकलकर चलते देखा है। बार-बार मेरी ऑखो को धोखा हो सकता है क्या ?'

बार-बार महेद्र कहता रहा कि दिन भर की भारी थकान के बाद दिमाग का कुछ इस तरह डगमगा जाना सभव हो सकता है।

जब अपने मित्र नोनोन को पहली बार बिसेसर ने यह बात बताई थी तो वह यही कह गया था कि कभी-कभार थकान से ऐसा हो जाया करता है। लेकिन जब आज पॉचवी या छठी बार के लिए बिसेसर ने यह कहा कि आज तो वह बच्ची उसके एकदम

पास तक आकर फिर से नदी की ओर दौड गई थी, तो नोनोन एकदम गभीर हो गया। उसे अपने भाई सियोन की याद आ गई। एक बार जब वह अपनी नगी पीठ पर चाबुक के बेशुमार निशान लिये घर लौटा था तो कुटिया के बाहर चहलकदमी करता हुआ स्वय से ही बडबडाने लगा था। नोनोन को अच्छी तरह याद है।

'वह परी कहाँ चली गई ? कितनी खूबसूरत थी ! कितनी मीठी थी उसकी आवाज !' नोनोन ने टोका था।

'क्या बके जा रहे हो ?'

'अरे नोनोन ! वह सीधे आसमान से उतरकर मेरे आगे आई थी।'

'चलो, भीतर चलकर आराम करो।'

'आओ देखो, मेरी पीठ पर उसकी कोमल अँगुलियो के निशान। उन अँगुलियो के स्पर्श को मै अभी भी अपनी पीठ पर अनुभव कर रहा हूँ।'

'क्या बके जा रहे हो, भाई ?'

'वह देखो, आसमान से वह परी फिर उतरने लगी।'

'वह रह बनी रहती।'

रात भर सियोन उस परी की बात करता रहा था। बीच-बीच मे दर्द से कराहता भी रहा था। सुबह नोनोन ने उसे गरम चाय देने के बाद पूछा था, 'यह मार क्यो पडी तुम्हे ? मालिक के सरदारो से फिर हुज्जत कर बैठे होगे।'

अपने सामने के शून्य को अपलक देखते हुए सियोन ने सारी बात बताई थी, 'खेतो की कडकती धूप मे सभी मजदूर पसीने से तर जोरो के प्यासे थे। पानी वाला जो पानी छोड गया था, उसे ताँगेवाले ने घोडे पर उडेल दिया था। हुसेन जब प्यास के कारण बेहोश होकर गिर पडा तो मै दौडकर ताँगे मे रखी मालिक की पानी की बोतल सभी सरदारो की आँखे बचाकर चुरा लाया। हुसेन के चेहरे पर छीटे देकर मै उसे पानी पिला रहा था। तभी दो सरदारो ने दोनो तरफ से आकर मुझे दबोच लिया। वे मुझे घसीटते हुए नदी के पास ले गए, जहाँ मालिक पेड की छाँव मे ऊँघ रहा था। सरदारो से बात जानकर वह अपनी लकडी की कुरसी पर से उठा। लाल आँखो से मुझे घूरा और बगल मे खडे पखा झलनेवाले से चाबुक ले आने को कहा। उसके जूते की मार खाकर मैं जमीन पर गिर पडा था। चाबुक आ जाने पर गालियो की बौछार के साथ उसने मुझपर कोडे बरसाने शुरू किए। जब गोरे हाथ थक गए तो मलगासी सरदार के काले हाथ मेरी पीठ पर तब तक कोडे बरसाते रहे जब तक मै बेहोश नही हो गया।

इसके बाद सियोन फिर से उस कोठी को नहीं लौटा, नोनोन को छोडकर द्वीप

के इस छोर से उस छोर तक मारा-मारा फिरता रहा। और फिर एक दिन ल्वीज से मुलाकात हो जाने पर इधर ही बस गया था। लेकिन जब नोनोन अपनी बस्ती से भागकर इधर पहुँचा था तो ल्वीज नोनोन को यह कहकर रोलॉ के साथ चली गई थी कि दिन-रात ढपली बजाकर घर नही बसाया जा सकता। दोनो भाइयो मे पढा-लिखा कोई नही था, पर सियोन नोनोन से कही अधिक सुलझा हुआ था। भारतीय मजदूरो की ही तरह इतिहास ने उसके भाई को भी तोड देना चाहा था। सियोन ने अपने को टूटने नही दिया। नोनोन अभी उसी दिन बिसेसर से उस काली माई के चबूतरेवाली घटना पर बात कर रहा था। बिसेसर की बस्ती और रोनियार की कोठी के बीच काली माई का जो चौतरा था, उसका आधा हिस्सा रोवियार के आलीशान बॅगलेवाले भाग मे पडता था।

वहॉ से बॅगले तक एक सीधा रास्ता बनाने के लिए रोवियार ने सियोन को अपने पक्ष मे लेने के लिए उससे कहा था, 'इसे तोडने मे मदद करोगे तो तुम्हारे घरवाले इलाके की जमीन मै तुम्हारे नाम कर दूँगा।'

सियोन कभी तैयार नही हुआ। सियोन को अपने घर बुलाकर रोवियार ने उससे यह मॉग की थी कि बस्ती के हिदुओ को, जिनके साथ सियोन की गहरी आत्मीयता थी, वह मना ले। कम-से-कम इस बात के लिए राजी कर ले कि वे काली माई के चबूतरे को वहॉ से हटाकर दूसरी जगह पर रखने की बात को मान ले।

बस्ती के लोग जब काली माई के अपने स्थान पर बने रहने के लिए सियोन का आभार मानने लगे थे तो सियोन ने कहा था, 'आभार मेरा नही, मादाम रोवियार का मानना चाहिए, जो शुरू से काली माई को उसके स्थान से हटाने के पक्ष म नही थी।'

रही वह दूसरी बात। उसे तो गॉववाले पहले ही से जानते थे कि रोवियार की बेटी जब अपनी बच्ची को खोकर पागल हो उठी थी तो मादाम रावियार ने उमदत्त अहीर को रुपए देकर काली माई की विशेष पूजा करवाइ थी। अपनी बेटी की हालत के सुधर जाने पर वह खुद माई को प्रसाद चढाने आ गई थी।

अपने भाई की याद से अपने को मुक्त करके नोनोन अपने दोस्त बिसेसर की बातो को फिर से सुनने लगा, 'बहुत ही प्यारी बच्ची है नोनोन। सॉवला चेहरा, काली ऑखे ।'

'बिसू! तुम्हे अपनी पत्नी और बेटे की यादो से अपने को मुक्त करना चाहिए।'

'एकदम मेरे बेटे ही जैसा चेहरा। हॉ, मेरे दोस्त! एकदम रमेसरवाली मुसकान।'

'तुम मोह से विचलित हो। दिन मे सपने देखना बद करो।'

गिस्ताव रोवियार के घर से आनेवाला सगीत इधर कुछ दिनो से कुछ धीमा पड गया था।

राहत महसूस करते हुए नोनोन ने बिसेसर का ध्यान बॅटाने हेतु कहा, 'लगता है, रोवियार के दोनो मनचले लडको को अब इस बात का सतोष हो गया कि अब पूरी बस्ती के लोगो पर उनकी गानेवाली मशीन की धाक जम गई।'

सियोन की मृत्यु के बाद इन दोनो लडको ने कई बार रोवियार के साथ सियोन की कुटिया तक आकर उस जगह छोड जाने के लिए कहते रहे थे। गॉववालो ने पहले ही नोनोन को बता दिया था कि वह सरकारी जमीन थी और केवल सरकार ही उसे वहाँ से हटा सकती है। बिसेसर तो यहाँ तक कह गया था कि इतने वर्षो बाद अब तो सरकार भी उसे वहाँ से टस-से-मस नही कर सकती।

नोनोन के यहाँ से लौटते समय अॅधेरा छाने लगा था। पेडो के बीच की धूमिल पगडडी से बिसेसर नदी की बगल से गुजरा, जहाँ धुॅधलापन और भी गहन था। लगता था कि अचानक चारो ओर एकदम अॅधेरा छा जाएगा। नदी की कल-कल की ध्वनि माहौल को अधिक बेगानेपन से बचाए हुए थी। बुआन्वार के पेड से सूखी फलियो के बीज की झरझराहट रह-रहकर सिहरन पैदा कर जानेवाली होती थी। बिसेसर का बेटा जब पहली बार अपने बाप के साथ इस रास्ते से रात के वक्त गुजरा था तो सूखी फलियो की उस डरावनी झनझनाहट से डर गया था। वह उन पेडो को भूतिया पेड मान बैठा था। लेकिन उस शाम जब सोफिया उसकी बगल मे थी तो पहली बार वह आवाज उसे एक मधुर सगीत-सा प्रतीत हुई थी।

बेटे की याद आते ही उसे लगा कि रमेसर उसकी बगल मे चल रहा था। उसके कपडो से आनेवाली लावाद की वह सुगध आज भी जगली फूलो की गध पर मानो हावी हो गई। बिसेसर ने जब पहली बार अपने बेटे के हाथ मे वह शीशी देखी थी और उसके कपडो से उसकी खुशबू पाई थी तो उसने हैरान होकर पूछा था, 'रामू! यह इत्र तुम्हे कहाँ से मिला ?'

'मैं नहीं बता पाऊँगा, बाबा।'

'यह तो बहुत महॅगी बिकनेवाली खुशबू है। कहाँ से मिली तुम्हे ?'

रमेसर फिर भी चुप ही रहा था और बिसेसर को बोलना ही पडा था, 'यह इत्र तो सिर्फ गोरे लोगो के पास होता है। कही तुमने 'शातो' से चुराया तो नहीं ?'

'नही बाबा।'

'तो तुम्हे मिला कहाँ से ?'

उस दिन तो रमेसर ने उससे आगे अपने पिता को कुछ नहीं बताया था।

लगभग महीने भर बाद खेत मे कटे हुए गन्ने के बोझ को कधे पर उठाकर रेल

के डिब्बे पर लादते समय बिसेसर ने अपने बेटे के गले से कोई चीज गिरते देख लिया था। उस चीज को अपने गले से गिरने का पता रमेसर को नहीं चला था।

गन्ने की सूखी पत्तियो को हटाकर बिसेसर ने वह चमकीली चीज उठाई थी। उसपर नजर पडते ही उसका हाथ कॉप उठा था। अपने बेटे को बिना कुछ बताए उसने उस चीज को अपनी फतूही के छोर मे चुपके से बॉध लिया था। रात मे अपने बेटे के साथ बैठका में होनेवाले साप्ताहिक रामायण के सत्सग मे न जाकर वह घर मै ही रह गया था। उससे भरपेट खाना नही खाया गया था।

जशोदा को पूछना ही पडा था, 'आपकी पसद का साग बनाया है मैने, फिर भी आपने आधा ही परॉठा खाया।'

'बैठो जशोदा। तुम्हे एक बात बतानी है।' और वह वस्तु, जो बिसेसर ने मिट्टी के तेलवाले चिराग की धुॅधली रोशनी मे अपनी पत्नी के सामने रखी तो उससे वह चीज चिराग की रोशनी से भी अधिक चमक उठी। उसकी उस चमक से जशोदा की ऑखे अपने मे हैरानी लिये चमक गई। अपने पति के हाथ से उसे लेकर उसने उसे अपने हाथ पर झूल जाने दिया। हैरत भरी आवाज मे बोली थी, 'सोने का हार। पर -पर यह ?'

'सलीब है। हमारे बेटे के गले से गिरा था।'

'रमेसर के गले मे सोने का हार—ओर वह भी सलीब के साथ। पर मैंने तो इसे उसके गले मे कभी नही देखा।'

'कैसे देख पाती। इधर कुछ दिनो से तो वह कमीज की बटन गले तक लगाए रहता था।'

'क्या अजनी के बेटे की तरह गिरजाघर के पादरी ने हमारे रामू को भी कहीं ''

'नहीं जासो। हमारे बेटे से कोई उसका धर्म नहीं छुडवा सकता।'

'तो फिर उसका अपने गले मे सलीब लटकाए रहने का क्या मतलब हुआ?'

'यही तो समझ मे न आनेवाली बात है।'



पिछले दिनो की बरसात के कारण नदी मे पानी के साथ-साथ लहरो की गति भी बढ आई थी। फिर भी बिसेसर को लगा कि इसके बावजूद नदी की लहरो मे दहाड की जगह कराह थी। आसमान से एक-दो तारे जहॉ-तहॉ से झॉकने लगे थे, पर उनमे बढते आ रहे अॅधेरे को रोकने की ताकत नहीं थी। बिसेसर के मन ने चाहा कि वह नदी के तट पर की उस चट्टान पर जा बैठे, जहॉ से वह नोनोन को झींगे फॅसाते देखता रहता। उसके भोजपुरी और क्रिओली गानो, जो अपने भाई की नकल

करके भी वह उसी खूबी के साथ कभी नही गा सका, को बिसेसर सुनता रहता था, पर आज वह सेगा सुनने की रौ मे नही था। वह चट्टान पर बैठकर सॉवले रग और काली ऑखोवाली उस बच्ची की आवाज सुनना चाह रहा था। उसके मस्तिष्क मे प्रश्न तैयार थे और उसे विश्वास था कि एक-न-एक प्रश्न का उत्तर उसे पानी के भीतर से मिलकर रहेगा। बिसेसर ने मन के चाहने पर बहुत कम अवसरो पर अपने को मन के हवाले होने दिया था, पर अपनी एक आतरिक पीडा को नोनोन के सामने रखने से वह अपने को नही रोक सका था। धीमे स्वर मे बोल ही गया था, 'नोनोन, यह पछतावा अब जीवन भर बना रहेगा कि मेरी कुल परपरा को अब आगे बढानेवाला कोई नही रहा। अपनी जमीन से उखडकर यहाँ आया था। बिना कोई पेड रोपे इस दुनिया से चला जाऊँगा।'

अपने दिमाग मे खौल रहे प्रश्नो के साथ वह तट पर न जाकर घर की ओर बढ गया। रास्ते मे नदी से सवाल करनेवाले सवाल वह अपने से पूछता रहा, 'क्या तुम हमेशा मेरी पोती को अपने मे सॅजोए रखोगी ? नदी! तुम उसे मुझ तक भेजकर फिर तुरत वापस क्यो बुला लेती हो ? कब तक ऐसा करोगी ? क्या अपनी पोती को गोद मे लेने के लिए मुझे तुम्हारे भीतर डुबकी लेनी ही पडेगी ?'

खुद उसे पता नही कि इन प्रश्नो को वह कितनी बार दोहराता रहा। बस्ती के घरो मे रोशनी टिमटिमाने लगी थी। उसका अपना घर अब भी अँधेरे मे था। रोज की तरह मालती की सबसे छोटी लडकी बीना आज भी घर के आगे हनुमानजी के चौतरे पर माटी का दीया जला गई थी। जशोदा की हिदायत थी यह, 'रामू के बाबा! मेरे बाद इस घर के दीये देर से जले तो कोई बात नहीं, पर हनुमानजी का दीया हमेशा वक्त पर जल जाना चाहिए।'

चबूतरे के पास रुककर उसने हनुमानजी को याद किया और घर के भीतर पहुँचा। अँधेरे मे उसने हलके पदचाप सुने। लगा कि कोई कोमल पॉवो के साथ घर के भीतर चल रहा है।

वह पूछ बैठा, 'कौन है ?'

'मैं हूँ, दादा।'

उसने झट चिराग जलाया और घर के दोनो कमरो को छान मारा। न पदचाप, न आवाज। उसे रोशनी मे सन्नाटा तैरता नजर आया। सुबह की सब्जी देगची मे थी। बस, मुट्ठी भर चावल चूल्हे पर चढाने थे। पर उसने भात पकाना जरूरी नही समझा। घर के उजाले मे अपनी ऑखो के सामने के अँधेरे मे उसने अपने को डूब जाने दिया—उस गहराई तक, जहाँ उसे जशोदा और रमेसर दिखने लग जाते।

गन्ने के खेत से बिसेसर अपने घर को न लोटकर नोनोन के घर की ओर बढ गया। ऐसा उसने बहुत कम अवसरो पर किया था। काम पर से घर लौटकर नहाने के बाद ही वह अपने दोस्त के यहाँ जाने का आदी था। पहली बार उसकी यह परिपाटी तब टूटी थी जब गन्ने के खेत मे गिस्ताव रोवियार उसे अपने साथ लिये पहाडी के ऊपर आखिरी खेत मे पहुँचा था।

चौडी चट्टान पर खडे होकर रोवियार ने उसे पहली बार वह धमकी दी थी, 'अपने बेटे को जिदा देखना चाहते हो तो उसे यह समझा दो कि तेल और पानी एक-दूसरे से कभी नहीं मिल पाते।'

साथ आए दोनो सरदार कुछ दूरी पर जामुन के पेड के नीचे रुक गए थे।

आगे भी रोवियार ने ही कहा, 'जमीन-आसमान एक हो सकते हैं, पर गोरे और काले एक नही हो सकते।'

बिसेसर की समझ मे बात नही आई हो, ऐसा नही था। फिर भी उसने पूछा, 'क्या बात है, मालिक ?'

'अपने बेटे को यहाँ से कही दूर किसी दूसरी शक्कर कोठी मे भेज दो। कल शाम तक तुमने ऐसा नहीं किया तो में उसे बस्ती से नहीं, धरती से उठवा दूँगा।'

'मालिक! बच्चो से भूल हो जाती है। मेरे बेटे से भूल हो गई। आपकी बेटी ने भी यह भूल '

वाक्य पूरा होने से पहले एक जोरदार थप्पड बिसेसर के गाल पर रसीद हो गया था।

यह पहला अवसर था बिसेसर का सीधे घर न जाकर नोनोन के घर पहुँचने का। तीसरे दिन बाद बिसेसर को कोठी छोडकर नदी पार की बस्ती मे पनाह लेनी पडी थी। बस्ती छोडने के दूसरे दिन बाद उसका बेटा लापता हो गया था।

रात मे बिसेसर बिलकुल नही सो पाया। सुबह काम पर भी नही गया। घर से निकला और नदी के बीच की चट्टानो से होकर नोनोन के यहाँ पहुँचा। उसे अपने बुढापे का एहसास पहली बार हुआ था, जब बेटे के बाद पत्नी भी छोड गई थी। आज उसने अपने को अस्सी वष का पाया, जबकि वह अस्सी का नही था। वह सत्तर साल का था, जब नई कोठीवाले ने उसे नौकरी से मुक्त करना चाहा था।

पर बिसेसर ने इस दलील के साथ कोठीवाले को अपना इरादा बदल देने के लिए मजबूर कर दिया था, 'साहब! मैं आज भी इन पच्चीस-तीस सालवालो से अधिक गन्ने काट गिराता हूँ। बस, लादने का काम अब मुझसे नहीं होता।'

□

इधर कुछ दिनो से उसकी शक्ति और फुरती—दोनो जवाब देने लग गई थीं,

करके भी वह उसी खूबी के साथ कभी नही गा सका, को बिसेसर सुनता रहता था, पर आज वह सेगा सुनने की रौ मे नही था। वह चट्टान पर बैठकर साँवले रग और काली आँखोवाली उस बच्ची की आवाज सुनना चाह रहा था। उसके मस्तिष्क मे प्रश्न तैयार थे और उसे विश्वास था कि एक-न-एक प्रश्न का उत्तर उसे पानी के भीतर से मिलकर रहेगा। बिसेसर ने मन के चाहने पर बहुत कम अवसरो पर अपने को मन के हवाले होने दिया था, पर अपनी एक आतरिक पीडा को नोनोन के सामने रखने से वह अपने को नही रोक सका था। धीमे स्वर मे बोल ही गया था, 'नोनोन, यह पछतावा अब जीवन भर बना रहेगा कि मेरी कुल परपरा को अब आगे बढानेवाला कोई नही रहा। अपनी जमीन से उखडकर यहाँ आया था। बिना कोई पेड रोपे इस दुनिया से चला जाऊँगा।'

अपने दिमाग मे खौल रहे प्रश्नो के साथ वह तट पर न जाकर घर की ओर बढ गया। रास्ते मे नदी से सवाल करनेवाले सवाल वह अपने से पूछता रहा, 'क्या तुम हमेशा मेरी पोती को अपने मे सँजोए रखोगी ? नदी! तुम उसे मुझ तक भेजकर फिर तुरत वापस क्यो बुला लेती हो ? कब तक ऐसा करोगी ? क्या अपनी पोती को गोद मे लेने के लिए मुझे तुम्हारे भीतर डुबकी लेनी ही पडेगी ?'

खुद उसे पता नही कि इन प्रश्नो को वह कितनी बार दोहराता रहा। बस्ती के घरो मे रोशनी टिमटिमाने लगी थी। उसका अपना घर अब भी अँधेरे मे था। रोज की तरह मालती की सबसे छोटी लडकी बीना आज भी घर के आगे हनुमानजी के चौतरे पर माटी का दीया जला गई थी। जशोदा की हिदायत थी यह, 'रामू के बाबा! मेरे बाद इस घर के दीये देर से जले तो कोई बात नहीं, पर हनुमानजी का दीया हमेशा वक्त पर जल जाना चाहिए।'

चबूतरे क पास रुककर उसने हनुमानजी को याद किया और घर के भीतर पहुँचा। अँधेरे मे उसने हलके पदचाप सुने। लगा कि कोई कोमल पाँवो के साथ घर के भीतर चल रहा है।

वह पूछ बैठा, 'कौन है ?'

'मैं हूँ, दादा।'

उसने झट चिराग जलाया और घर के दोनो कमरो को छान मारा। न पदचाप, न आवाज। उसे रोशनी मे सन्नाटा तैरता नजर आया। सुबह की सब्जी देगची मे थी। बस, मुट्ठी भर चावल चूल्हे पर चढाने थे। पर उसने भात पकाना जरूरी नही समझा। घर के उजाले मे अपनी आँखो के सामने के अँधेरे मे उसने अपने को डूब जाने दिया—उस गहराई तक, जहाँ उसे जशोदा और रमेसर दिखने लग जाते।

गन्ने के खेत से बिसेसर अपने घर को न लोटकर नोनोन के घर की ओर बढ गया। ऐसा उसने बहुत कम अवसरो पर किया था। काम पर से घर लौटकर नहाने के बाद ही वह अपने दोस्त के यहाँ जाने का आदी था। पहली बार उसकी यह परिपाटी तब टूटी थी जब गन्ने के खेत मे गिस्ताव रोवियार उसे अपने साथ लिये पहाडी के ऊपर आखिरी खेत मे पहुँचा था।

चौडी चट्टान पर खडे होकर रोवियार ने उसे पहली बार वह धमकी दी थी, 'अपने बेटे को जिदा देखना चाहते हो तो उसे यह समझा दो कि तेल ओर पानी एक-दूसरे से कभी नही मिल पाते।'

साथ आए दोनो सरदार कुछ दूरी पर जामुन के पेड के नीचे रुक गए थे।

आगे भी रोवियार ने ही कहा, 'जमीन-आसमान एक हो सकते हैं, पर गोरे और काले एक नहीं हो सकते।'

बिसेसर की समझ मे बात नही आई हो, ऐसा नहीं था। फिर भी उसने पूछा, 'क्या बात है, मालिक ?'

'अपने बेटे को यहाँ से कही दूर किसी दूसरी शक्कर कोठी मे भेज दो। कल शाम तक तुमने ऐसा नही किया तो मैं उसे बस्ती से नहीं, धरती से उठवा दूँगा।'

'मालिक! बच्चो से भूल हो जाती है। मेरे बेटे से भूल हो गई। आपकी बेटी ने भी यह भूल '

वाक्य पूरा होने से पहले एक जोरदार थप्पड बिसेसर के गाल पर रसीद हो गया था।

यह पहला अवसर था बिसेसर का सीधे घर न जाकर नोनोन के घर पहुँचने का। तीसरे दिन बाद बिसेसर को कोठी छोडकर नदी पार की बस्ती मे पनाह लेनी पडी थी। बस्ती छोडने के दूसरे दिन बाद उसका बेटा लापता हो गया था।

रात मे बिसेसर बिलकुल नही सो पाया। सुबह काम पर भी नही गया। घर से निकला और नदी के बीच की चट्टानो से होकर नोनोन के यहाँ पहुँचा। उसे अपने बुढापे का एहसास पहली बार हुआ था, जब बेटे के बाद पत्नी भी छोड गई थी। आज उसने अपने को अस्सी वर्ष का पाया, जबकि वह अस्सी का नही था। वह सत्तर साल का था, जब नई कोठीवाले ने उसे नौकरी से मुक्त करना चाहा था।

पर बिसेसर ने इस दलील के साथ कोठीवाले को अपना इरादा बदल देने के लिए मजबूर कर दिया था, 'साहब! मै आज भी इन पच्चीस-तीस सालवालो से अधिक गन्ने काट गिराता हूँ। बस, लादने का काम अब मुझसे नहीं होता।'

□

इधर कुछ दिनो से उसकी शक्ति और फुरती—दोनो जवाब देने लग गई थीं,

पर वह था कि पराजित होने के लिए तैयार नही था। वह नोनोन की कुटिया के सामने पहुँचा तो देखा कि नोनोन अपनी झोपडी के उजडे हुए छाजन की मरम्मत मे लगा हुआ था।

बिसेसर को सुबह-सुबह सामने पाकर उसे आश्चर्य तो हुआ, पर उसने जाहिर नहीं होने दिया। वह तुरत छत पर से नीचे उतरा। अस्सी वर्ष मे उसकी उस स्फूर्ति पर बिसेसर को हैरानी नही हुई। बिसेसर ने जब नदीवाली छोटी बच्ची की बात छेडी तो उसे अच्छी तरह सुन लेने के बाद ही नोनोन ने कहा, "मैं तुम्हारी भावना को समझ रहा हूँ, बिसेसर। मुझे तुम्हारी वह बात अभी भी याद है, जब तुम बोले थे कि तुम्हे इस बात का पछतावा है कि तुम्हारे कुल को आगे बढानेवाला कोई नही है। पर तुम यह क्यो बोलते रहते हो कि रमेसर के बाद इस द्वीप मे तुम्हारी कोई सतान नही। अगर तुम्हारी कोई सतान नही तो यहॉ किसी की भी कोई सतान नही ? यहॉ की तो हर सतान तुम्हारी सतान है। यहॉ के पौधे-पौधे तुम्हारे पसीने और खून की बूँदो से सीचे गए है। इस माटी के सभी बच्चे—काले, गोरे, हिदू, ईसाई, मुसलिम, चीनी—सभी तुम्हारे बच्चे होगे। बेटे को खोकर निस्सतान होने के पछतावे को अपने जेहन से निकाल फेको। इस द्वद्व के कारण तुम्हे अपने बेटे की मृत बेटी समदर से निकलकर तुम तक आती दिखाई पडती है। अपने को इस दिवास्वप्न से मुक्त करो।"

"नहीं नोनोन, यह सपना नहीं है। यही सिद्ध करने के लिए तो मै तुम्हे अपने साथ नदी किनारे ले चलने आया हूँ। अपनी ऑखो से उसे देखकर तुम्हे मेरी बात पर विश्वास हो जाएगा।"



आज फिर रोवियार के 'शातो' से आनेवाला सगीत एकाएक जोरदार हो गया। सामने का वह मरियल कुत्ता, जो रात मे नोनोन की फेकी हुई मछलियो के कॉटो को खाने मे लगा हुआ था, उस शोर से डरकर दुम दबाए भाग गया।

उस कोलाहल से ऊबकर नोनोन ने अपने मित्र से कहा, "चलो बिसू! चलो, तुम्हारे साथ नदी का भ्रमण कर आते है।"

सगीत की वह बुलदी बनी रही और दोनो मित्र धीमे कदमो के साथ नदी की ओर बढ गए। आज हवा भी अकारण तेज थी। चुप्पी साधे दोनो चलते रहे। बिसेसर आगे-आगे चल रहा था। उसे देखते हुए नोनोन को ऐसा प्रतीत हुआ कि अस्सी साल का वह नही था, बल्कि बिसेसर था। उससे पॉच-छह साल छोटा बिसेसर उसे अपने से पॉच-छह साल अधिक बडा लगने लगा था। लग रहा था कि हवा के ठेले जाने से वह आगे की ओर घसीटा जा रहा था।

नदी की तरगो की आवाज कानो मे आते ही बिसेसर ने नोनोन से कहा, ''सुना तुमने ?''

''नदी की आवाज ?''

''नही। 'दादा-दादा' पुकारने की आवाज। ध्यान से सुनो।''

ध्यान से सुनने के बाद नोनोन बोला, ''मुझे तो ऐसी कोई आवाज सुनाइ नहीं पड रही है।''

''वह देखो। सामने से वह आ रही है।''

''बिसू। होश मे आओ। हमारे सामने लबी-सीधी पगडडी है। सुनसान। कोई नही है रास्ते पर। जिसे तुम देख रहे हो वह पगडडी पर नही, तुम्हारे दिमाग मे है। आओ, सामने के इस घने पेड के नीचे चट्टान पर बैठकर दिमाग को स्थिर करे।''

''कहॉ चली गई सामने से आती हुई मेरी पोती ?''

''बिसू। कब तक अपने को इस छलावे मे रखकर अपने मन को भटकते रहने दोगे ?'' यह कहते हुए नोनोन काली चट्टान पर बैठ गया।

उसके सवाल को अनसुना करके बिसेसर सामने के छोटे पत्थरो को पार करता हुआ नदी-तट के उस ठौर पर जा पहुॅचा, जहॉ चट्टानो से टकराती लहरो की बौछार उस तक पहुॅच रही थी। नोनोन अपनी जगह पर बैठा अपने दोस्त को देखता रहा। सोचता रहा कि उसे उसके इस काल्पनिक लोक से बाहर कैसे निकाले। तभी उसे पीछे से आवाज सुनने को मिली, ''दादा। दादा, मैं यहॉ हूॅ।''

नोनोन ने पाया कि उसका बदन सिहर रहा हे। उसने पीछे मुडकर देखा। कोई नही था। तभी एक मासूम हॅसी नदी की दिशा से आती हुई सुनाई पडी। नोनोन ने नदी की ओर देखा। वहॉ भी कोई नही था।

☐

# उस रात भी बारिश थी

दरवाजे के पास खडा सतीश पुलिस के दोनो अफसरो को जाते हुए देखता रहा। सात दिन पहले भी ये ही दोनो उससे बाते करके हेमा की तसवीर अपने साथ लेते गए थे। दोनो मे जो इसपेक्टर था, वह सतीश से तीन बार फोन पर भी बाते कर चुका था। अभी तीन मिनट पहले सतीश के प्रश्न के उत्तर मे उसने उससे कहा था, "सतीश साहब, हम आपकी पत्नी को तलाशने मे कोई कसर नही छोड रहे है।"

अपने उदास चेहरे से उसने कुछ कहा तो नही था, पर ऑखो के भाव से पुलिस पर पूरे विश्वास की प्रतीति थी। सडक से पुलिस की जीप के ओझल हो जाने के बाद सतीश घर मे लौटा। सिगरेट सुलगाकर उसने नौकर को पुकारा और उसे ब्लैक कॉफी ले आने का आदेश देकर सुबह के अखबार पर नजर दौडाने बैठ गया। दफ्तर ही मे उसकी सेक्रेटरी उसे बता चुकी थी कि अखबारो मे कोई विशेष खबर नही थी, पर सतीश ने अखबार को पढने के उद्देश्य से थोडे ही उठाया था। वह तो एक यात्रिकता मे आकर वैसा कर गया था।

कॉफी आ गई। उसने अखबार को छोटी मेज पर अधखुला ही रख दिया। रास्ते पार की मसजिद से अजान की आवाज आई। उसके दोनो कुत्ते किसी राही की शारीरिक गध के पसद न आने पर एक साथ भौक उठे। उसने गरम कॉफी की पहली चुस्की ली। उसके अधिक गरम होने के कारण उसने प्याले को मेज पर रख दिया। चार साल का विक्की अपने टैडीबेयर को पजे के नीचे दबोचे सामने आया और अपने पिता के सामनेवाले सोफे पर जा बैठा। पुलिस के सिपाहियो के आने से कुछ ही मिनट पहले वह नए खिलौने के लिए रट लगाए हुए था। तब सतीश ने झुँझलाकर पूछा था, 'क्या तुम लडकी हो जो गुडिया के लिए जिद कर रहे हो?'

विक्की उस डॉट को भूला नही था। गुडिया की चाह अब भी उसके भीतर थी, पर इस बार उसने मॉगने की हिम्मत नही की। गलियारे के अत मे जो छोटा सा कमरा था, उससे सतीश की मॉ की जोर से कराहने की आवाज आई।

सतीश की माँ अस्सी वष की उम्र पार कर गई थी। उस मोके पर सतीश ने विशेष केक तेयार करवाया था। कुछ घनिष्ठो को दावत दी थी। तब उसकी माँ इतनी अधिक बीमार नही थी। वह अपनी माँ के पास मे जा पहुँचा।

उसपर नजर पडते ही उसकी माँ बोल पडी, "हेमा अभी तक नही लोटी? विक्की बार-बार पूछ रहा था।"

"रमेसर ने तुम्हे दवा दी?"

उसने सिर हिलाकर हामी भर दी।

"तुम कुछ पीना चाहती हो, ममा?"

"मे सही बोलती थी।"

"ममा, तुम आराम करो। डॉक्टर ने तुम्हे अधिक बोलने से मना किया हे।"

"मैने तो पहले ही दिन कह दिया था। बेरहम ही निकली वह। आज नौ दिन हो गए, मुन्ने। वह कैसी माँ है? इतने दिनो तक कोई माँ अपने बच्चे से दूर रह सकती है क्या?"

"मै तुम्हारे लिए थोडा सा दूध मँगवाऊँ?"

"नही मुन्ने! तुम काम कर रहे थे न? जाओ, अपना काम करो। काम मे कभी भी कोताही नहीं होनी चाहिए।" उसने आँखे मूँदकर करवट ले ली ओर दीवार की ओर मुँह करके धीरे-धीरे कराहती रही।

लगभग मिनट भर वहाँ खडा रहकर सतीश लौट आया ठडी पड गई अपनी कॉफी के पास।

□

दूसरे दिन सतीश दफ्तर नहीं गया। रात म उसने ज्यादा पी ली थी। आल्का-सेल्जर की दो गोलियो से भी उसका सिरदर्द कम नही हुआ था। रात मे अधिक पी लेने के कारण उससे खाया भी नही गया था।

रमेसर ने नाश्ते के लिए जोर देते हुए कहा, "आपने रात मे कुछ नहीं खाया है।"

"नाश्ता करने का जी नही कर रहा है।"

"खाली पेट से गेस हो सकती है।"

"देखो, अगर फ्रीज मे दही हो तो ले आओ मेरे लिए।"

दही पीने के बाद वह अपनी माँ के पास पहुँचा। उसे अपनी माँ की तबीयत पिछले दिनो की अपेक्षा कुछ अच्छी प्रतीत हुई। फिर भी उसने पूछा, "ममा! कैसी है तुम्हारी तबीयत?"

# उस रात भी बारिश थी

दरवाजे के पास खडा सतीश पुलिस के दोनो अफसरो को जाते हुए देखता रहा। सात दिन पहले भी ये ही दोनो उससे बाते करके हेमा की तसवीर अपने साथ लेते गए थे। दोनो मे जो इसपेक्टर था, वह सतीश से तीन बार फोन पर भी बाते कर चुका था। अभी तीन मिनट पहले सतीश के प्रश्न के उत्तर मे उसने उससे कहा था, ''सतीश साहब, हम आपकी पत्नी को तलाशने मे कोई कसर नही छोड रहे हैं।''

अपने उदास चेहरे से उसने कुछ कहा तो नही था, पर ऑखो के भाव से पुलिस पर पूरे विश्वास की प्रतीति थी। सडक से पुलिस की जीप के ओझल हो जाने के बाद सतीश घर मे लौटा। सिगरेट सुलगाकर उसने नौकर को पुकारा और उसे ब्लैक कॉफी ले आने का आदेश देकर सुबह के अखबार पर नजर दौडाने बैठ गया। दफ्तर ही मे उसकी सेक्रेटरी उसे बता चुकी थी कि अखबारो मे कोई विशेष खबर नही थी, पर सतीश ने अखबार को पढने के उद्देश्य से थोडे ही उठाया था। वह तो एक यात्रिकता मे आकर वैसा कर गया था।

कॉफी आ गई। उसने अखबार को छोटी मेज पर अधखुला ही रख दिया। रास्ते पार की मसजिद से अजान की आवाज आई। उसके दोनो कुत्ते किसी राही की शारीरिक गध के पसद न आने पर एक साथ भौक उठे। उसने गरम कॉफी की पहली चुस्की ली। उसके अधिक गरम होने के कारण उसने प्याले को मेज पर रख दिया। चार साल का विक्की अपने टैडीबेयर को पजे के नीचे दबोचे सामने आया और अपने पिता के सामनेवाले सोफे पर जा बैठा। पुलिस के सिपाहियो के आने से कुछ ही मिनट पहले वह नए खिलौने के लिए रट लगाए हुए था। तब सतीश ने झुॅझलाकर पूछा था, 'क्या तुम लडकी हो जो गुडिया के लिए जिद कर रहे हो?'

विक्की उस डॉट को भूला नहीं था। गुडिया की चाह अब भी उसके भीतर थी, पर इस बार उसने मॉगने की हिम्मत नही की। गलियारे के अत मे जो छोटा सा कमरा था, उससे सतीश की मॉ की जोर से कराहने की आवाज आई।

सतीश की माँ अस्सी वर्ष की उम्र पार कर गई थी। उस मौके पर सतीश ने विशेष केक तैयार करवाया था। कुछ घनिष्ठो को दावत दी थी। तब उसकी माँ इतनी अधिक बीमार नही थी। वह अपनी माँ के पास मे जा पहुँचा।

उसपर नजर पडते ही उसकी माँ बोल पडी, "हेमा अभी तक नही लौटी? विक्की बार-बार पूछ रहा था।"

"रमेसर ने तुम्हे दवा दी?"

उसने सिर हिलाकर हामी भर दी।

"तुम कुछ पीना चाहती हो, ममा?"

"मैं सही बोलती थी।"

"ममा, तुम आराम करो। डॉक्टर ने तुम्हे अधिक बोलने से मना किया है।"

"मैने तो पहले ही दिन कह दिया था। बेरहम ही निकली वह। आज नौ दिन हो गए, मुन्ने। वह कैसी माँ है? इतने दिनो तक कोई माँ अपने बच्चे से दूर रह सकती है क्या?"

"मै तुम्हारे लिए थोडा सा दूध मँगवाऊँ?"

"नहीं मुन्ने! तुम काम कर रहे थे न? जाओ, अपना काम करो। काम मे कभी भी कोताही नहीं होनी चाहिए।" उसने आँखे मूँदकर करवट ले ली और दीवार की ओर मुँह करके धीरे-धीरे कराहती रही।

लगभग मिनट भर वहाँ खडा रहकर सतीश लौट आया ठडी पड गई अपनी कॉफी के पास।

☐

दूसरे दिन सतीश दफ्तर नहीं गया। रात मे उसने ज्यादा पी ली थी। आल्का-सेल्जर की दो गोलियो से भी उसका सिरदर्द कम नही हुआ था। रात मे अधिक पी लेने के कारण उससे खाया भी नही गया था।

रमेसर ने नाश्ते के लिए जोर देते हुए कहा, "आपने रात मे कुछ नही खाया है।"

"नाश्ता करने का जी नही कर रहा है।"

"खाली पेट से गैस हो सकती है।"

"देखो, अगर फ्रीज मे दही हो तो ले आओ मेरे लिए।"

दही पीने के बाद वह अपनी माँ के पास पहुँचा। उसे अपनी माँ की तबीयत पिछले दिनो की अपेक्षा कुछ अच्छी प्रतीत हुई। फिर भी उसने पूछा, "ममा! कैसी है तुम्हारी तबीयत?"

"तुम अपना खयाल नही रख रहे हो, मुन्ने। क्या बात है, आज तुमने दाढी नही बनाई ?"

"आज काम पर नही जा रहा हूँ।"

"काम के लिए कोताही नही होनी चाहिए। तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न ?"

"बस, आज काम पर जाने को जी नही कर रहा है।"

"ठीक है, ठीक है मुन्ने । थोडा आराम भी करना ही चाहिए।"

विक्की आ गया अपने टैडीबेयर को खीचते हुए।

"दादी। दादी।"

"क्या है, विक्की ?"

"पापा से कहो मेरे लिए गुडिया लाने को।"

सतीश ने उसे डॉटा और कहा, "यह तुम्हारा बूबा भी तो गुडिया ही है।"

विक्की ने अपनी दादी की ओर देखा और अपने हाथ के टैडीबेयर को चारपाई पर फेक दिया। सतीश ने उसे एक हलकी चपत जड दी।

उसकी मॉ ने उसे प्यार से डॉटा, "मुन्ने। ऐसा नही करते। बच्चे को नही मारना चाहिए।"

विक्की ने रोना शुरू किया। अगर दादी सतीश के सामने उसका पक्ष नही लेती तो शायद वह नही रोता।

"चुप रहो विक्की। आओ, दादी के पास आओ। आज तुमने मुझे चुम्मा नही दिया।"

विक्की चुप हो गया। उसने दादी को चुम्मा दिया। दादी ने सतीश से कहा, "मुन्ने। तुम आज ही विक्की के लिए गुडिया ला देना।"

"ला दूँगा, ममा।"

विक्की की ऑखो मे खुशी तेर गई। बोला, "लाल झबलेवाली।"

सतीश के कमरे मे हेमा की जो तसवीर थी, उसमे वह लाल साडी पहने हुई थी। लाल उसका प्यारा रग था। उसकी अलमारी मे तीन साडियॉ लाल रग की थी। शादी के कई महीने बाद एक बार सतीश ने उससे पूछा भी था कि आखिर लाल रग उसे उतना अधिक पसद क्यो है ?

उत्तर न देकर हेमा अपने पति से खुद सवाल कर बैठी थी, 'क्यो, तुम्हे लाल रग पसद नही है ?'

'मेरी पसद का रग नीला हे।'

सतीश ने पुलिस को जो तसवीर दी थी, उसमे भी हेमा लाल रग के झबले मे थी। गायब होने के दिन भी वह जिस साडी मे थी, उसका रग लाल था।

सुपर मार्केट के लिए निकलने से पहले सतीश ने एक बार फिर विक्की को अपने हठ से डिगाने की कोशिश की, "देखो, तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए बदूक ला देता हूँ। हेलीकॉप्टर अधिक अच्छा रहेगा।"

"नही! गुडिया।"

"लडके गुडिया से नही खेलते।"

"क्यो?"

"जिस तरह लडकियॉ बदूक या हेलीकॉप्टर से नही खेलती।"

"मै गुडिया से खेलूँगा।"

सतीश को क्रोध आया था। मन मे आया था कि थप्पड जड दे। कह दे—भाड मे जाए, पर वह तो अपनी मॉ को वचन दे चुका था। वह अपनी ममा की आज्ञा को कैसे ठुकरा सकता था। वेसा तो कभी नही किया। विक्की की उस जिद ने उसके मन मे पहले से अधिक कडवाहट ला दी थी। वह खुद नहीं जानता था कि वह विक्की से नफरत क्यो करता था। अगर वह नफरत न भी थी तो प्यार भी तो नही था। उसे तो बच्चे की बहुत चाह थी। उसने हेमा को गर्भ गिराने से रोक लिया था। तो फिर क्या कारण था कि वह अपने बेटे को प्यार नही कर पाता? अपने से सवाल करके वह अपने से ही कहता, 'विक्की तो बहुत ही प्यारा, बहुत ही सुदर बच्चा है।'

वह ले आया उसके लिए लाल झबलेवाली गुडिया।

उसी शाम को पुलिस इस्पेक्टर ने सतीश को फोन किया। सतीश अपनी पहली ह्विस्की ले चुका था, पर नशे मे नहीं था। पुलिस इस्पेक्टर ने उसे बताया कि उत्तर प्रात के एक समुद्री इलाके के एक होटल मे लाल साडी मे दिखाई पडनेवाली एक औरत के बारे मे सूचना पाकर पुलिस वहॉ पहुॅची थी, किंतु तब तक वह ओरत वहॉ से जा चुकी थी।

सतीश ने यह सुनते ही कहा, "नहीं इस्पेक्टर, वह मेरी पत्नी नही हो सकती।"

"क्यो? इतने यकीन के साथ आप कैसे कह सकते हैं?"

सतीश से तत्काल उत्तर नही बन पडा। कुछ अकबकाया। फिर बोला, "मेरी पत्नी को होटल से चिढ है। मेरे साथ पॉच साल मे वह कभी भी किसी होटल मे वीक एड बिताने के लिए तैयार नहीं हुई।"

"मिस्टर सतीश! क्या आपको अभी भी विश्वास है कि आपकी पत्नी जीवित है?"

"वह आत्महत्या करनेवाली औरतो मे से नही है।"

"आत्महत्या न सही, उसकी हत्या तो "

"नही इस्पेक्टर। वह उन लोगो मे से भी नही है, जिसकी हत्या इतनी आसानी से कोई कर दे।"

"हत्या करनेवाले के पास इतना खयाल रहता ही कहॉ है कि वह यह सोच सके कि कौन हत्या के योग्य है और कौन नही। खैर, सतीश साहब। हमारी तलाश जारी है। अरे हॉ, आज मैंने आपको दफ्तर मे फोन किया था। बताया गया कि आप छुट्टी पर है।"

"हॉ, आज मै घर ही पर था।"

"ठीक है। जो भी डेवलपमेट होगा, हम आपको बताएँगे।"

अकस्मात् पैदा हो गई अपनी व्यग्रता से बचने के लिए सतीश ने एक पेग ह्विस्की बिना सोडा या बर्फ के हलक के नीचे उतार ली। विक्की फर्श पर बैठकर अपनी गुडिया से खेल रहा था। सतीश उसे गौर से देखता रहा। विक्की के बाल घुँघराले थे। बचपन मे सतीश ने बहुत चाहा था कि उसके मोटे सीधे बाल घुँघराले बने। लाख कोशिश करके भी वह अपने बालो को घुँघराला नही बना पाया था।

उसने विक्की की ऑखो मे देखना चाहा और धीरे से पुकारा, "विक्की।"

विक्की ने ऑखे उठाकर अपने पिता की ओर देखा। सतीश उन गोल ऑखो मे तब तक झॉकता रहा जब तक बच्चे ने पलके न झुका ली। सतीश की ऑखो को रग काला था, ठीक अपनी मॉ की ऑखो के रग की तरह। विक्की की ऑखो का रग काले और नीले के बीच का था। सतीश ने ह्विस्की का तीसरा पेग अपने गिलास मे उडेलने के बाद एक बार फिर विक्की का नाम धीरे से लिया। विक्की ने फिर अपनी गुडिया पर से ऑखे हटाकर अपने पिता की ओर देखा। सतीश उसकी नाक को देखता रहा। नुकीली नाक थी उसके बेटे की—उसकी अपनी नाक से एकदम भिन्न।

कुछ देर बाद अपने पिता की ओर देखकर विक्की एकाएक पूछ बैठा, "पापा, ममा कब आएगी ?"

उसकी आवाज बिलकुल हेमा की आवाज जैसी थी। शुरू-शुरू मे हेमा की आवाज भी इतनी ही मीठी थी। तभी बिजली चली गई, किंतु फिर दूसरे ही मिनट बाद आ गई।

इस बीच विक्की अपने पिता तक पहुँचकर उससे लिपट गया था। विक्की अँधेरे से बहुत डरता था। यही एक बात थी उसमे, जो सतीश से एकदम मिलती थी। सतीश को याद हे, जब वह छोटा था तो अँधेरे के भय से अपनी मॉ के साथ सोता था। ग्यारह वर्ष की उम्र तक, जब वह छठी कक्षा मे था, अपनी मॉ के साथ ही सोता था।

उसकी मॉ उससे कहा करती थी, 'मुन्ने, जब तक मैं हूँ, तुम्हे अँधेरे से नहीं डरना चाहिए।'

और एक बार सतीश ने अपनी पत्नी से कहा था, 'जब तक मेरी मॉ जिदा है, मुझे किसी बात का डर नहीं है।'

'तुम छोटे बच्चे की तरह बात क्यो करते हो ?'

'पता नही मैं अपनी मॉ के बिना जी सकूँगा या नहीं।'

'यह क्या लडकियो जैसी बाते करने लगे।'

'मैं अपनी मॉ का बेटा हूँ, हेमा।'

'हर आदमी अपनी मॉ का बेटा होता है।'

'नही।'

'नही क्यो ?'

'हर आदमी अपने मॉ-बाप का बेटा होता है।'

'तुमने आज ज्यादा पी ली है।'

'मैं अपनी मॉ को बहुत प्यार करता हूँ।'

'मुझसे भी ज्यादा ?'

'हॉ तुमसे भी ज्यादा।'

हेमा उठकर दूसरे कमरे मे चली गई थी। उस दिन दोनो साथ नहीं सोए थे।

न जाने किस बात के दौरान हेमा बोल गई थी, 'सतीश। तुम अपनी मॉ को कुछ दिनो के लिए अपने बडे भाई के यहॉ रहने को क्यो नहीं भेज देते ?'

कहकर हेमा कुछ डर सी गई थी।

उसने सतीश की ऑखो से अगारे फूटते देखे थे।

□

सतीश ने अपनी मॉ को पीने के लिए खुद अपने हाथ से दूध दिया। जब उसकी मॉ ने दूध पी लिया तो सतीश ने उसके हाथ से खाली गिलास लेकर मेज पर रख दिया और उनके सिरहाने बैठ गया। गली मे बिजली के एक खभे पर सेट्रल इलेक्ट्रीसिटी बोर्ड के कर्मचारी काम कर रहे थे, जिसके कारण आधा घटे तक घर मे बिजली नही थी। विक्की दूसरे कमरे से दौडकर अपनी दादी के कमरे मे आ गया था। उस अँधेरे मे बिना कुछ कहे वह अपने पिता से लिपट गया था।

जब बिजली लौटी तो सतीश ने अपनी मॉ से कहा से, "ममा, अब मैं अँधेरे से नहीं डरता।"

"अब तुम बच्चे थोडे रहे।"

"मै बच्चा हूँ, ममा! तुम्हारा बच्चा।"

"वह तो तुम हो ही। मेरा मतलब कुछ और था।"

विक्की की गोद मे लाल झबलेवाली गुडिया को देखते हुए सतीश ने अपनी मॉ से पूछा, "ममा! क्या मै भी इस उम्र मे गुडिया से खेलता था?"

"तुम गुडिया से नहीं खेलते थे।"

इस उत्तर से सतीश को खुशी नही हुई। उसने विक्की से कहा, "विक्की! तुम चलो, रमेसर रसोई मे खाना लिये तुम्हारा इतजार कर रहा है।"

विक्की खडा रहा। सतीश ने इस बार उसे डॉटकर रसोई मे जाने के लिए कहा। बाहर बारिश हो रही थी। रह-रहकर बादल गरज रहे थे, जिससे विक्की डर रहा था। अपने पिता की ऑखो के भाव को देखकर झिझकते पगो से वह कमरे से बाहर निकल गया। खिडकियो के शीशो से बिजली का चमकना दिखाई पड जाता था।

सतीश की मॉ ने पूछा, "तूफान आने वाला है क्या?"

"हवा कुछ तेज है। अपने आप शात हो जाएगी।"

"जाओ मुन्ने, तुम भी खा लो।"

"हेमा बडी निष्ठुर है। अभी तक नही लौटी।"

"कोई बात नहीं। लौट आएगी।"

सतीश कुछ नही बोला।

सतीश अपने कमरे मे लौट आया। बाहर मौसम अधिक खराब होता गया। जेब से सिगरेट की डिब्बी निकालकर उसमे रखी आखिरी सिगरेट को अपने होठो के बीच रख लिया। लाइटर से उसे जलाया और एक लबे कश के बाद सोफे पर बैठ गया। खिडकी का एक पल्ला खुला होने के कारण पानी की बौछार भीतर आ रही थी। वह अपनी जगह से उठा और खिडकी को बद कर दिया। हवा की तेज आवाज धीमी हो गई। वह फिर बैठ गया। कमरे की तीन बत्तियो मे से उसने केवल एक स्विच को ऑन किया था। वह शून्य को ताकता रहा। उस धुँधलके मे हेमा की तसवीर उसके सामने बनती प्रतीत हुई। उसने ऑखे बद कर लीं।

आकृति मिट गई। उसने ऑखे खोलकर चारो ओर देखा। कमरे मे उसे अपनी उपस्थिति के अलावा किसी और के मौजूद होने का आभास सा हुआ। फिर उसे खयाल आया कि वह उसका वहम था। कुछ क्षण बाद उसे कमरा एकदम खाली प्रतीत हुआ। उसे लगा कि वह खुद भी उस कमरे मे नही था।

बाहर हवा की रफ्तार बढती ही गई, बिजलियॉ चमकती ही गई, बादल गरजते ही गए, बारिश मूसलाधार मे बदलती गई। उसे हेमा की याद जकडती सी

गई। उसके बदन मे एक सिहरन पैदा हुई। क्षण भर के लिए उसे लगा था कि हेमा का हाथ उसके कधे पर आ टिका था। सतीश को अपने अकेलेपन से डर लगने लगा। मन मे आया कि वह अपनी माँ के कमरे मे चला जाए, पर सोचा कि माँ को नीद आ गई होगी। नौ दिन मे पहली बार वह इस कमरे मे आया था। पिछली राते उसने विक्की के साथ बगल के दूसरे कमरे मे बिताई थीं। सोचा था, नौ दिन लबा समय होता है अपने भीतर से किसी भय को निकाल फेकने मे।

इसी कमरे मे उस रविवार की रात को जब वह डर से काँपने लगा था तो शम्मी ने उसका हौसला बढाते हुए कहा था, 'देखो, मैं औरत होकर नहीं काँप रही।'

और फिर शम्मी की मदद से वह उस बोझ को अपनी कार तक ले आने मे कामयाब हो ही गया था। बरसात के सन्नाटे और अमावस की रात के अँधेरे ने भी दोनो की मदद की थी उस कामयाबी मे।

वह झट कमरे से बाहर निकल पडा। सामने हेमा का कमरा था। वह उसमे चला गया। विक्की हेमा की शृगार मेज के सामने की छोटी सी कुरसी पर बैठा हुआ हेमा के सौदर्य प्रसाधनो से अपनी गुडिया को रँगने मे लगा हुआ था। अपने पिता को देखकर वह सहम गया। सतीश ने देखा कि विक्की अपनी गुडिया के बालो पर पाउडर लगाकर उन्हे काले से सफेद मे परिवर्तित कर चुका था। उसने गुडिया को उसके हाथ से ले लिया। गुडिया के दाएँ गाल पर विक्की ने काजल से एक मासा बना दिया था, ठीक वैसा ही जैसा उसकी दादी के दाएँ गाल पर था।

सतीश को गुडिया एकदम अपनी माँ की तरह लगने लगी थी। विक्की के कधो को पकडकर झकझोरते हुए उसने पूछा, "यह क्या किया तुमने?"

विक्की सहमा हुआ खामोश रहा।

बाहर मौसम चिघाडता रहा, दहाडता रहा।



सुबह जागने पर सतीश ने चारपाई पर अपनी बगल मे विक्की को नहीं पाया। वह उठा। खिडकी के हटे हुए परदे से उसने देखा—बाहर अभी भी धुँधलका था। वह समय से पहले उठ गया था। घडी देखी। पाँच बजकर दस मिनट हुए थे। बारिश थमी हुई थी, पर हवा अब भी तेज थी। विक्की का कबल नीचे गिरा हुआ था। उसने उसे उठाकर पलग पर रख दिया। विक्की को कमरे मे न पाकर वह चितित हो उठा। दरवाजा खोला। रमेसर अभी नहीं जागा था। रसोई की रोशनी बुझी हुई थी। सतीश को खयाल आया कि रात मे जब विक्की सो नही रहा था तो मैंने उसे काफी डाँट लगाई थी। यहाँ तक बोल गया था, 'हरामजादे! तुम मेरे बेटे नही हो।'

वह लपककर अपनी माँ के कमरे की ओर बढा। गलियारे से ही उसने देख लिया, दरवाजा खुला हुआ था। वह भीतर पहुँचा। उसकी माँ सो रही थी। उसकी चारपाई के नीचे विक्की की गुडिया पडी हुई थी। उसे देखकर सतीश दहल गया। गुडिया का सिर अलग और धड अलग था।

सतीश ने अपनी माँ को जगाने के लिए पुकारा, ''ममा। ममा।।''

तभी फोन की घटी बज उठी। सतीश झपट पडा उस दूसरे कमरे मे, जहाँ फोन था। उसने चोगा उठाकर कहा, ''हैलो।''

''सतीश, तुम हो। मै शम्मी बोल रही हूँ।''

''इस समय। कोई और फोन उठा लेता तो ?''

''जिससे डरना था, वह तो अपनी छाती पर पचास किलो का बोझ लिये कुएँ मे है।''

''शम्मी तुम नशे मे हो क्या क्या बाते करने लगी ?''

''तुमने डरने की बात की, इसलिए कह रही हूँ। अब किससे डरना ?''

''इस समय क्यो फोन कर रही हो ?''

''इससे पहले भी तुम्हे तीन बार फोन कर चुकी हूँ। रात बारह बजे तुम्हे पहला फोन किया था।''

''क्यो, क्या बात है ?''

''रात टेलीविजन पर एक फ्रासीसी फिल्म देखने के बाद से मै विचलित हो उठी हूँ। बिलकुल सो नही पा रही हूँ।''

''किसलिए ?''

''उस फिल्म मे एक बच्चे के कारण हम जैसे दो व्यक्ति पुलिस के चगुल मे फँस जाते है।''

''हमे उससे क्या लेना-देना ?''

''जब हम दोनो तुम्हारी पत्नी के कमरे मे थे तो चीत्कार सुनकर तुम्हारा बेटा जाग उठा था।''

''मैंने उसे फिर से सुला भी तो दिया था।''

''पर उसने देखा था।''

''हाँ हाँ लेकिन मैने उससे कह दिया है कि उसने सपना देखा था।''

''पर सतीश। मुझे डर लगने लगा है, कही यह विक्की ''

''सुनो शम्मी। विक्की न जाने कहाँ हैलो शम्मी शम्मी ''

फोन कट चुका था।

सतीश लौट आया अपनी माँ के कमरे मे। पुकारा, ''ममा! ममा!!''

बाहर हवा साँय-साँय करती रही।

''ममा! ममा!!''

फोन बज उठा।

इस बार फोन शम्मी का नही था।



वह लपककर अपनी माँ के कमरे की ओर बढा। गलियारे से ही उसने देख लिया, दरवाजा खुला हुआ था। वह भीतर पहुँचा। उसकी माँ सो रही थी। उसकी चारपाई के नीचे विक्की की गुडिया पडी हुई थी। उसे देखकर सतीश दहल गया। गुडिया का सिर अलग और धड अलग था।

सतीश ने अपनी माँ को जगाने के लिए पुकारा, ''ममा। ममा।।''

तभी फोन की घटी बज उठी। सतीश झपट पडा उस दूसरे कमरे मे, जहाँ फोन था। उसने चोगा उठाकर कहा, ''हैलो।''

''सतीश, तुम हो। मैं शम्मी बोल रही हूँ।''

''इस समय। कोई और फोन उठा लेता तो ?''

''जिससे डरना था, वह तो अपनी छाती पर पचास किलो का बोझ लिये कुएँ मे है।''

''शम्मी तुम नशे मे हो क्या क्या बाते करने लगी ?''

''तुमने डरने की बात की, इसलिए कह रही हूँ। अब किससे डरना ?''

''इस समय क्यो फोन कर रही हो ?''

''इससे पहले भी तुम्हे तीन बार फोन कर चुकी हूँ। रात बारह बजे तुम्हे पहला फोन किया था।''

''क्यो, क्या बात है ?''

''रात टेलीविजन पर एक फ्रासीसी फिल्म देखने के बाद से मैं विचलित हो उठी हूँ। बिलकुल सो नही पा रही हूँ।''

''किसलिए ?''

''उस फिल्म मे एक बच्चे के कारण हम जैसे दो व्यक्ति पुलिस के चगुल मे फँस जाते है।''

''हमे उससे क्या लेना-देना ?''

''जब हम दोनो तुम्हारी पत्नी के कमरे मे थे तो चीत्कार सुनकर तुम्हारा बेटा जाग उठा था।''

''मैने उसे फिर से सुला भी तो दिया था।''

''पर उसने देखा था।''

''हाँ हाँ लेकिन मैने उससे कह दिया है कि उसने सपना देखा था।''

''पर सतीश। मुझे डर लगने लगा है, कही यह विक्की ''

''सुनो शम्मी। विक्की न जाने कहाँ हैलो शम्मी शम्मी ''

फोन कट चुका था।

सतीश लौट आया अपनी माँ के कमरे मे। पुकारा, ''ममा। ममा।।''

बाहर हवा साँय-साँय करती रही।

''ममा। ममा।।''

फोन बज उठा।

इस बार फोन शम्मी का नही था।



# वह तीसरी तसवीर

उसकी वे तसवीरे कभी उसके घर की दीवारो पर फ्रेमो मे लटकी रहती थी। वह घर, जिसे वह लगभग बारह वर्ष पहले छोड आई थी। आज वे तसवीरे इस एलबम मे बद थी। उन बेशुमार तसवीरो मे वह उन तीन तसवीरो को अधिक देर तक देखती रहती थी जो उसे अपने जीवन की मधुर स्मृतियाँ सुनाती सी प्रतीत होती थी। वैसे तो सभी तसवीरे उन बीते दिनो की कहानियाँ उसे सुनाती थी, पर ये तीन तसवीरे उन सभी से भिन्न उस अतीत को एक अलग बानगी से सामने जीवत कर जाती थी। वह अपने गॉव मे कपडो की नई फैक्टरी मे काम करती थी। वह अपने घर से निकलकर कारखाने की ओर बढ रही थी, तभी पीछे से साइकिल की घटी बज उठी थी और डाकिया एकदम उसके सामने साइकिल को रोककर उससे जगदीश मैकेनिक के घर का पता पूछ बैठा था। वह डाकिया नया-नया था और तब गॉव मे उसकी नौकरी शुरू हुए तीन या चार दिन ही हुए होगे। शोभा उसे जगदीश मैकेनिक का घर बताकर आगे बढ गई थी। वह जानती थी कि वह नया डाकिया जगदीश मैकेनिक के घर के सामने अपने हाथो मे चिट्ठियाँ थामे उसे उस समय तक देखता रह गया था, जब तक वह कारखाने के फाटक को पार नहीं कर गई थी।

उस दिन शोभा उसी गुलाबी लिबास मे थी जो सामने की पहली तसवीर मे वह पहने हुई थी। जीवन ने दो बार और शोभा से दो ऐसे व्यक्तियो के पते पूछे थे, जिनके घर उसे मालूम थे। और जब कुछ दिनो बाद शोभा से बात करने के लिए उसे किसी का पता पूछने की जरूरत नही रह गई थी, तो दूसरा सवाल शुरू हो गया था, 'शोभा! तुम कब मेरे इस प्रश्न का उत्तर दोगी ?'

ओर जब एक दिन उसका सही उत्तर बहुत कम शब्दो मे ही सही, उसे मिल गया था तो जीवन ने तपाक से कहा था, 'देखो, परसो मैं छुट्टी पर हूँ। तुम्हारे इलाके का पाप्लेमूस बाग मैंने आज तक नहीं देखा।'

शोभा के अपने सामने की वह पहली तसवीर पाप्लेमूस के बाग के तालिपो पेड के नीचे उसे पहले दिनवाले गुलाबी लिबास मे ली गई थी। अपने किसी दोस्त

के पुराने कैमरे से जीवन ने वह तसवीर ली थी और जब शोभा को दिखाई थी तो कहा था, 'लगता है, फिल्मो की हीरोइन हो।'

दूसरी तसवीर दोनो की शादी के यही कोई सप्ताह भर बाद की थी, जिसमे समुद्र किनारे दोनो एक साथ थे। जीवन ने वही पुराना कैमरा सामने से गुजरते हुए एक फ्रासीसी सैलानी को रोकर थमाते हुए कहा था कि वह दोनो की तसवीर खीच दे। वह सैलानी कोई अच्छा फोटोग्राफर रहा होगा, तभी तो वह फोटो उतना शानदार और खूबसूरत आया था।

उस तीसरी तसवीर के बारे मे शोभा ने सोचना नहीं चाहा। अलबम को बद कर और अपनी जगह से उठकर उसने सामने के दूसरे कमरे मे झॉका। उस धूमिल रोशनी मे अपनी बेटी को चारपाइ पर सोए देखकर वह फिर आगे बढी। उसके पॉवो से हट गई चादर को ठीक करके उसने बत्ती बुझाई और आभा की बगल मे खुद जा लेटी। उसके सामने पॉच दिनो मे अब सिर्फ तीन दिन बाकी रह गए थे निर्णय लेने मे। बारह साल पहले आभा का जन्म हुआ था और इधर पॉच साल होने को थे, जब से वह अपने मॉ-बाप के घर रहकर पुन फैक्टरी से जुड गई थी। जब आभा तीन साल की थी तो जीवन बोला था, 'मुझे तो गॉव के स्कूल के बाद कॉलेज की पढाई का अवसर नहीं मिला था, पर आभा को हम लोग जी भरकर पढाएँगे।'

'मुझे भी तो, पर हमारा बेटा पढेगा।'

तभी जीवन बोल गया था, 'बेटा नहीं, बेटी। हमारी सतान लडकी होगी। मुझे आजकल के लडके पसद नही हैं।'

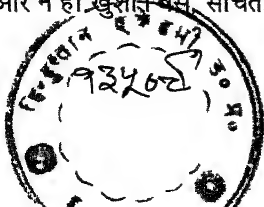
'तुम मुझे अपनी ही तरह सुदर लडकी दोगी।'

'और वह कहीं मेरी ही तरह अनपढ रह गई तो ?'

'ऐसा कैसे हो सकता है ? वैसे भी तुम अनपढ थोडे ही हो। मैं भी तो तुम्हारी ही तरह कम पढा-लिखा हूँ।'

और जब आभा प्राइमरी स्कूल छोडकर कॉलेज की पढाई के अपने पहले महीने पर थी, तभी जीवन ने अपनी पत्नी से कहा था, 'तुम्हे कुछ अधिक पढी-लिखी होना चाहिए था।' कहकर वह चुप हो गया था। पर उसकी उस खामोशी मे शोभा इस वाक्य के आगे के शब्दो की प्रतिध्वनियो को अपने कानो मे गॅूजती हुई महसूस करती रह गई थी। पहले भी कई बार वह उस वाक्य को सुन चुकी थी।

और जिस दिन सचमुच ही टेलीविजन पर शोभा ने अपने पति का नाम सुना, तब न तो उसे दु ख ही हुआ और न ही खुशी। बस, सोचती रह गई थी—कोई बनते हैं, कोई बना दिए जाते हैं।


१२५०८

शोभा अपने भीतर के भारी परिवर्तन से अवगत थी। कारखाने की उसकी सभी सहेलियाँ उसे गाँव की सबसे शर्मीली और सीधी लडकी कहा करती थी। शुरू मे जीवन उसकी सादगी और शर्मीले स्वभाव पर उससे कहा करता था कि उन्हीं दो बातो के कारण वह उसपर जान देता था, लेकिन समय के साथ वही जीवन उसके उन्ही गुणो को उसके अवगुण बताने लग गया था। पहले तो वह उन बातो से दु खी हुई थी, पर फिर जब उसे एक-एक करके सभी बाते समझ मे आने लगी थी तो वह अपनी जिदगी के आनेवाले दिनो के बारे मे सोचने लगी थी। उसकी आभा उन बातो के लिए छोटी थी।

फिर भी एक दिन उसके बालो को सँवारती हुई वह उससे पूछ ही बैठी थी, 'पापा और माँ मे से एक को चुनना पडे तो तुम किसे चुनोगी ?'

लेकिन जब आभा उस प्रश्न के बदले प्रश्न कर बैठी थी तो शोभा को लगा था कि उसकी बेटी उतनी छोटी और नादान नही थी जितनी वह सोचती आ रही थी।

आभा ने पूछा था, 'क्या पापा हमेशा इसी तरह तुम्हारे साथ पेश आते थे ?'

उसकी माँ ने जब उत्तर नही दिया था तो आभा बोल गई थी, 'अगर मेरे साथ पापा इस तरह की बाते करेगे तो मै यह घर छोडकर नानी के यहाँ चली जाऊँगी।'

शोभा कुछ बोली नही थी, पर मन-ही-मन सोचती रह गई थी—तुम्हारे लिए तो नानी का घर है, आभा।

इधर कई वर्षो से शोभा उन बीते हुए दिनो के बारे मे सोचना बद कर चुकी थी, लेकिन इधर दो-तीन दिनो से वह उन यादो से अपने को मुक्त नही कर पा रही थी।

कल रात की तरह आज की रात भी उसके लिए बोझिल थी, अकुलाहट दे रही थी, पर शोभा के लिए उस अकुलाहट से भी भारी अस्थिरता उसके अपने जेहन मे थी। बिना तारोवाले आसमान के कारण बाहर का घना अँधेरा भयभीत होकर जैसे कमरे के भीतर आ गया था। शोभा को लग रहा था कि वह घटाटोप अँधेरा उसके साथ लिपटा हुआ था।

आभा ने करवट बदली। बाहर के सन्नाटे के साथ-साथ शोभा को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके अपने भीतर भी वैसा ही सन्नाटा था। बाहर पत्ते नही हिल रहे थे और उसे लग रहा था कि उसके भीतर भी कोई स्पदन नही था। अतीत के बारे मे सोचना न चाहकर भी वह उसे अपने से झकझोर नही पा रही थी। इन तीन दिनो के भीतर उसे निर्णय लेकर रहना है। पाँच साल पहले भी वह अपनी जिदगी का एक महत्त्वपूर्ण और गभीर निर्णय लेने के लिए विवश हुई थी। इस बार वह उसी की

बेबसी से गुजरकर निर्णय लेना नही चाह रही थी। यही कारण था कि इधर दो दिनो से वह अपने ओर जीवन के सबध के कुछ क्षणो को अच्छी तरह सोच लेना चाहती थी। तब उसकी शादी का दूसरा वर्ष चल रहा था। उसका पहला बच्चा जन्म के अठारहवे दिन नाभि मे टिटनेस के कारण चल बसा था। गॉव की बूढी औरते यह कहती रही थीं कि दाई बच्चे की नाल काटने मे उन्नीस-बीस कर गई थी, पर शोभा के पिता ने उससे कहा था कि वह होनी थी। होनी को कोई नही रोक सकता। उस बच्चे की मृत्यु के तीन वष बाद आभा का जन्म हुआ था। शोभा के पिता ने उसके ललाट को देखकर कहा था कि वह उस घर मे नई रोशनी लाएगी। उसी ने उसका नाम 'आभा' रखते हुए कहा था कि आभा जैसे-जैसे बडी होगी वेसे-वेसे घर म सपत्ति और शोहरत अधिक आने लगेगी।

उन्ही दिनो जीवन मजदूर दल की एक्जीक्यूटीव कमेटी का सदस्य और फिर अपने चुनाव-क्षेत्र का प्रमुख एजेट बना था। एक रात बहुत दिनो बाद बिना नशे के वह घर लौटा था। उन दिनो आभा की उम्र चार साल रही होगी। उसने पहले उसके दोनो गालो को चूमा था, फिर अपनी बॉहो मे कसकर घूम गया था।

'शोभा, तुम्हारे पिताजी ने ठीक कहा था कि आभा इस घर की रोशनी है। कल से मे डाकिए की नौकरी को लात मार रहा हूँ। मुझे उत्तर प्रात के बीछ-कोबर ग्रुप के एक रेस्तरॉ का कॉण्ट्रेक्ट मिल गया है। अब तुम देखोगी कि इस घर मे पैसे किस रफ्तार से दौडकर आएँगे। काम शुरू करने के लिए कॉपरेटिव बैंक से मुझे दो लाख रुपए का ऋण मिल रहा हे।'

कुछ ही महीने बाद शोभा ने अपनी मॉ से कहा था, 'सचमुच, अब हमारे घर मे दौलत आने लगी है।'

उसकी बातो को सुनते रहने के बाद मॉ ने बस इतना ही कहा था, 'देखना बेटी। शोहरत ओर दौलत जब बहुत तेजी से आती है तो उसके झोके घर की कुछ कीमती चीजे उडा ले जाते हैं।'

शोभा अपनी मॉ की इस तरह की बातो से कभी भी चकित नहीं हुई। पढी-लिखी न होकर भी वह आमतौर पर ऐसी बाते कर जाती थी कि पढे-लिखे लोग भी उन बातो पर गौर करते रह जाते थे। चकित कर जानेवाली बातो पर भी शोभा कभी चकित नही होती थी, क्योकि उसकी मॉ ही तो यह कहती रहती थी कि जब से उसने टेलीविजन पर आदमी को चॉद पर पहुँचते देख लिया हे, तब से किसी असाधारण बात पर भी उसे आश्चर्य नहीं होता।

लेकिन उस दिन शोभा अपने पति को चकित नजरो से देखती रह गई थी, जब

उसने उससे कहा था कि मजदूर दल की ओर से वह विधानसभा के चुनाव मे उम्मीदवार के रूप मे खडा हो रहा है। जीवन जब अच्छी रौ मे होता था तो मजाक करने से नही चूकता था। इसलिए उसकी उक्त बात को मजाक मानकर शोभा अपनी हैरानी को मुसकान के द्वारा मिटा गई थी।

लेकिन जब दूसरे दिन जीवन ने उसे द्वीप के कोई सात-आठ अखबारो मे छपी अपनी तसवीरे दिखाई तो शोभा को अपनी जिदगी का सबसे बडा आश्चर्य हुआ था।

जीवन बोला था, 'तीन महीने बाद तुम राजनेता की पत्नी होओगी।'

कुछ देर चुप रहने के बाद शोभा ने सवाल किया था, 'क्या लोग तुम्हे वोट देगे?'

'तुम जानती हो, मै कहाँ से चुनाव लड रहा हूँ?'

'त्रिओले से।'

'तो फिर यह भी तो जानती होओगी कि वह चुनाव-क्षेत्र प्रधानमत्री का चुनाव-क्षेत्र है।'

'मुझे आश्चर्य हो रहा है।'

'मेरे ससुर ही तो यह कहते है कि होनी को कोई नहीं रोक सकता। अपनी-अपनी किस्मत है।'

'मैं तो अभी भी कुछ नही समझ पा रही हूँ। विश्वास नहीं हो रहा '

'सुनो, तुम्हे असलियत बताए देता हूँ, ताकि तुम अपने इस घर के उज्ज्वल भविष्य पर विश्वास करो। हमारी आभा सचमुच इस घर की रोशनी बनकर आई है। मुझे इसलिए प्रधानमत्री के चुनाव-क्षेत्र से चुनाव लडने के लिए चुना गया है, क्योकि राजनीति मे पैसे और दिमाग से कही अधिक जरूरत जाति की होती है। इस देश के सभी चुनाव जातिगत समीकरण के आधार पर ही तो जीते जाते हैं। जिस क्षेत्र मे चुनाव के लिए प्रधानमत्री खडे हो रहे है, उसमे मेरी जाति के लोगो की सख्या बहुत बडी है। मजदूर दल को और प्रधानमत्री को भी यह विश्वास है कि मैं उनके साथ रहा तो मेरी जाति के सभी वोट उन्हीं को मिलकर रहेगे।'

शादी से पहले भी एक बार जाति का यह मुद्दा जीवन ने उसके सामने उठाया था, पर तब एकदम दूसरे भाव मे। इस बार तो उसके स्वर और लहजे मे एक गर्व का बोध था, जबकि उस बार एक बेचारगी और बेबसी का सा एहसास था उसे। उसने शोभा के पिता के सामने दोनो हाथ जोड लिये थे। और शोभा के पिता ने उसे उस रूप मे देखकर कहा था, 'भगवान् के बनाए सभी पक्षी कोयल नही होते, सभी फूल गुलाब नही होते और न ही सभी जानवर शेर होते हैं। फिर भी अपनी बेटी के

प्यार और उसकी खुशी की खातिर मैं भगवान् के बनाए इस अतर को भूल जाने के लिए तैयार हूँ। बस, अब मेरी बारी है दोनो हाथ जोडकर तुमसे कुछ माँगने की। मेरी एक ही बेटी है। तुम इसे अपने घर मे फूल की तरह रखना।'

बाहर हलकी बारिश शुरू हो गई थी। शोभा को अँधेरे मे भी बोछारो की उस आवाज से पता चल गया कि खुली हुई खिडकी से भीतर झझावात पहुँच रहा था। वह चारपाइ पर से उठी और अँधेरे मे चलकर खिडकी को बद कर दिया। चारपाई के पास वापस आकर उसने अपनी आँखो से बह आई आँसुओ की बूँदो को हथेली से पोछ लिया। इधर कुछ दिनो से वह द्विविधा मे पडी हुई थी और निणय लेने म अपने को असमर्थ पा रही थी। वह चारपाई पर लेट गइ और सोचने लगी।

चुनाव मे जीवन के दल की जीत हुई। जब सरकार बनने को हुइ थी तो जीवन शोभा को साथ लेकर अपनी ससुराल पहुँचा था और शोभा के पिता से बोला था, 'अब शोभा को फूल की तरह रख पाऊँगा। बस, मत्री बन जाने की देर है। थोडी अडचन आ रही है। मेरा प्रतिद्वद्वी मेरी ही जाति का एक आदमी बन बैठा है। कल हमारी पार्टी की बैठक हुई थी। मेरी जाति को हर हाल मे दो मत्री पद मिलने हैं। मेरी जाति के तीन लोग है पार्टी मे। एक को तो युवा मत्रालय मिल गया। अब को-ऑपरेटिव मत्रालय के लिए हम दो व्यक्ति बचे हैं। पार्टी मे लॉबिग जोरो से चल रही है। आपकी मदद मिल गई तो मैं मत्री बनकर रहूँगा।'

शोभा के पिता ने पूछा था, 'मेरी मदद?'

'हाँ।'

'इस राजनीतिक झमेले मे मेरी मदद क्या मायने रख सकती है?'

'हम दोनो प्रतिस्पर्धियो मे एक बात के कारण मेरा चास बेहतर है। अपनी पत्नी के कारण मै अपने को शोभा की जाति का बताकर वैश्यो का सहारा भी पा सकता हूँ। मेरे प्रतिद्वद्वी की पैरवी केवल हमारी जाति की सभा कर रही है। आप अगर वैश्य सभा की ओर से मेरी पैरवी करा दे तो जीत मेरी होगी।'

शोभा ने अलग से अपने पिता से बाते की थी। अत मे उसके पिता ने बात मान ली थी और जीवन को मत्री-पद प्राप्त हो गया था।

फूल की तरह शोभा के जीने का समय आ गया था। दिन बीतते गए। फिर सप्ताह, महीना और वष के बाद दूसरा और तीसरा वर्ष भी बीतने को था जब पहली बार उसे शालिनी से मिलाया गया था।

जीवन ने उसका परिचय देते हुए अपनी पत्नी से कहा था, 'शालिनी मेरे चुनाव-क्षेत्र की महिला मडल की अध्यक्षा हैं। सामाजिक कार्यो मे दिन-रात सक्रिय रहती हैं।'

इस बात का पता तो शोभा को तीन-चार महीने बाद ही चला था कि शालिनी तलाकशुदा औरत थी। यह बात शोभा को उसकी सहेली कामिनी ने बताई थी। जीवन ने तो उसे यह बताया था कि शालिनी अग्रेजो को मात कर देने लायक अग्रेजी और फ्रासीसियो को मात कर देने लायक फ्रेंच बोलती है। उसके सारे भाषण वही लिखती है और उसकी प्रेस आटाची की हैसियत से प्रेस और पूरी मीडिया को वही सॅभाल लेती है। लेकिन जब जीवन ने यह कहा था कि 'शी इज वडरफुल', तो अग्रेजी के इन तीन शब्दो के अर्थ को भलीभॉति समझकर भी शोभा उसका सही मतलब नही समझ पाई थी। फिर तो ऐसा वक्त आने मे अधिक देर नही हुई जब शोभा ने सुना, ' तुम अनपढ हो जाहिल हो तुम। तुम्हे अपने साथ मित्रो के बीच ले जाने की हिम्मत अब मुझे नही होती। ''

तुम गॅवार-की-गॅवार रह गई । उस दिन शोभा ने अपने आपसे कहा था, 'हॉ जीवन, मै गॅवार ही रह गई और तुम कहॉ-से-कहॉ पहुॅच गए।'

पॉच दिनो की वह मोहलत समाप्त होने को थी।

जीवन ने पॉच दिनो का यह समय शोभा को नहीं दिया था। उसने खुद अपने को वह पॉच दिन की मोहलत दी थी। देश के बहुत सारे लोगो का यह खयाल जरूर रहा होगा कि राजनीति मे घरौंदे छोटी-से-छोटी लहर के थपेडे से धराशायी हो सकते है, प्रर शोभा ने तो सपने मे भी ऐसा नहीं सोचा था। वह इतनी पढी-लिखी तो जरूर थी कि फ्रेंच अखबारो मे आई खबरो के बीच से कुछ बाते समझ सके। पहली बार जब अपनी सहेली कामिनी से उसने यह सुना था कि को-ऑपरेटिव मिनिस्ट्री मे एक महिला की तरक्की को लेकर वहॉ के अन्य अफसरो के बीच भारी नाराजगी फैली हुई है, तब यह जानने के लिए शोभा को किसी से पूछताछ की कोई आवश्यकता हुई ही नही कि तरक्की पानेवाली वह औरत कौन हो सकती है।

कुछ ही दिन पहले आभा को स्कूल से घर लौटने मे देर हो गई थी और चितित होकर शोभा ने मत्रालय मे अपने पति के पास फोन किया था। उसे बताया गया था कि वह नए बैक का उद्घाटन भाषण लिखने मे व्यस्त थे। शोभा आधे घटे के भीतर चार बार फोन करके भी मत्री से बात नही कर पाई थी। रास्ते मे गाडी के खराब हो जाने के कारण जब आभा घर लौटी तब जीवन का फोन आया था—यह जानने के लिए कि आभा घर लौटी या नही। पहली बार शोभा को यह दु खद एहसास हुआ था कि उसका पति अपनी बेटी के पिता से कही अधिक मत्री था।

□

देश के राष्ट्रपति की ओर से मदागास्कर के राष्ट्रपति के स्वागत मे दी गई पार्टी

वह। सभी मत्री स्वागत-द्वार पर बारी-बारी से राष्ट्रपति ओर उनकी पत्नी का भवादन करके आगे बढ रहे थे। सहकारिता मत्री जीवन अपनी पत्नी शोभा के ा शिक्षा मत्री के ठीक बाद आगे बढे थे। जीवन ने अपनी पत्नी को आगे जाने ा था। राष्ट्रपति ने स्वागत मे अपने कदम कुछ आगे बढाए। शोभा ने अपने दोनो ो को जोडकर राष्ट्रपति को नमस्कार किया था। राष्ट्रपति के आगे बढे हाथ रुक थे। जीवन, जो अपनी पत्नी से दो ही कदम पीछे था, ने राष्ट्रपति की झिझक को ा और झॉवर पड आए चेहरे तथा सहमे हुए कदमो के साथ आगे बढा था। कुछ ो निकल आने पर उसने अपनी पत्नी को एकदम करीब पहुँचकर धीरे से कहा 'राष्ट्रपति से हाथ मिला लेती तो क्या अनथ हो जाता ? उन्हे लजा दिया तुमने।'

दूसरी बार अमेरिकी उच्चायुक्त के यहॉ से एक भोज से वे दोनो घर लोटे थे। ने बदन पर से कोट उतारकर गले से टाई खोलते हुए जीवन अपनी पत्नी पर बरस ा था, 'यह पूछने की क्या आवश्यकता थी कि गिलास मे क्या था ? स्नेक्स लेते य भी तुमने अपनी बेहूदी फ्रेच मे पूछ लिया था कि समोसे के भीतर क्या था। ने तो मुझे कही का नहीं छोडा। आइदा मै तुम्हे अपने साथ उन सभ्य लोगो के ा नही ले जा सकता। बेहतर तो यही होगा कि तुम अपनी बेटी के साथ ाविजन पर हिदी फिल्मे देखती रहो।'

देश की आजादी के जश्न के सीधे प्रसारण के दौरान आभा ने अपनी मॉ से ा था, 'मॉ! पापा की बगल म उतने पास खडी वह ओरत कौन है ?'

शोभा ने बहुत छोटा सा उत्तर दिया था, 'उनकी प्रेस आटाची।'

'प्रेस आटाची क्या होती है, मॉ ?'

शोभा के दिमाग मे जो बात आई थी वही कह गई थी—वह, 'जो रहस्य ना जानती हो।'

शालिनी के साथ अखबारो मे भी कई बार जीवन की तसवीरे छपी। कभी सी कॉन्फ्रेस के दौरान, कभी किसी विदेशी मिशन को जाते या लौटते हुए।

कई बार शोभा की सहेली कामिनी फोन पर उससे पूछती रही थी, 'इन दोनो खुलेआम इस तरह साथ-साथ देखकर तुम कब तक चुप रहोगी ?'

'खुलेआम गलत नहीं होता।'

'जब खुलेआम यह नजारा है तो फिर चारदीवारी के भीतर की तो सोचो।'

शोभा कुछ बोली तो नही थी, पर भीतर से खामोश या शात भी नहीं रह सकी ।

चार वर्ष पहले दीवाली की सफाई और तैयारियो के दौरान शोभा को जीवन के

कागजात के बीच उसे समदर किनारे की जमीन के वे कागजात मिले थे। शालिनी भारद्वाज के नाम खरीदी गई उस जमीन पर बन रहे बॅंगले का नक्शा भी था। शोभा चुप रह गई थी। दीवाली को गुजर जाने दिया था। फिर कामिनी से फोन पर बाते की थीं।

कामिनी ने उससे कहा था, 'अरी, इतनी महॅंगी जमीन खरीदने का पैसा उस चार कौडी की औरत के पास कहाॅं से आ सकता है ? उसपर उतना बडा घर।'

उसी रात शोभा ने जीवन से प्रश्न किया था। हमेशा की तरह बहुत कम बोली थी वह, 'समुद्र किनारे जमीन और बॅंगले के वे कागजात ?'

जीवन के चेहरे का रग एकाएक बदल गया था। क्रोध भरे स्वर मे पूछा था, 'तुम मेरे व्यक्तिगत दस्तावेजो पर नजर रखने लगी ?'

'व्यक्तिगत ?'

'व्यक्तिगत नहीं तो और क्या ?'

'मेरे और आभा के होते किसी और के लिए जमीन खरीदना ।'

'शटअप! खबरदार जो आइदा तुमने मेरी प्राइवेट फाइले खोलने की कोशिश की।'

शोभा चुप रह गई थी।

जीवन बोलता गया था और उसके उस ऊॅंचे स्वर से डरकर सात वर्ष की आभा रोने लगी थी। उसने गैराज से मर्सिडीज कार बाहर निकाली थी और दूसरे दिन बाद ही घर लौटा था।

और उस घटना के सातवे दिन शोभा ने एक हाथ से अपनी बेटी की कलाई थामी थी और दूसरे हाथ से अपने मगलसूत्र को जीवन के सामने मेज पर रखकर कहा था, 'इस घर मे जब मेरा कुछ नही तो यह भी मेरा नही।' और इससे पहले कि जीवन कुछ बोल पाता, वह आभा के साथ सडक पर आ गई थी।

इन चार वर्षो मे कई बार शोभा को जीवन के फोन मिले थे। कई बार उसने आभा से मिलने की इच्छा प्रकट की थी और कई बार आभा ने अपनी माॅं से स्वय कहा था कि वह अपने पिता से मिलना नही चाहती। इस लबे अतराल मे जीवन तीन बार सरकारी ठाट-बाट मे अपनी ससुराल पहुॅंचा भी था, पर शोभा और आभा—दोनो मे से कोई उसके सामने नही आई थी। पिछली दीवाली और क्रिसमस मे वह अपने तोहफो को अपने साथ लिये लौट गया था, पर इस बार पाॅंच दिन पहले अपनी ससुराल पहुॅंचने पर उसने अपनी बेटी से स्वय अनुरोध किया था कि वह दो मिनट के लिए उससे मिलकर उसकी बातो को सुन तो ले। यही कारण था कि शोभा उसके सामने आ गई थी।

जीवन ने बात राजनीतिक शब्दो मे शुरू की थी, 'मिली-जुली सरकार के टूट जाने के कारण हम लोग एक वर्ष पहले ही जनता के सामने आ गए हैं। विपक्षी-दलवाले हम दोनो के सबध को जनता के सामने मीटिंगो, रेडिया और अखबारो मे भी जोरो के साथ उछाल रहे हे।'

'हम दोनो के बीच कोई सबध नहीं हे।'

'हमारे सबध-विच्छेद को लेकर मेरे ऊपर कीचड उछाली जा रही है। तुम तो जानती हो कि इधर साल भर से मेरे और शालिनी के बीच कोई सबध नही है। वह अब मेरे दफ्तर की अफसर भी नहीं हे।'

'मैं उन बातो को जानना नही चाहती।'

'मुझे तुम्हारी और अपनी बेटी की आवश्यकता हे। तुम दोनो को बेहतर जिदगी देने के लिए इस चुनाव म मेरा जीतना जरूरी है। विपक्षी दल मेरे खिलाफ जिस तरह का अभियान छेडे हुए हैं, उससे जनता के बीच मेरा महत्त्व घट गया हे। पूरे द्वीप मे मेरे खिलाफ इश्तेहार चिपकाए जा रहे हैं, जिसमे यह कहा गया है कि जो आदमी अपनी पत्नी और बेटी का नही हुआ, वह भला जनता का कैसे हो सकता हे। मेरी मीटिंगो मे उधर के नामी गुडे नारे लगाते है—'पत्नी ओर बच्चे को ठुकरानेवाले को हम भी ठुकराते हे।' वे यह भी कहते हैं कि चुनाव के अतिम दिनो मे तुम उनके मच से खडी होकर मेरा पदाफाश करोगी।'

'मै किसी भी मच पर नहीं जा रही हूँ।'

'शोभा, जो कुछ हुआ, उसे भूल जाओ।'

'जो कुछ हुआ, उसे भूलकर ही तो इधर आई हूँ।'

'यह देखो। मे तुम्हारा मगलसूत्र लेकर आया हूँ। आभा के साथ घर लौट चलो। प्रधानमत्री का वादा है कि इस बार मुझे बेहतर मत्रालय सौंपा जाएगा। मुझे माफ करके तुम इस मगलसूत्र को स्वीकार कर लो।'

'यह मेरा मगलसूत्र नही है।'

'मैं अपनी सारी भूलो को मानता हूँ। मैं इसी समय अपना सब कुछ तुम्हारे और आभा के नाम लिख देने को तेयार हूँ। आभा को मेरे सामने ला दो। मैं तुम दोनो को घर वापस ले जाने के लिए आया हूँ।'

'या हमे आगे रखकर चुनाव जीतने के लिए ?'

'इस बार का चुनाव मैं तुम दोनो के लिए जीतना चाहता हूँ। मेरे घर के ऑगन मे मेरे सभी एजेट और साथी तुम दोनो की राह देख रहे है। तुम्हे वहाॅ मेरे साथ देखकर लोग खुशी से नाच उठेगे।'

शोभा के माता-पिता बीच मे आ गए थे। शोभा के पिता ने कहा था, ''हम लोगो को पॉच दिनो का समय दो।'

इस मॉग को शोभा भी मान गई थी।

□

आज ठीक नौ बजे जीवन आ रहा था। बस, घटे भर का समय बाकी था। शोभा आभा को स्कूल छोडकर आई थी। रास्ते मे आभा ने उससे कहा, 'मॉ, तुम पापा के साथ मत जाना। मै तुम्हारे साथ रहकर खूब पढूँगी और डॉक्टर बनूँगी।'

शोभा के भीतर उसका सकल्प बोल उठा, 'तुम्हारी मॉ तुम्हे डॉक्टर बनाकर रहेगी, आभा।'

अपनी चारपाई पर बैठी शोभा ने चित्रो के एलबम को खोला। उस तीसरी तसवीर, जिसे उसने इधर बहुत दिनो से नही देखा था, को वह देर तक देखती रही। चुनाव की जीत के अवसर पर ऊपर उठे झडो के आगे शोभा अपने पति की बगल मे खडी उस जीत की खुशी मे हॅस रही थी। जीत की खुशी मे उसका पति अपने गले के हारो मे से एक हार निकालकर शोभा को पहना रहा था, तभी वह तसवीर ली गई थी। गौर से कुछ क्षणो के लिए देखने के बाद शोभा ने उसे एलबम से बाहर निकाला और उसके टुकडे-टुकडे करके हवा मे उडा दिया। सामने की कुरसी पर से उसने अपना बैग उठाकर कधे पर लटकाया और नौकरी के लिए निकल पडी।

□

# बेकसूरों के बीच

एक दिन सुलतान सुलेमान की ख्वाहिश हुइ कि वह अपनी हुकूमत का कैदखाना देखे। दूसरे ही दिन वजीर ने इसका इतजाम करवा दिया। ठीक वक्त पर सुलतान कैदखाने के भीतर पहुँचा। दरोगा ने सलामी दी, फिर हवलदार ने, फिर सिपाहियो ने और बाद मे दो लबी कतारो मे खडे केदियो ने भी सलाम बजाया।

पहले कैदी के सामने खडे होकर सुलतान ने सवाल किया, ''क्यो भुगत रहे हो यह सजा ?''

कैदी गिडगिडा उठा, ''आलमपनाह! मुझपर चोरी का झूठा इलजाम है। मैं बेकसूर हूँ। नाहक सात साल की सजा हो गई।''

सुलतान आगे बढ गया। कुछ कदम चलकर उसने एक दूसरे कैदी से पूछा, ''तुम्हारा क्या जुर्म था ?''

''जहॉपनाह! मेरा कोइ जुर्म नहीं था। पडोस की लडकी की इज्जत किसी और ने ली थी, पर झूठे गवाहो के कारण मैं फॅस गया। तीन साल से इस जहन्नुम मे हूँ, अभी और तीन साल रहना है। मेरा कोई कसूर नहीं।''

सुलतान आगे बढा और दूसरी कतार के एक कैदी के आगे रुककर पूछा, ''और तुम ?''

''आप तो इनसाफ के फरिश्ते हैं, बादशाह। आपसे क्या छुपाना! एक साजिश का शिकार होकर मैं यहॉ दस साल की सजा भुगत रहा हूँ। जरीना का खून किसी और ने किया था, मगर उसके खाविद ने दुश्मनी का बदला मुझसे लिया। मैंने तो जरीना को कभी हाथ तक नहीं लगाया था। मैं बेकसूर हूँ मैं बेकसूर हूँ। यह बेइनसाफी है, सुलतान।''

सुलतान वहॉ से भी आगे बढ गया। चौथे कैदी के आगे पहुँचकर वह खडा हो गया ओर उससे पूछा, ''तुम कितने दिन की सजा भुगत रहे हो ?''

उस कैदी ने धीरे से कहा, ''सात साल की।''

''किस बेइनसाफी के लिए ?''

''बेइनसाफी कैसी ?''

''क्यो ?''

''मैने सात सौदागरो के यहॉ चोरी की थी। पकडा गया। इनसाफ हुआ। अपनी करनी की सजा भुगत रहा हूँ। इसमे तो बेइनसाफी की बात है ही नही।''

सुलतान ने इशारे से दरोगा को अपने पास बुलाया और कडककर कहा, ''इस आदमी को तुम इसी वक्त कैद की चारदीवारी से बाहर कर दो। इन सभी बेकसूरो के बीच इसकी कोई जगह नही है। इनके बीच रहकर यह सभी को बिगाड देगा।''

उस चौथे कैदी को उसी वक्त कैदखाने से बाहर कर दिया गया।



# आन-रक्षक

लगभग तीन महीनो से चल रहे उन प्रहारो से सरकार टस-से-मस नहीं हुइ। अखबारो के भडाफोड लेख और सपादकीय तक खाली जाते रहे। कृषि मत्रालय पर लगे उन तमाम आरोपो को प्रधानमत्री 'पोलिटिकल वेडेता' कहते रहे और उसे विपक्षी दल की साजिश बताते रहे। ससद् मे प्रश्नो की बौछारो के सामने भी सरकार अडी रही।

लेकिन उस वक्त प्रधानमत्री ने अपने पॉव के नीचे से जमीन को सरकते हुए पाया, जब उनके कुछ सासदो ने कृषि मत्रालय की कुछ गतिविधियो पर सवाल भी करने शुरू किए। मत्रिमडल की तीन जुटावो और सलाहकारो की कई तदर्थ बैठको के बाद प्रधानमत्री ने कृषि मत्री विवेक जुडावन के सामने अपनी विवशता रखते हुए कहा, "मै जॉच कमीशन तो नही नियुक्त कर रहा हूँ, पर फैक्ट फाइडिग कमेटी नियुक्त किए बिना इस ऑधी को नहीं रोक सकता।"

"पर अगर ऐसा हुआ तो "

"मै जहॉ तक आपको बचा सकता था, बचाता रहा। अब पानी नाक तक पहुँच चुका है।"

"हमारी पार्टी की नीव हिल जाएगी।"

"इस समय मेरे लिए देश पार्टी से अधिक मायने रखता है।"



शाम को अपने चद हितैषियो से इस मुद्दे पर बाते करने के बाद कृषि मत्री ने रात मे मादाम रोजी और विनोद रामरतन को अपने बॅगले पर बुलाया। लबी बातचीत के दौरान विवेक जुडावन ने विनोद से तीन-चार बार कहा, "सभी कुछ तुम्हारे ऊपर निर्भर है। तुम्हारे डुबाने पर मैं डूबूँगा और तुम्हारे बचाने पर मैं बचूँगा।"

विनोद रामरतन चुपचाप मत्री को देखता रहा और फिर उसने अपनी बगल मे बैठी मादाम रोजी की ओर देखा। मादाम रोजी की ऑखो के सामने झिलमिला उठी चार वर्ष पहले की वह पहली मुलाकात।

पहली बार मादाम ने उस हट्टे-कट्टे युवक को क्यूर्पिप मे तब देखा था जब कृषि मत्रालय के एक वरिष्ठ अफसर की मृत्यु के बाद वह गुलदस्ते लेने अरकाद सलाफा पहुँची थी। उसी आम गली और एकदम उसी ठौर पर उसने उसे दोबारा तब देखा था जब कृषि मत्री भी उसके साथ था। या यो कहे कि जब वह कृषि मत्री के साथ थी। दोनो बार समय भी लगभग एक ही था। तीसरी बार वह अपनी डेटसन की स्टीयरिग व्हील पर न होकर पैदल थी। हमेशा की तरह 'अशोका होटल' के ठीक सामने पटरी पर वह युवक अपने उन्ही दो साथियो के साथ दाल-पूडीवाले के पास ही खडा था। पर इस बार वह दाल-पूडी नहीं खा रहा था, बल्कि कोका पी रहा था। मादाम को आदमी की सही पहचान थी और यह बात कई लोग, जिनके सपर्क मे वह रहती आई थी, उससे कह चुके थे। मत्री ने कहा था कि आदमी उसकी बिरादरी का होना चाहिए। दो ही दिनो के भीतर मादाम यह पता लगा चुकी थी कि उसका तलाशा हुआ नौजवान मत्री की जाति का ही था।

दो दिन पहले ही मादाम रोजी, जिसका सही नाम राजरानी था, ने यह पता लगा लिया था कि उस युवक का नाम विनोद रामरतन था और वह 'प्री-जीनिक सुपर मार्केट' मे अस्थायी रूप से काम करता था। अभी एक दिन पहले मादाम रोजी कृषि मत्री के साथ 'अशोका होटल' मे बैठकर लच ले रही थी। वे जहाँ बैठे थे, वहाँ से गली के उस पार दाल-पूडी बेचनेवाला एकदम सामने था। दो सप्ताह पहले कृषि मत्री होनोरेबल विवेक जुडावन मादाम को बता चुका था कि वह अपने से पहले वाले मत्री के अगरक्षक को अपना भी अगरक्षक बनाए रखना नहीं चाहता था। उसके मत्रालय सँभाले अभी महीना भी नहीं हुआ था कि मत्रालय के कई पूर्वाधिकारी हटाए जा चुके थे और उनकी जगह अपनी खास पसद के लोगो को रख लिया गया था।

जब विवेक जुडावन ने मादाम रोजी से नए बॉडीगार्ड की चर्चा की थी तो मादाम बोल उठी थी, 'आपको बॉडीगार्ड की जरूरत नही है, क्योकि अगरक्षक तो बस भाडे के कवच होते हैं। आपको एक प्रोटेक्टर चाहिए, जो हर स्तर पर आपकी रक्षा कर सके।'

'तो फिर रोजी की जिम्मेवारी मैं तुम्हारे ही ऊपर छोड रहा हूँ।'

'आप चिता मत करे। आपको सही आदमी मिल जाएगा।'

जब अशोका होटल के पहले माले पर मेज के सामने बैठे-बैठे मादाम रोजी ने मत्री को लच-टाइम मे दाल-पूडीवाले के पास विनोद की ओर सकेत किया था तो मत्री ने कहा था, 'पर यह तो एकदम साधारण आदमी लग रहा है। फुटपाथ पर दाल-पूडी खानेवाला मेरा रक्षक बन सकता है क्या ? यह तो बहुत भोलाभाला लग रहा है।'

'साधारण लोग ही असाधारण काम कर दिखाते हे। यह भोलाभाला लगता ही नही है, बल्कि है ही बहुत भोलाभाला। और फिर पटरी से निकलकर मत्रालय पहुँच जानेवाला नो अपने को कुछ-से-कुछ बना डालनेवाले पर जान कुर्बान कर ही सकता हे।'

विवेक जुडावन को बात जॅच गई थी। उसने मादाम को सहमति देते हुए कहा था कि वह शनिवार को उसे साथ लिये मत्रालय पहुँचे।

शुक्रवार को अपनी रोब भरी चाल के साथ मादाम दाल-पूडीवाले के पास खडे उन तीन साथियो के पास पहुँची थी। उसके अपने कधे पर पूर्व प्रधानमत्री की ओर से भेटस्वरूप दिया गया ढाइ सो डॉलर का जेनविन गुच्ची हेंड बेग था ओर दूसरे हाथ मे एक नकली फाइल।

तीनो के पास पहुँचते ही उसने औपचारिक 'हेलो' के बाद अनजान बनते हुए पूछा था, 'आपमे से मिस्टर विनोद रामरतन कौन है ?'

विनोद ने पैंतालीस साल की उस सजीली महिला की ओर दखा था, जो पहनावे और सौंदर्य प्रसाधन की मदद से दस माल कम उम्र की लग रही थी। फिर अपने दोनो साथियो की ओर देखा था ओर तब अपने सहज भोलेपन के साथ धीर मे कहा था, 'जी, मैं हूँ।'

'क्या मे अलग से आपसे एक मिनट बात कर सकती हूँ ?'

विनोद ने अपने साथियो की ओर दोबारा देखा था। उनकी खामोश इजाजत पाकर वह महिला के साथ उसकी कार तक आ गया था, जो कुछ ही दूरी पर एकदम रॉयल कॉलेज के सामने खडी थी। पहले महिला अपनी गाडी के भीतर गई, फिर अपनी बाई ओर के दरवाजे को खोलकर विनोद को भीतर आ जाने दिया।

उसके बैठते ही सीधे विषय पर पहुँचती हुई वह बोली थी, 'हमारे कृषि मत्री अपने मत्रालय मे कुछ नए लोगो को नौकरी देना चाह रहे हैं, जो उनके अपने चुनाव-क्षेत्र के हो और जो पिछले चुनाव मे उनके लिए काम कर चुके हो।'

'पर आपको कैसे मालूम कि पिछले चुनाव मे मैंने उनके लिए काम किया है ?'

'यही नही, मुझे यह भी मालूम है कि तुम अकेले विपक्षी दल के कई गुडो के दॉत खट्टे कर चुके हो।''

'फिर भी, जब मैने पुलिस मे भरती होने मे उनके प्रमुख एजेट की मदद मॉगी तो वह सिर्फ, वायदे करके रह गया। रामायण मे तो कहा गया है कि प्राण जाय, पर वचन न जाए। हर सप्ताह रामायण क सत्सग करनेवाले भी इसपर अमल नहीं करते।'

'मैं तुम्हारे लिए पुलिस की नौकरी से चार गुनी बेहतर नौकरी की व्यवस्था कर रही हूँ।'

'मेरे पास केवल ।'

'सीनियर कैब्रिज तक ही पढ पाए हो।'

'आप तो '

'तुम्हारे बारे मे पूरी जानकारी है मुझे।'

'क्या है वह नौकरी ?'

'कृषि मत्री के साथ-साथ रहना।'

'बॉडीगार्ड की तरह ?'

'आत्मीय साथी की तरह। और शुरू मे तुम्हारी तनख्वाह होगी—पद्रह हजार रुपए महीना।'

'क्या ?'

'पद्रह हजार रुपए महीना। कल ठीक दस बजे तुम पोर्ट-लुई के गवर्नमेट हाउस के सामने मेरा इतजार करना।'

□

मत्री के बॅगले से घर लौटते हुए अपनी कार को गोया बेसुधी मे चलाते हुए मादाम रोजी द्वारा चार वर्ष पहले कही गई बात उसके कानो मे गूॅज उठी, 'तुम्हारा दायित्व है हर तरह से मत्रीजी की रक्षा करना। प्राण और मान दोनो की।' पॉच दिन बाद विनोद ने मादाम रोजी की हाजिरी मे अनुबध की शर्तो पर हस्ताक्षर किए थे। उसी दोपहर शहर के करी-पुल्ले रेस्तरॉ मे मादाम रोजी और विनोद एक साथ सरकारी खर्च पर अपना पहला खाना खाने बैठे थे।

खाने के दौरान विनोद ने मादाम रोजी से पूछा, ''मत्रीजी ने बताया कि उनके देशी-विदेशी सभी मिशनो पर मुझे उनके साथ रहना होगा। क्या मुझसे पहले के लोग और मुझसे अधिक योग्य अफसर इस बात से नाराज नहीं होगे ?''

''तुम पुल पर पहुॅचने से पहले ही पुल पार करने की बात सोच बैठे। देखो, मेरा काम है मत्रीजी को हर तरह से खुश रखना, उन्हे स्ट्रेस से मुक्त रखने के लिए उनके मनोरजन का हमेशा खयाल रखना। तुम्हारा दायित्व है उनका बाल बॉका होने से रोकना।''

''हर तरह से ?''

''हॉ, उनके घर से लेकर गली, मच, मत्रालय, अखबार तथा विदेश तक।''

''यह तो बहुत बडी जिम्मेवारी हुई।''

''बडे ओहदे ओर बडी तनख्वाह की जिम्मेवारी भी तो बडी होनी चाहिए।''

☐

उधर कृषि मत्री विवेक जुडावन भी अपनी कार की पिछली सीट पर बेठे अपने मत्री पद सँभालने के एक ही साल बाद सारी परेशानियो की उम्र शुरुआत के बारे मे सोचने लगा। वह अपनी अतरग बैठक कभी भी मत्रालय मे न करके अपने बॅगले मे करता। मादाम रोजी के साथ के सलाह-मशविरे के लिए भी उसने वही स्थान रखा था।

रविवार का दिन था और दोपहर के भोजन के लिए विवेक जुडावन ने अपने तीन-चार मित्रो को बुला रखा था। खाने के बाद उसके साथी रुखसत हो चुके थे। तब उसने बॅगले के चौकीदार को हिदायत देते हुए कहा था कि उसके पोर्टेबल फोन को ऑफ कर दे ओर बॅगले के फोन को डिस्कनेक्ट रहने दे। उसकी पत्नी ओर दोनो बच्चे समुद्र-तट की ओर चले गए थे और विवेक जुडावन मादाम के साथ समदर के सामनेवाली बालकनी पर दो दिन पहले शुरू हुए गभीर मुद्दे पर बात करने बैठ गया था। उसके हाथ मे लीकर का गिलास था और मादाम रोजी अपनी सफेद वाइन लिये हुई थी।

बात मादाम ने ही शुरू की थी, 'राजनीति से मेरा सबध तुमसे पहले रहा है। मै मत्रियो को आते-जाते देखती रही हूँ। मत्रियो को जहाँ मैंने 'कुछ नहीं' से 'कुछ' बनते देखा हे, वही उन्हे कगाल होते भी देखा है। यही कारण है कि परसो मैंने तुमसे अपने आगे के दिनो के लिए सोचने को कहा था।'

और इस घटना के डेढ साल बाद उसी ठौर पर मत्री ने बात शुरू करते हुए रोजी से कहा था, ''अब हमे कुछ और करना चाहिए। विनोद को भी शक हो गया है कि वह मेरे लिए नशीली दवाएँ ढोता रहा है। दूसरी बात यह भी है कि डिप्टी पुलिस कमिश्नर ने मुझे इस बात से आगाह किया है कि आजकल इटरपोल नशीली दवाओ के आयात पर कडी नजर रखने लगा है।''

''में पहले ही से सारा कुछ सोचे बैठी हूँ।''

विवेक जुडावन ने रोजी की ओर देखकर कहा, ''काफी तेज हो तुम। बताओ, अब आगे क्या करना है ?''

''तुम्हारे दूसरे मत्री मित्र उससे बहुत आगे निकल चुके हैं। तुम तो बहुसख्यक सप्रदाय के हो। फिर भी तुम्हे बेहतर मत्रालय नहीं दिया गया। तुम्हारे दोस्त टेडर, कॉण्ट्रैक्ट और कमीशन के जरिए मालामाल हो गए हैं। आज मै तुमसे जो कहने जा रही हूँ, उसपर अगर तुम अमल करोगे तो तुम भी किसी से पीछे नहीं

रहोगे। अगले चुनाव की जीत पर विश्वास करके बैठे रहने से बेहतर तो यही होगा कि इन बाकी ढाई सालो मे समय का फायदा उठा लिया जाए।''

''तुम बताती चलो, मै करता चलूँगा।''

''अपने चुनाव-क्षेत्र मे तुम एक अस्पताल बनाने की बात चला दो। अगर योजना सौ-डेढ सौ मिलियन की हुई तो बडी आसानी से तुम्हारे हिस्से दस-पद्रह मिलियन तो आ ही जाएँगे। और दूसरा सुझाव यह है कि अपने इलाके, खासकर विनोद के गॉव, मे एक मदिर बनाने की सोचो।''

''पर इस दूसरे सुझाव से क्या होगा?''

''बहुत कुछ होगा। सरकारी सहयोग मिलेगा, उद्योगपति तुम्हारा इशारा पाते ही दान पर दान देने के लिए तैयार हो जाएँगे। यही नही, जनता की ओर से जो तहसील होगी, उससे भी तुम तीस-चालीस प्रतिशत तक अपने लिए अलग निकाल सकोगे।''

''अब पता चला कि मेरे मित्र पूर्व शिक्षा मत्री ने मुझे तुम्हारा नाम क्यो बताया था।''

तीन महीनो के भीतर कैबिनेट मीटिंग के दौरान दोनो योजनाएँ स्वीकृत कर ली गई थी और डेढ साल के भीतर अस्पताल तथा मदिर—दोनो बनकर तैयार हो गए थे।



उसकी उस नई नौकरी की सूचना पाकर रात मे घर पर विनोद की विधवा मॉ ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए उससे कहा था, 'भगवान् ने मेरी सुन ली, बेटा। मत्रीजी की कृपा तुम्हारे ऊपर बनी रहे। तुम पूरी ईमानदारी और लगन के साथ अपना काम करना। अब मुझे विश्वास हो गया कि सुनदा अपनी पढाई को कायम रख सकती है।'

उसकी सोलह साल की बहन के भी खयाल एकदम वही थे, जो उसकी मॉ के थे। खुशी से उसने अपने भाई के दोनो गालो को चूम लिया था। फिर भी मन मे एक अज्ञात सी आशका थी। उसे एकाएक उदास पाकर विनोद पूछ बैठा था, 'लगता है, मेरे जीवन के इस भारी परिवर्तन से तुम्हे जो खुशी होनी चाहिए थी वो नही हुइ।'

सुनदा एक क्षण चुप रही, फिर बोली थी, 'खुशी तो बहुत हुई, लेकिन '

'लेकिन क्या?'

'राजनेताओ के साथ की नौकरियॉ स्थायी नहीं हुआ करतीं।'

'पर उसके आज नही तो कल स्थायी होने की पूरी उम्मीद तो थी। खैर, तुम खुश हो तो मै भी खुश हूँ।'

वह अपनी मॉ से पूछ बैठी थी, 'मॉ, पापा होते तो बहुत खुश होते न ?'

'हॉ बेटी, वे होते तो खुशी से झूम उठते। तब तुम बहुत छोटी थीं। इस ससार को छोडने के कुछ ही दिन पहले उन्होने मुझे और अपने बच्चो को पास बिठाकर कहा था कि उनकी सबसे बडी इच्छा यह थी कि विनोद सरकार मे नौकरी पाकर जीवन भर के लिए आश्वस्त रहे। आज वह कितने खुश होते, जब उन्हे पता चलता कि विनोद मत्री क साथ काम करता है।'

'पर तुम तो कहती रहती थीं कि पापा को सरकारी गुलामी पसद नहो थी। इसीलिए वह हमेशा अपने छोटे से कारोबार मे ही लगे रहे।'

'पर बाद मे उन्हे अपनी भूल का एहसास हुआ था ओर हमे इस तरह छोडकर जाने के दो दिन पहले उसने तुम्हारे भाई से कहा था कि लोहार का यह काम तो अब चलने से रहा। तुम्हे चाहिए कि तुम पढ-लिखकर सरकार मे कोइ अच्छी नोकरी कर लो। वह यह भी कहते थे कि जो सुख और जो खुशी वह इस घर को नहीं दे पाए, वह विनोद देकर रहेगा। उस समय तुम प्राइमरी मे थीं। तुम्हारे पिताजी ने जो आखिरी बात मुझसे कही थी, वह तुम दोनो की पढाई को लेकर थी। बोले थे कि रूखी-सूखी खाकर भी बच्चो की पढाई को जारी रखना।'

'तुम तो कहती थी कि पापा अगर बहुत धार्मिक स्वभाव के नही होते ओर हर वक्त जरूरतमदो की मदद के लिए इलाके मे सबसे आगे नहीं होते तो ओरो की तरह हमारा भी अच्छा-खासा घर होता।'

'तुम्हारे पापा ने इस घर मे हमे कभी भूखा नहीं रखा। दोनो मुट्ठियो से लुटाकर भी हमे कभी भी तगहाली मे नही छोडा। हॉ, हम लोग धन-दौलत नही जमा कर पाए—यह दूसरी बात है। अपनी सादगी मे भी हम लोग खुश थे, सुखी थे। तुम्हारे पापा विनोद से हमेशा यही कहते रहते थे कि कोई गलत काम करने से अपने को बचाए रखे। आखिरी वक्त तक वह विनोद से रामायण का पाठ सुनते रहते और कहते रहते, 'बेटे। औरो को खुश रखकर हरदम असली सुख का आनद पाने की कोशिश मे रहना। किसी का बुरा कभी मत सोचना।' तुम्हे अपने भाइ पर गर्व करना चाहिए, बेटी। इसने अपने पापा की एक-एक बात पर अमल किया है। गॉव के सभी लोग तुम्हारे पापा और भाई की ईमानदारी एव धार्मिक स्वभाव की प्रशसा करते रहते हैं। अच्छाई और सच्चाई के रास्ते पर चलने का ही यह परिणाम है कि आज तुम्हारे भाई को इतनी अच्छी नौकरी नसीब हुई है। यह सभी कुछ भगवान् रामजी की ही कृपा तो है।'

अपनी मॉ को ध्यान से सुनने के बाद सुनदा ने अपने भाई को देखा था और मॉ

से बोली थी, 'माँ। तुम कहती रही हो कि पापा कहते रहते थे कि सामने की धुँधली दीवार को क्षितिज मत समझो। अपने घर को अपना घर न कहकर हमारा घर कहो, हमारा देश, हमारी धरती। अपने को अपनी धरती का हिस्सा मानकर चलो, ताकि तुम इनकी रक्षा कर सको। पापा यह भी कहते थे न माँ, कि दुर्भाग्यवश राजनेता ऐसा नही समझते। वे तो बस अपना, अपना और अपने ही तक सीमित रहते है, तो फिर भैया राजनेता की सेवा मे रहकर आम लोगो का हितैषी कैसे हो सकता है ?'

उसकी माँ गरमी मे खुली रहनेवाली खिडकी के रास्ते बाहर की अमावस्या के अँधेरे को देखती रही थी।

दूसरे दिन विनोद ने अपने दोनो मित्रो सिदिक और महेद्र को सुनदा की आशका वाली बात बताई थी तो महेद्र ने विनोद के मन की झिझक को यह कहकर दूर करने की कोशिश की थी, 'अरे यार। औरत जाति तो हमेशा से असुरक्षा का भय अपने मे लिये होती है। मैने जब पुलिस की नौकरी की बात अपनी माँ के सामने रखी थी तो वह बोल उठी थी कि मै नही चाहती कि मेरा इकलौता बेटा खतरो से भरी नौकरी करे।' विनोद को यह खयाल आते देर नही लगी कि महेद्र की माँ का वैसा सोचना बेवकूफी थी। और इसी के साथ सुनदा की आशका को भी उसकी नादानी मानकर वह मुसकरा उठा था।

नौकरी के तीसरे ही दिन विनोद को मत्री के सलाहकार की बगलवाला कमरा दफ्तर के रूप मे मिल गया था। चपरासी ने मेज पर के दोनो टेलीफोनो की जानकारी देते हुए कहा था, 'यह काला फोन बाहर का है और यह लाल रगवाला वित्त मत्री के व्यक्तिगत फोन से जुडा हुआ है।'

दफ्तर की और भी जो दूसरी बाते बतानी थी, बताने के बाद उसने कहा था, 'सामने का दफ्तर परमानेट सेक्रेटरी का है। आप ठीक दस बजे उनसे मिल लीजिए। वे आपको बाकी बाते बताएँगे।'

ठीक दस बजे विनोद ने पी एस  का दरवाजा खटखटाया था। थोडी देर के बाद भीतर से आवाज आई थी, 'व्ही ऑत्रे।'

जब विनोद भीतर पहुँचा था तो मत्रालय की एक एक्जीक्यूटिव अफसर मेज पर की फाइल के कागजो को ठीक करने के बाद अपनी कुरसी से उठकर दरवाजे की ओर बढ गई थी। पी एस  ने विनोद को बैठने को कहा था और अपने पाइप को सुलगाते हुए पूछा था, 'तुम मत्रीजी के चुनाव-क्षेत्र के हो ?'

'हाँ।'

'उनके रिश्तेदार भी हो ?'

'नही।'

'ठीक है, तुम उस सामने वाले दफ्तर म जाकर श्रीमती गिरधारी से मिलो। वही तुम्हारे लिए सारी व्यवस्था करेगी।'

दस मिनट बाद वह कृषि मत्रालय की कॉन्फीडेशियल अफसर के साम्ने था। वह बोली थी, 'देखो, तुम्हारा कॉण्ट्रैक्ट मैने तैयार करवा दिया है। पॉच साल का हे। उसके बाद अगर मत्रीजी ने चाहा तो आगे के लिए रीन्युअल किया जा सकता हे। मत्रीजी के दो पुलिस अगरक्षक पहले से हैं, पर उन्हे एक विशेष अगरक्षक की आवश्यकता है—और तुम उनका वह खास आदमी चुन लिये गए हो। मत्रीजी जहॉ भी जाएँगे, तुम पुलिस कार से अलग उस दूसरी कार मे रहोगे जो सरकारी कार होते हुए भी सरकारी नबर प्लेटवाली नही है। तुम्हे इसका कारण मालूम हे ? नही मालूम होगा। मै बताए देती हूँ। इसे हम सेफ-साइड कहते हैं। कार का ड्राइवर ओर तुम—दो ऐसे व्यक्ति हो जिनके लिए सीक्रेसी सबसे बडी बात हे। तुम ओर तुम्हारी कार का ड्राइवर मत्रीजी के सबसे विश्वासपात्र आदमी होगे। बाकी बाते तुम धीरे-धीरे खुद समझते जाओगे।'

दोपहर मे विनोद अपने दफ्तर मे बैठकर अखबार देख रहा था, तभी मेज पर का लाल फोन बज उठा था। उसने झट से फोन उठाकर कहा था, 'व्ही मेस्ये मिनिस।'

'तुम तुरत मेरे दफ्तर मे आ जाओ।'

दूसरे मिनट विनोद कृषि मत्री के भव्य दफ्तर मे मत्री की मेज के आगे की कुरसी पर बैठा था। उससे पहले वहॉ मादाम रोजी उपस्थित थी। फोन पर की अपनी बात को पूरा करने के बाद मत्री ने विनोद से पूछा था, 'श्रीमती गिरधारी से मिल चुके ?'

'व्ही मेस्ये।'

'उसने तुम्हे सारा कुछ समझा दिया होगा।'

'हॉ, सर।'

'पर एक बात नही बता पाई होगी। तुम्हारे ऊपर मेरा विश्वास उससे ज्यादा होगा। मेरे मत्रालय से लेकर मेरे घर और बाहर की जितनी जानकारी तुम्हे होगी उतनी मेरे परमानेट सेक्रेटरी को भी नहीं होगी।' यह कहकर मत्री ने मादाम रोजी की ओर देखा था।

इशारा समझकर मादाम ने विनोद से कहा था, 'इसका मतलब यह है कि मत्रीजी तुम्हे अपना आत्मीय मान रहे है और तुम्हे अपने को उनका सबसे

विश्वासपात्र बनकर रहना है। पुलिस के आदमी मत्रीजी के शरीर के रखवाले होगे, जबकि तुम मत्रीजी के हित, उनके भूत, वर्तमान और भविष्य के भी रक्षक होगे। इस मत्रालय से तुम्हे बहुत सहूलियते मिलेगी। बदले मे तुम्हे उन्हे अपनी पूरी वफादारी देनी होगी।'

'जान भी दे सकता हूँ।'

'अधिक रोमाटिक मत बनो। फर्माबरदार बने रहो।'

ओर एक सप्ताह बाद इस फर्माबरदारी का पहला इम्तिहान मादाम रोजी ने ही लिया था। वह विनोद रामरतन के साथ मत्रालय के उस विशेष दफ्तर मे थी, जहॉ कृषि मत्री अपने निजी व्यक्तियो के साथ हर सोमवार की शाम मशविरा लेने का अगदी था। दफ्तर मे मादाम और विनोद के अलावा और कोई नहीं था। कॉफी की पहली चुस्की के साथ मादाम रोजी ने बात शुरू की थी।

'इस सप्ताह मत्रीजी से जब देश का एक जाना-माना उद्योगपति मिलने आया था, उस समय तुम शुरू से अत तक वहॉ मौजूद थे।'

वह सवाल नही था, पर विनोद ने उसे सवाल ही मानकर हामी भर दी थी।

मादाम आगे बोली थी, 'मत्रीजी द्वारा दफ्तर छोडने से पहले उस उद्योगपति ने मत्रीजी को जो नजराना दिया था, वह चेक मे था या कैश ?'

'न चेक, न कैश।'

'यह कैसे हो सकता है ?'

'क्योकि कोई नजराना न तो दिया गया और न ही लिया गया।'

'मुझसे बाते छिपाने का क्या मतलब ? मत्रीजी और उद्योगपति की वह अप्वॉइटमेट मैंने तय की थी। रकम भी मैने ही निर्धारित की थी। बस, मे तो सिर्फ यह जानना चाहती हूँ कि वह रकम चेक मे दी गई थी या कैश के रूप मे ?'

'मादाम! मैं शुरू से अत तक वहॉ मौजूद था। एक सेकेड के लिए मे वहॉ से नही हटा।'

'मैं जानती हूँ। यह भी जानती हूँ कि उद्योगपति जिस बैग के साथ मत्रीजी के दफ्तर के भीतर गया था उस बैग को तुम्ही मत्रीजी की कार मे छोड आए थे।'

'ऐसा कुछ नही हुआ था।'

'ठीक है, यह बात तुम किसी को नही बता सकते, पर मुझे बताने मे क्या हर्ज है ? तुम जहॉ हो, मेरे पहुँचाने पर हुए हो। मेरे साथ विश्वासघात तुम कैसे कर सकते हो ? हाऊ कैन यू आफोर्ड टू बी सो डिजलॉयल टु मी ?'

'मादाम, मै आपके साथ कोई बेइमानी नहीं कर रहा हूँ।'

'वह नजराना ?'

'कोई नजराना नही था।'

'ठीक है, तुम बताना नहीं चाहते तो कोई बात नहीं।'

मादाम की ओर बिन देखे सामने के बद दरवाजे से बाते करते हुए विनोद रामरतन ने कहा था, 'कोई बात हो तब तो बताऊँ।'

'खैर, मेरी ओर देखो। कल रात मत्रीजी के साथ तुम भी सुबह चार बजे तक कैपमालेरे के एक बॅगले मे रहे। मत्रीजी के साथ उस बॅगले मे जो युवती थी उसे मै ही वहॉ मत्री के पहुॅचने स घटे पहले छोड आई थी। उस लडकी को उसके घर छोडने तुम गए थे या ड्राइवर ?'

'कोई नही।'

'इसका मतलब यह हुआ कि तुम लोगो के चले आने के बाद लडकी वही ठहर गई ?'

'इसका मतलब यह नही।'

'मत्रीजी उसे अपनी कार ?'

'देखिए मादाम रोजी! उस बॅगले मे मत्रीजी सप्ताह भर की अपनी थकान और तनाव को दूर करने के लिए पहुॅचे थे।'

'इसीलिए तो मैने वह बदोबस्त किया था। कोई साथ रहे, तभी तो तनाव से मुक्ति मिलती है।'

'मत्रीजी को एकात चाहिए था और वे पूरी रात अकेले रहे।''

'यानी तुम और ड्राइवर भी वहॉ नही रहे ?'

'ड्राइवर मत्रीजी को छोडकर ऑफिसियल कार से लौट गया था, पर मैं वहॉ सुबह चार बजे तक रहा।'

'जानती हूॅ, इसीलिए तो पूछ रही हूॅ न कि लडकी घर केसे लौटी ?'

'कैसी लडकी, कौन सी लडकी ?'

'वही, जिसे मैं वहॉ छोड आई थी।'

'आप शायद किसी दूसरे बॅगले मे किसी लडकी को छोड आई होगी।'

'देखो, मेरी बिल्ली मुझसे म्याऊँ नही चलेगी।'

यह जुमला चूॅकि क्रिओली मे कहा गया था, इसलिए उस मुहावरे का उत्तर क्रिओली मे ही देते हुए मत्री के अगरक्षक ने कहा था, 'नहीं। न तो आप बदर हे ओर न ही मैं आपके सामने मुॅह बना रहा हूॅ। आपकी बदौलत मैं आज इस जगह पर हूॅ, इस बात को मै कभी नही भूल सकता।'

'तो फिर मुझसे झूठ क्यो बोल रहे हो ? तुम मत्रीजी के अगरक्षक के साथ-साथ उनके आन-रक्षक भी हो। इसलिए उनकी जान और आन—दोनो की रक्षा करना तुम्हारा फर्ज बन जाता है। यह तो समझ आनेवाली बात है, पर क्या तुम्हे मुझपर विश्वास नही जो तुम मुझसे सच्चाई छिपा रहे हो ? क्या तुम सोचते हो कि मुझसे मत्रीजी का अकल्याण हो सकता है ?'

'नही, आप सपने मे भी उनका अहित नही सोच सकतीं।'

'तो फिर मुझसे सच्ची बाते क्यो छिपा रहे हो ?'

'आपने मेरे ऊपर जो विश्वास किया है, बस उसी का निर्वाह मै कर रहा हूँ।'

'तुम मुझे अपना हितैषी मानते हो ?'

'मानता हूँ और जीवन भर मानता रहूँगा।'

'फिर भी मुझसे यही कहते रहोगे कि उस दिन उस उद्योगपति ने मत्रीजी को कोई भी नजराना नही दिया और न ही '

'और न ही कल रात समुद्र किनारे बॅगले पर मत्रीजी के साथ क्षण भर के लिए भी कोई लडकी मौजूद थी।'

आधे घटे बाद मादाम रोजी कृषि मत्री विवेक जुडावन के दफ्तर मे थी और इससे पहले कि मत्री द्वारा वह अपने दो पिछले कामो का नजराना पाती, वह बोल उठी थी, 'आपको सही आन-रक्षक मिला है।'

अपनी मेज की दराज से एक लिफाफे को निकालकर मादाम रोजी के सामने रखते हुए विवेक जुडावन ने कहा था, 'तो फिर एकदम निश्चिंत होकर हम अपनी उस योजना को चला ही दे ?'

'एकदम निश्चित होकर।'

और उसने विनोद से अभी उसी दिन और अपने पिता से बहुत पहले सुने रामायण के उस प्रसिद्ध वाक्य को क्रिओली मे कहा था, 'ली पू दोन सो लावी मे पा पू कास सो प्रोमेस।'

कृषि मत्री बडी गभीरता के साथ अपनी गरदन को नीचे-ऊपर करता रहा था। (यह वाक्य तो उसका अपना तकियाकलाम बन गया था। प्राय हर मीटिग मे वह कहता रहता था—'प्राण जाय पर वचन न जाए।' और एक दिन आवेश मे उसका उलटा बोल गया था।)



फैक्ट-फाइडिग कमेटी के तीसरे महीने और सातवे सत्र मे विलबित कृषि मत्री विवेक जुडावन से घटे भर पूछताछ के बाद विनोद को चौथी बार के लिए

कमेटी के सामने उपस्थित होना पडा। तथ्यान्वेषण के अध्यक्ष ने अपने पिछले सत्रो के प्रश्नो के सिलसिले को जारी रखत हुए विनोद रामरतन से पूछा, ''पाकिस्तान के मिशन से मत्रीजी के साथ लौटते समय आपका एक बैग वी आइ पी लाउज म न पहुँचकर कलेक्ट करनेवाले मत्रालय के चपरासी की भूल से कस्टम काउटर मे पहुँच गया था। आप उसे लेने कस्टम काउटर पर पहुँचे थे, पर उसे उठाते समय बैग अपने आप खुल गया था और उसके भीतर से पॉच किलो ब्राऊन सुगर बरामद हुआ था। इसके बाद आपने यह कह दिया था कि वह बैग आपका नही था। अगर बेग खुलने से पहले आपका था तो फिर खुलते ही वह आपका क्यो नही रहा ?''

''मेरा बैग एकदम उसी रग का था। खुल जानेवाले बेग पर कोइ नाम ओर पता था ही नही। मेरे बैग पर ''

''आपका या मत्री का बैग, जो आप ढोने के आदी थ ?''

''मेरा बैग। उसपर मेरा नाम और पता था।''

''आपको अपने नाम और पतेवाला बेग मिला ?''

''हॉ।''

''उसी वक्त ?''

''नही, दूसरे दिन।''

अध्यक्ष ने अपनी दोनो तरफ बैठे सदस्यो से धीमे स्वर मे बाते की, फिर अपने सामने के कागजात के दो-तीन पन्ने उलटकर अगला सवाल किया, ''मत्रीजी के तीन रिश्तेदारो को दक्षिण प्रात मे आपने जो सरकारी जमीन दिलवाइ, उसका आदेश आपको मत्रालय के किसी उच्चाधिकारी ने दिया था या स्वय मत्रीजी ने ?''

''दोनो मे से किसी ने नही।''

''तो फिर ?''

''मैने अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया था। लैंड डेवलपमेट मत्रालय से मैंने स्वय नेगोश्येट किया था।''

पूरे दो घटे तक की उस पूछताछ और दस्तावेजो के मुआयने के बाद सत्र को अगले दिन तक के लिए स्थगित करते हुए अध्यक्ष ने कृषि मत्रालय के अगरक्षक से यह मॉग की कि कल वे अपने बयान की पुष्टि के लिए सारे कागजात साथ लाएँ।

विनोद रामरतन जैसे ही घर पहुँचा, सुनदा ने उसे बताया कि मत्रीजी के फोन तीन बार आ चुके थे। उन्होने यह कहा है कि पहुँचते ही विनोद उन्हे फोन करे।

चाय पीने के बाद जब विनोद फोन करने बैठा तो सुनदा ने उसे रोकते हुए कहा, ''मत्रीजी ने कहा है कि तुम उन्हे उनके किसी नबर पर फोन मत करो।''

विनोद ने उसके हाथ से नबर लेकर फोन मिलाया। उधर आदेश पाकर कहा, ''हॉ, मुझे जगह मालूम है। मै आधे घटे मे पहुँच रहा हूँ।''

विनोद जब मत्री के बॅगले पर पहुँचा तो मादाम रोजी वहॉ पहले ही से उपस्थित थी। मत्री के हाथ का सकेत पाकर विनोद सामने के खाली सोफे पर बैठ गया। मत्री ने मुँह खोला, पर वह कुछ कह पाता, उससे पहले विनोद कह उठा, ''आज फैक्ट फाइडिग कमेटी मे उठे एक सवाल पर मैं आपसे कुछ जानना चाहता हूँ। क्या यह सच है कि हमारे गॉव मे बन रहे श्री रामेश्वर मदिर के लिए देश भर मे जनता के बीच जो तहसील हुई थी, उसकी हर रसीद की दो प्रतियॉ छपी थी ?''

''ऐसा क्यो होने लगा ?''

''ताकि पचास हजार रसीद की तहसील की हुई रकम मदिर के निर्माण मे लगाई जा सके और दूसरे बाकी पचास हजार रसीद के पैसे आपके पास रह जाएँ।''

इस प्रश्न पर मत्री की जगह मादाम रोजी ने पूछा, ''यह कैसी बात कर रहे हो तुम ?''

''यही नही, उद्योगपतियो और व्यापारियो से जो दान मिले थे, उसमे आधे से अधिक गुप्त दान थे और वह भारी-भरकम रकम भी आपके पास रह गई ?''

अपने हाथ के गिलास के पेय को एक घूँट मे हलक के नीचे उतारने के बाद मत्री बोला, ''यह सभी कुछ विपक्षी-दल की साजिशे हैं।''

''फैक्ट फाइडिग कमेटी के पास सारे प्रमाण आ गए हैं। चार वर्षो से मै आपका तथाकथित सबसे करीब का आदमी हूँ—आपका आन-रक्षक, फिर भी यह सबकुछ करते हुए आपको मेरी फर्माबरदारी का यकीन नहीं हुआ। यही बात हमारे इलाके मे बने अस्पताल को भी लेकर हुई है।''

''सबकुछ तुम्हारी देखभाल मे हुआ था। तुम तो जानते हो, ये सारे आरोप बेबुनियाद है।''

थोडी देर तक चुप्पी साधे रहने के बाद विनोद ने कहा, ''कम-से-कम मदिरवाले मामले पर तो मै किसी तरह की हेरा-फेरी की बात सोच ही नही सकता।''

''तो अब उसपर विश्वास कर बैठे क्या ? देखो विनोद ! प्राण जाय पर वचन न जाय। अपने इस उसूल को भूलने की कोशिश मत करना, वरना ''

अपनी जगह पर से उठते हुए विनोद रामरतन ने कहा, ''प्राण जाय पर वचन न जाय का अब तक मैं गलत अर्थ लगाकर जी रहा था। वह मेरे जीवन का अधूरा सत्य था। आज पता चला कि मैं ता अपने प्राणो का रक्षक था, प्रणो का नहीं। इस बात को मैं अपने सामने की चमक-दमक मे भूल गया था। मदिर के लिए गरीबो ने भी

चदा दिया था। गरीबो और भगवान् के साथ मै इस तरह घात का भागीदार बनने के लिए तैयार नही हूँ। जो मुझे बहुत पहले करना चाहिए था, उसे अब भी कर जाने का साहस तो कर सकूँ। जो स्वय आज तक अपनी मान-रक्षा नही कर सका, वह दूसरो का मान-रक्षक कैसे बन सकता है ?''

दूसरे दिन फैक्ट फाइडिग कमेटी की बैठक मे तीन घटो के भीतर सात बार विनोद रामरतन का नाम पुकारा गया। उसके बाद सप्ताह भर पुलिस ने उसकी तलाश की। उसकी कार आठवे दिन बाद प्लेन शॉपाई की तराई मे खाली मिली।

आज महीने भर बाद उसकी मॉ और उसकी बहन सुनदा को अभी भी विश्वास है कि विनोद शाम तक जरूर घर लौट आएगा।

□

# कुर्बानी

मॉरीशस की स्वतत्रता के बस चद सप्ताह बाकी थे। सन् १९६८ का प्रथम चरण गरमी की पराकाष्ठा लिये हुए था ही, जब द्वीप की राजधानी पोर्ट-लुई मे दो कौमो के बीच हिसा की वह आग भडक उठी थी। लोग अभी एक-दूसरे से पूछ ही रहे थे कि यह क्या हो रहा है, तभी शहर के उत्तरी प्रात की गलियो और घरो मे तहलका मच उठा। हमीद की ऑखो के सामने कल रात उसके घर के पिछवाडे वाली गली मे एक के बाद एक कई घर धू-धू करके जल उठे। दुकानो को डायनामाइट से उडाया गया।

उसने अपने आपसे पूछा, 'आखिर ये क्रिओल लोग हम मुसलमानो के खून के प्यासे क्यो हो गए ?'

उधर मुसलमान इलाके से कुछ ही दूरी पर रोशबुआ की क्रिओल बस्ती की एक झोपडी मे सात साल का एक लडका अपनी मॉ से पूछ बैठा, "मुसलमान हमे क्यो मारना चाह रहे हैं ?"

उसकी मॉ के पास जवाब नही था, ऑखो मे भय था, जबकि रेमो के छोटे बच्चे रोलॉ की ऑखो मे अगर कोई भाव था तो बस हैरानी का।

उत्तर प्रात से शहर पहुँचनेवाले रास्ते बद थे। शहर मे प्रवेश करनेवाले चौराहे पर दस से अधिक गाडियो को तोडा-फोडा गया। दो बसे जला दी गई। पॉच व्यक्तियो की जाने बेरहमी से ली गई। एक आदमी जो बच पाया, उसका पूरा चेहरा तेजाब से झुलसा दिया गया था। एक दूसरा आदमी तलवार की धार से बचकर भी अपना एक हाथ गॅवाकर पुलिस थाने मे पनाह ले पाया। पेट्रोल भरी बोतल के विस्फोट से एक बच्चे की ऑखे जाती रही।

परसो हमीद ने ये खबरे अपने पडोस के लोगो से सुनी थी। वह इनायत और प्रमोद को देखता रहा था ओर जब इतने पर भी उसकी समझ मे कुछ नही आया था तो वह अपने दोनो मित्रो से पूछ बैठा था, 'यह किसकी लडाई है, जो हर गली-कूचे मे लडी जा रही है ? क्यो बेगुनाह मारे जा रहे है ? किसकी गुनाहो की सजा बच्चो और औरतो को दी जा रही है ?'

कल जब फिर से वह अपने दोनो दोस्तो के सामने था तो उसके चेहर का भाव बदल चुका था। उसके प्रश्न के तेवर और लहजे बदले हुए थे 'हम अपने लोगो के घर क्यो जलने दे रहे है ? क्यो अपने लोगो को मरने दे रहे है ? मै भी ओरो की तरह आगे क्यो नही बढ रहा ? क्या सचमुच मै डरपोक हूँ ?'

इन सवालो के साथ हमीद के जेहन मे तीन साल पहले की वह बात याद आ गई, जब आत्वानेत के सामने उसने अपने को इसी तरह के उधेडबुन मे पाया था। तब भी उसने यही कहा था, 'मै कायर हूँ, आत्वानेत। डरपोक हूँ। मजहबी ताकत से लड नही सकता।'

तब वह दूसरी तरह की बेबसी थी। उसके हौसले को बनाए रखने के लिए आत्वानेत ने उससे कहा था, 'हमीद। मैं जानती हूँ कि तुम मजहबी भेदभावो से अपने को अलग रखनेवालो मे हो। तुम अपने को इस जकडबदी मे नहीं रख सकते। हम दोनो मुसलमान और क्रिओल से कही अधिक दो प्रेमी हैं। बस, प्रमी बने रहे।'

'रह पाएँगे क्या ? इस डर और झिझक के बीच लगता हे कि हम एक-दूसरे के नही बन पाएँगे। मैं अपने लोगो से बहुत डरने लगा हूँ।'

तीन वर्ष बाद वही हमीद आज अपने आपसे पूछ बैठा, 'आज एकाएक मे अपने को इतना दिलेर कैसे पाने लगा ? हाथो मे तलवार और पेट्रोल के गेलन लिये गलियो मे क्यो दौड रहा ? क्यो ?'

यह दगा-फसाद शुरू होने के दूसरे दिन जब वह प्रमोद के घर पर था तो इनायत ने उससे यही सवाल पूछा था, 'क्रिओल मुसलमानो को खत्म करना चाह रहे है ओर मुसलमान क्रिओलो को। हमने उनका क्या बिगाडा है ? उन्होने हमारा क्या बिगाडा है ?'

आज प्रमोद ने हमीद से सवाल किया, ''क्यो अपने को इन पागलो के खेमे मे डाल रहे हो ? अभी कल तक तो तुम रेमो और गायतॉ के साथ अरब गली के रेस्तराँ मे बीयर पीते थे। तुम तीनो एक ही फुटबॉल टीम मे साथ-साथ खेलते रहे और कइ कप जीतने की खुशियॉ साथ-साथ मनाते रहे।''

प्रमोद के चुप होते ही इनायत ने बात आगे बढाई, ''एक बार जब मुसलिम स्काउट टीम के मैनेजर ने तुम्हारे घर पहुँचकर तुमसे उसकी टीम मे खेलने की मॉग की थी तो तुमने कहा था कि तुम स्पोर्ट को मजहबी रग नही दे सकते। आज जब तुम जैसे व्यक्ति को इन दोनो खूँखार पागलो के बीच खडे होकर इस कत्लेआम को रोकना चाहिए था तो तुम खुद मारने-मरने के लिए निकल पडे।''

तीनो मित्र शहर की बनारस गली के उस ठौर पर खडे थे, जहॉ रात के हमले

के बाद पूरी गली जली-अधजली लकडियो, टीनो, लोहे के टुकडो के मलबे से भरी हुई थी। अपने परिवार के साथ हमीद जब अपने गॉव लालमाटी को छोडकर शहर मे बसने आया था, तब बनारस गली उसे अपने गॉव सी सुदर नही लग पाई थी, पर वक्त के साथ पडोसी के रूप मे एक तरफ प्रमोद के परिवार और दूसरी तरफ इनायत के परिवार की आत्मीयता पाकर वह अपने गॉव की याद के उस दर्द को भूल सका था। गली के सभी युवको के बीच हमीद अगर अपनी घनिष्ठता केवल इनायत और प्रमोद से ही बढा पाया था तो इसके कुछ कारणो मे सबसे बडा कारण यह था कि तीनो साम्यवाद पर लबी बहस कर लेते थे।

पहली बार प्रमोद के घर जाने पर जब उसने उसके ऑगन मे हनुमानजी का चौतरा और लाल झडियॉ देखी थीं तो प्रमोद से पूछे बिना नही रहा था, 'यार, लेफ्टीस्ट होते हुए भी ।'

प्रमोद ने उसके वाक्य के पूरा होने से पहले कह दिया था, 'लाल झडे पर हॅसिया और हथौडा न पाकर निराश हो गए।'

इसपर तीनो मित्र हॅस पडे थे।

आज प्रमोद के मन मे आया कि वह हमीद से पूछे, 'क्यो यार, वामपथी होकर हॅसिये और हथौडे की जगह तलवार क्यो लिये फिर रहे हो?' पर वह चाहकर भी यह नहीं पूछ पाया, क्योकि दूसरी गली से पचासो नवयुवक हाथो मे लाठियॉ, तलवार और बदूके लिये सामने आ गए। इनायत द्वारा झपटकर रोकने पर भी हमीद उस हुजूम के साथ जा मिला और वे नारे लगाते हुए रोशबुआ की ओर बढ गए। अपने नारो के शोर मे हमीद इनायत का यह प्रश्न नही सुन पाया, 'क्या अपने इलाके की रखवाली से यह हमला अधिक मायने रखता है, जो तुम करने जा रहे हो?'

अगले चौबीस घटो मे दोनो पक्षो के बीच के खून-खराबे इतने बढ गए कि कुछ इलाको मे पुलिस अपनी पूरी ताकत के बावजूद असमर्थ थी। लोगो पर भूत सवार था। बदले की भावनाओ और हिसा को लोगो के भीतर से निकाल बाहर करने की कोशिशे दोनो तरफ से होती रही। कुछ भले क्रिओलो ने दौड-दौडकर क्रिओलो के क्रोध को शात करना चाहा तो कुछ भले मुसलमानो ने मुसलमानो की बढ आई नाराजगी को कम करना चाहा। कुछ धार्मिक नेताओ ने भी बहुत कोशिश की उफन रही उस हिसा को रोक लेने की, पर उस उफान को थाम पाना आसान नहीं था। पुलिस के द्वारा सख्त कदम उठाए गए, पर न तो पुलिस की गोलियो की परवाह की गई और न ही अश्रु गैस किसी को पीछे कर पाई। इमरजसी और कर्फ्यू लग जाने पर भी एक की जगह दो घर जलते रहे, जाने जाती रहीं, दुकाने लूटी जाती रही।

और जब इनायत ने हमीद की ऑखो मे हमले के बाद लौटने पर फख्र का भाव झलकते पाया तो वह चिल्ला उठा, ''तुम सरकार मे उच्च ओहदे पर हो। गुडो के साथ गुडा बन गए ?''

हमीद भी उसी बुलदी के साथ चिल्लाया, ''तुम कह रहे हो ये सारी बाते ? तुम, जो मुझे इस बात के लिए कोसते रहे हो कि मैं तुम्हारी तरह सिर से पॉव तक मुसलमान क्यो नही हूँ। तुम उन सालो की पैरवी करने लगे जो हमारी मॉ-बेटियो तक को नही बख्श रहे है। वे मेरे बाप को अस्पताल भेज सकते है तो मैं उन्हे श्मशान भेज सकता हूँ।''

''तुम लोग बख्श रहे हो क्या ?''

''तुम ऐसा कह रहे हो। क्यो ?''

''क्योकि मै अपने को एक अच्छा मुसलमान मानता हूँ। तुम्हे खुदा की मरजी के खिलाफ जाने के लिए नही छोड सकता। मुसलमान हो, मुसलमान बने रहो।''

''कमाल है। तीन साल पहले जब क्रिओल लडकी से प्यार किया था और जब उससे निकाह करना चाहा था, तब मेरे बाप ने यही स्टीरियोटाइप डायलॉग बोला था। उस समय क्रिओल को गले लगाकर मै खुदा की मरजी के खिलाफ था और आज उन क्रिओलो के नापाक इरादे को रोकने मे लगा हूँ तो भी खुदा की मरजी के खिलाफ जा रहा हूँ। कोई तो समझाए कि इन नसीहतो का क्या मतलब होता है।''

रात मे मुसलमान इलाको मे कुछ लोगो ने सभी घरो मे लोगो को सावधान और तैयार रहने की हिदायते दी। वे सभी घरो मे बोलते फिर रहे थे कि वे काफिर हमे इट का जवाब पत्थर से देने के लिए सोच रहे हैं। हम सभी को उन्हे पत्थर का जवाब लोहे से देना है।

प्रमोद ने पहली बार हमीद की ऑखो मे भय देखा। वह डर उसकी आवाज मे भी था, जब उसने प्रमोद के कधो को थामकर कहा, ''मुझे अपनी मॉ और दोनो बहनो की चिता है।''

''वे लोग मेरे घर मेरी मॉ और मेरी पत्नी के साथ हैं। क्यो चिता कर रहे हो ?''

''वे लोग मेरे घर तक आ गए तो तुम्हारे घर को भी नहीं छोडेगे।''

''उन लोगो ने अभी तक किसी हिदू के घर मे घुसने की भूल नहीं की है।''

''पर क्या उन्हे मालूम होगा कि तुम्हारा घर एक मुसलमान घर नहीं है ?''

''हनुमानजी के चौतरे की लाल झडियाँ।''

''मै उन लोगो की हिटलिस्ट मे हूँ। अगर उन्हे पता चला गया कि मेरी मॉ और बहने तुम्हारे घर मे हैं तो वे तुम्हारे घर के भीतर पहुँचकर रहेगे।''

"फिर भी, सलमा चाची और शहनाज को कुछ नही होगा।"

"इतने यकीन के साथ केसे बोल रहे हो?"

"आओ, चलकर देखो, मेरी मॉ ने उन्हे कितनी बडी सुरक्षा दी हे।"

दूसरे ही पल हमीद प्रमोद के घर अपनी मॉ और बहनो के सामने था। र देखकर उसने राहत की सॉस ली। उसकी मॉ और दोनो बहनो के माथे पर ल टीके थे।

प्रमोद ने धीरे से कहा, "अभी तक माथे पर टीका लगाए किसी औरत पर दगे-फसाद मे हाथ उठाने की चेष्टा नही हुई है।"

पूरी-की-पूरी बनारस गली रात भर आतकित रही। गली को दोनो तरफ और उससे मिलनेवाली सभी छोटी-मोटी गलियॉ भी पत्थरो, लकडियो, लोहो अ से घेरकर दाखिल होने के सारे रास्ते रोक लिये गए थे। जहॉ-तहॉ युवको की टोलि गाडियो के पुराने पहियो को जलाए हथियारो से लैस हमला बोलनेवालो की ताक थी। कुछ क्षण के लिए अपने घर के भीतर हमीद अकेले बैठा अनचाही पुरानी ब को अपने जेहन मे कौधते हुए पा रहा था।

आत्वानेत को लेकर बात चल रही थी। वह अपनी मॉ को आखिरी बार म मे लगा हुआ था। उसकी मॉ, जिसे क्रिओली बहुत कम आती थी, भोजपुरी बोलती गई थी, 'हमीद, जिद छोडो। तुम अपने मजहब से बाहर जाकर शादी बात भूल जाओ।'

'अगर खुदा एक है और हम मुसलमान उसी के बदे है तो फिर ये मुसलमान नहीं हैं, वे आखिर किसके पैदा किए हुए हैं? और जैसा तुम लोग बा बार कहते हो कि मालिक एक है, तो फिर एक ही मालिक के दो बदो मे फर्क क उस मालिक का अपमान हम नही कर रहे हैं?'

उसकी मॉ ने पहले ही से तैयार जवाब उसके सामने रख दिया था, 'रह सहन, खान-पान, रग-रूप, रीति-रिवाज वगैरह की बाते अलग-अलग होती है

'रहा करे, इससे क्या होता है। मैं दुनिया का पहला मुसलमान थोडे होउॅ जो किसी दूसरी जाति मे शादी कर रहा हूँ। यहॉ के डॉक्टर, वकील फ्रास और इग्ल जाकर शादियॉ कर लेते है और उनकी वे बीवियॉ यहॉ स्वीकार ली जाती है। मै अपने ही देश की लडकी को ब्याहना चाहता हूँ।'

'देखो हमीद। यह लडकी सिर्फ एक गैर जाति की ही नहीं है, बल्कि ए मछुए की बेटी है। लोग क्या कहेगे?'

'लोग जो चाहे, कह ले। इससे क्या?'

'और जब लोग यह कहकर तुम्हारी बहनो को ठुकरा देगे कि वे उस घर से नाता नहीं जोड सकते, जहॉ '

हमीद ने चिल्लाकर अपनी मॉ को चुप रह जाने के लिए कहा था।

अपने खयाल को अपनी मॉ से हटाकर उसने उसे आत्वानेत पर जा टिकने दिया। उस शाम आत्वानेत उसे हमेशा से अधिक सुदर प्रतीत हुई थी। उसके सॉवले रग पर गुलाबी फ्रॉक और ब्लाउज इतने फब रहे थे कि हमीद उस दिन उससे बात न करके केवल उसे निहारते रह जाना चाहता था। और शायद ऐसा ही होता, अगर आत्वानेत पूछ न बैठती, 'अपनी मॉ से बात कर पाए ?'

'मेरी मॉ भी तुम्हारी मॉ की तरह यह मानने के लिए तैयार नही है कि दो गर मजहबी एक सूत्र मे बॅध सके। वह तो यह मानकर चल रही है कि ऊपरवाला ऐस ब्याह के लिए कभी भी राजी नही होगा।'

वे दोनो मारी-रेन-दे-लापे की मूर्ति के सामने खडे नीचे पूरे पोर्ट-लुई शहर को देख रहे थे, जब हमीद ने आगे कहा था, 'हमारे प्यार को एक साल होने को आया। साल भर मे न तुम अपने माता-पिता को मना पाइ और न ही मैं।'

'तुम्हारा परिवार अगर इस बात पर अडा हुआ है कि मैं तुम्हारा मजहब कबूल करके ही तुम्हारी बीवी बन सकती हूॅ तो फिर ।'

'नही आत्वानेत। मैने तुम्हे जिस रूप मे चाहा है उसी रूप मे अपना बनाना चाहता हूॅ। मै तुमसे तुम्हारा मजहब खरीदकर अपने मजहब के कठमुल्लो को खुश नही कर सकता। मैं तुम्हे खुश देखकर खुश रहना चाहता हूॅ। अगर तुम मुझे प्यारी हो तो तुम्हारा मजहब भी मुझे प्यारा है—उतना ही जितना मेरा मजहब। और मैं यकीन करता हूॅ कि लोग यह मानकर रहेगे कि न तो आदमी-आदमी मे भेद होता है और न ही कोई मजहब पाक व नापाक होता है।'

'तुम्हे यकीन हे ?'

'मुझे यकीन हे।'

अपने इस यकीन पर हमीद को खुद यकीन नहीं था, पर वह अपने घर मे हुई कलवाली घटना से आत्वानेत को दु खी करना नहीं चाहता था। गुलाबी कपडो से और भी निखर आई उसकी उस खूबसूरती को उदासी मे नहीं बदलना चाहा था उसने।

रात मे जमात के कई लोग उसके घर आए हुए थे। जमात का सरदार ओर मसजिद का इमाम तीन घटो तक बाते करते रह गए थे। और घूम-फिरकर वही एक बात रटी जाती रही थी। वह मुसलमान होकर पाक हो जाए, फिर तो यह निकाह कबूल हो सकता है।

अत मे हमीद को बोलना ही पड गया था, 'यही शर्त आत्वानेत के परिवा और उसके गिरजाघर के पादरी की भी है। मेरे ईसाई बन जाने पर आत्वानेत के सा मेरी शादी पर उन्हे कोई आपत्ति नही होगी। आत्वानेत को वह शर्त मजूर नही है औ आप चाहते है कि मै आप लोगो की शर्त मान लूँ?'

फिर तो बात बिगडती ही चली गई थी। यहॉ तक बिगडकर रही कि हमी के घनिष्ठ मित्रो—रेमो और गायतॉ को भी पीछे हट जाना पडा। दोनो ने हमीद र कहा कि अगर उसे अपनी जान प्यारी है तो वह रोशबुआ मे कदम न रखे। प्लेन वे के कट्टरपथी मुसलमानो ने भी उसे दूसरे ढग से धमकी देते हुए कहा कि अग उसने उस क्रिओल लडकी से मिलना जारी रखा तो उस लडकी को ही ओझल क दिया जाएगा।

दोनो पक्षो की उस महीने भर की तनातनी और गरमागरमी के बाद हमीद क अपनी आखिरी चिट्ठी का जवाब आत्वानेत की ओर से इन शब्दो मे पहुँचा—

' मै नहीं चाहती कि मेरे कारण तुम्हारी मॉ जान दे बैठे। शायद तुम्हारा य कहा ही हमारे जीवन की सच्चाई है कि हम एक-दूसरे की ऑखो से दू रहकर ही एक-दूसरे के बने रहे। अब फासले को ही करीबी मान ले। वै भी, तुम तो पहली मुलाकात से आज तक हर क्षण मेरे करीब रहे हो। मे बस, यही वायदा है कि यह करीबी बनी रहेगी।'

वह हमला, जो बनारस गली मे होने वाला था, एक चाल प्रमाणित होक रहा। आक्रमण हुआ और काफी जोरदार हुआ। वह पोर्ट-लुई और रोशबुआ के बी मे एक ऐसे इलाके मे हुआ, जहॉ मुसलमानो की आबादी बहुत कम थी। लोग उ हमले के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए जब धावा बोला गया तो कुछ लोग किस तरह हिदुओ के घरो मे शरण पाकर अपने को बचा पाए, पर अपने घरो को जलने र नही बचा पाए।

भागनेवालो की आपाधापी मे हथियारो से लैस आक्रमणकारियो ने हिदू औ मुसलिम के बीच के अतर को जानने के लिए मर्दो से पतलून उतरवाए और बोल गए, 'मोत्रे नू तो पासपोर। पेसपोर्ट बताओ।'

लोगो के मन मे सुन्नत को लेकर दहशत पैदा हो गई।

बचपन मे हुई रस्म पर कई घायलो को जीवन मे पहली बार दु ख हुआ। व अपने को मुसलमान न होने का प्रमाण उन हमलावरो को नही दे पाए।

तीन व्यक्ति उस हमले मे मारे गए और लगभग पद्रह लोग घायल होक अस्पताल मे भरती हुए। घर और दुकानो को पहले लूटा गया। फिर उन्हे जलाय

गया। जब पता चला कि वह सेतक्रुआ के गुडो का काम था तो उसी दिन दिन-दहाडे जाफर की नेतागिरी मे सेतक्रुआ मे जबरदस्त आक्रमण हुआ। जफर नशीली दवाओ का धधा करनेवाला था। इलाके मे उसकी दादागिरी के कारण उसके कदरदाँ भी थे, जिससे नौजवानो के बीच उसका रोब बना रहता था। लोग उसके नाम से दहल जाते थे। इसलिए जब हमीद को पता चला कि सेतक्रुआ की मुठभेड मे वह दुश्मनो के लोलुप खजर का शिकार होकर जान गॅवा बैठा तो उसे यकीन नहीं हुआ। उसकी ऑखो ने अगारे बरसाने तब शुरू किए जब उसने जफर की लाश देखी। खजर के अनगिनत प्रहार थे उस लाश पर।

जफर की मौत के बाद टोली की अगवानी की जिम्मेदारी हमीद के कधो पर आ गई। जब प्रमोद और इनायत को इसका पता चला तो दोनो हमीद के घर पहुॅचे। वह घर मे अकेला था। उसकी मॉ-बहने अब भी प्रमोद के घर पर शरणार्थी थीं। दोना ने उसे समझाया कि वह नेतागिरी करके अपने परिवार को और भी खतरे मे डाल रहा था, पर अपने अधे क्रोध के सामने उसने किसी की नही सुनी।

इनायत ने उसे कुछ और नरमी के साथ समझाने की कोशिश की, "यह सारा कुछ जफर और गास्तो जैसे दो गुडो के एक झगडे से शुरू हुआ। वेनिस सिनेमाघर मे शुरू हुई एक तकरार आज आग की लपटो और खून की धाराओ का रूप ले चुकी है। ड्रग्स का झगडा न जाने कैसे मजहब का झगडा बन गया। जब दोनो मारे ही गए तो इस झगडे को आगे क्यो बढाया जाए? अभी भी समय है "

इनायत की बातो को अनसुनी करके हमीद बाहर आ गया। हमला बोलनेवाले उसके साथी गली मे इकट्ठे होने लगे थे। लगभग पद्रह मिनट बाद हमीद जब अपने कमरे मे अपना हथियार लेने पहुॅचा तो जल्दबाजी मे उसका हाथ रेडियोग्राम के पास बिखरे पडे रिकॉर्डो से जा टकराया। दो रिकॉर्ड फर्श पर गिर पडे, जिनमे एक चकनाचूर हो गया। दोनो रिकॉर्ड के जाकेट देखते ही अनायास उसे आत्वानेत की याद आ गई। वे क्लीफ रिचर्ड के दो रिकॉर्ड थे, जो आत्वानेत ने उसे दो साल पहले उसके जन्मदिन के मौके पर भेट किए थे। अपनी ऑखो मे उबल रही नफरत के बीच वह सोच उठा, "आत्वानेत ।'

बस, इतना ही—और वह अपने गरजते-दहाडते दोस्तो के बीच पहुॅच गया। ॲधेरा गहन होने लगा था। सौ से अधिक लोगो की उस उग्र उन्मत्त भीड को न तो पुलिस की नाकाबदी की परवाह थी और न ही अपनी जान की। छोटी उम्र के चद विद्यार्थी भी उस टोली मे शामिल थे। वे भी उतने ही उत्तेजित थे।

इस भीड की उत्तेजना से एकदम भिन्न किलोमीटर भर की दूरी की एक गली

एकदम सूनी और शात थी। घर से बाहर होने की हिम्मत किसी मे नही थी। टीन क छतवाले एक घर के भीतर आत्वानेत खिडकी से आनेवाली रोशनी मे मछलियो के चोयटे उतारने मे अपनी छोटी बहन के साथ लगी हुई थी। उसका पिता देर र मछलियाँ फँसाकर लौटा था। किराए के अपने पुराने घर से अपने इस नए घर मे आ उन लोगो का वह दूसरा महीना था।

आत्वानेत की छोटी बहन, जो बारह-तेरह साल की थी, पूछ बैठी, ''ये झग क्यो हो रहे है?''

''इसका कारण किसी को नही मालूम।''

''मुसलमान हम लोगो की तरह क्यो नही है?''

''क्योकि हम लोग उन लोगो की तरह नही है।'' बोल जाने के बा आत्वानेत को लगा कि उसे उस तरह का जवाब नही देना चाहिए था। उसने झ अपने को सुधारते हुए कहा, ''आदमी के रग-रूप अलग-अलग होते हैं, मारीज, प हम सब एक ही ईश्वर की सतान है।''

''तेरेज कह रही थी कि हमारा भगवान् अलग है।''

तभी गली मे जोरो का शोर शुरू उठा। आत्वानेत का चचेरा भाई गायतॉ दौड आया और हॉफते हुए दोनो से बोला, ''तुम लोग जल्दी से घर के भीतर चल जाओ।''

पास ही के किसी घर के शीशे टूटने की आवाज के साथ ही चीखने-चिल्ला की मिली-जुली आवाजो से दहलकर आत्वानेत और मारीज घर के भीतर दौड गई बाहर से लोहो के टकराने की आवाज के साथ गोली की आवाज भी सुनाई पडी दूसरे ही मिनट आत्वानेत ने देखा कि आग की लपट लिये एक बोतल उनके घर वे बरामदे मे आकर चकनाचूर हो गई और पेट्रोल की गध के साथ बरामदे मे देखते ही-देखते आग की लपटे भडक उठीं। कुछ लोगो की खूँखार आवाजो के साथ ऑगन मे प्रवेश होने की आहट मिली।

आत्वानेत की माँ चिल्ला उठी, ''आत्वानेत! तुम मारीज के साथ जल्दी स सहदेव चाचा के घर चली जाओ।''

उसका पिता दूसरे कमरे से हाथ मे 'ऑक्टोपस' (भोकनेवाले अपने से दो गु लबे-लबे अकुश से जुडी लकडी) के साथ सामने आकर चिल्ला उठा, ''तुम सभ यहाँ से निकल जाओ।''

एक दूसरी बोतल भीतर आकर गिरी, लपटे उठीं। बरामदे के शीशे लाठिय और तलवारो के प्रहार से झनझनाते हुए फर्श पर टुकडो मे होकर बिखरते गए। क

लोगो को उस लपटो की रोशनी मे घर के भीतर लपकते देख आत्वानेत अपनी माँ और बहन को पीछे के दरवाजे से पडोस मे भेजकर अपने पिता के सामने आ खडी हुइ, ''नही पापा।''

उसके पिता की आँखो से चिनगारियाँ छूट उठीं। वह चिल्ला उठा, ''तुम जाओ यहाँ से।''

''नही, वे लोग बहुत हैं। आप उनका सामना नही कर पाएँगे।''

''मैं उन्हे अपना घर लूटने नहीं दूँगा।''

''नही पापा।''

पर तब तक दस-बारह लोग आँखो मे खून लिये घर के भीतर आ ही गए। आत्वानेत का पिता अपने हाथ के 'लाफ्वीन' को भाले की तरह थामे आगे के दो व्यक्तियो पर झपटा, पर उनमे से एक के हाथ मे बदूक देखकर वह ठिठक गया। घर के सारे सामान तोडे-फोडे जा रहे थे। तभी आत्वानेत की नजर हमीद पर जा पडी, जिसके एक हाथ मे लाठी और दूसरे मे लबी तलवार थी। आँखो मे हैरत लिये ठिठक गए हमीद को पीछे हटाकर बदूकधारी आगे बढा। आत्वानेत के बाप ने उस पर अकुश से प्रहार करना चाहा, पर तभी आत्वानेत चिल्लाती हुई उसके आगे आ गई। अकुश आगे बढता या बदूक से गोली चल पाती, इससे पहले हमीद दोनो हथियारधारियो के बीच आ गया। आत्वानेत की आँखो से क्षण भर आँखे मिलाकर उसने अपने सामने के बदूकधारी से बाते करनी चाही। तभी एकाएक बरामदे से एक दूसरे बदूकधारी की बदूक दहाड उठी, पर गोली की नली से निकलने से पहले उसके निशाने के आगे कोई दूसरा ही कवच बनकर आ गया।

आत्वानेत दहाड मारती हमीद को पीछे से बाँहो मे थामे घुटनो पर आ गई।

गोली चलानेवाले के हाथ से बदूक छूटकर फर्श पर गिर पडी। हमला बोलनेवाले और जिनपर हमला हुआ—दोनो पक्ष अवाक् रह गए। धू-धू करती लपटो के बीच सन्नाटा छा गया। उधर रात के अँधेरे मे कुछ ही दूरी पर शहर की गलियो मे लाठी-तलवारे चलती रहीं, खून-आँसू बहते रहे और मजहब कुर्बानी लेता रहा। शहर से हर गाँव मे लोग चद दिनो मे आनेवाली देश की आजादी का और एक राष्ट्र तथा एक ध्वज के नीचे खडे होने का सपना देख रहे थे।

□

# विकल्प

उसके गॉव के पश्चिमी भाग मे था वह स्थान, जहॉ वह खडी थी। घुटनो त बढ आई घासवाली वह पगडडी उसके सामने से सरकती हुई दूर तक निकल गई और पहाड के पिछवाडे मे ओझल हो गई थी। उस पहले अवसर पर उसने अ पति से, अपने सास-ससुर से अलग इसी ठौर पर, अनुरोध किया था कि वह अप उस आदत को छोड दे। गाय के लिए गन्ने के अगौरे की पुलियॉ बटोर चुकने के ब वह यहीं आ बैठी थी और उसकी बगल के पत्थर पर बैठे रजीत ने उसके दोनो ह को अपने हाथो मे ले लिया था। सुरधनी ने उसकी ऑखो मे झॉका था। उस लत छोड देने के वायदे की चाह उन ऑखो मे अवश्य थी, पर उसके होठो के बीच वह बाहर नही आ पाया था। और सुरधनी अपने पति की उस मुसकान से आश्वा सा पाकर चली गई थी। तराई की घनी घास के फूलो को हवा के साथ हिलोरे देखती हुई उसने अपने कानो मे हवा की सरसराहट के साथ अतीत को बोलने दि

'हमारी एक बेहतर जिदगी बन जाए—बस, इसीलिए ऐसा करता हूँ धानी।'

यह एक बार की कही हुई बात नही थी। घर पर सास-ससुर के बीच सुरध ने रजीत के सामने वह बात कभी नहीं उठाई थी। पहली बार जब उसने उससे अनुरोध किया था तो दोनो की शादी के आठ महीने बीत चुके थे और वह पॉच मह का गर्भ लिये हुई थी। गन्ने की कटाई के बाद उस दोपहरी भरी धूप मे बिना व खेतो के गन्ने के श्वेत-बैगनी फूलो से हौसला पाकर सुरधनी ने हिम्मत की

'मगली भौजी बता रही थी कि उसका जेठ इसी लत की खातिर '

उसकी उस बात को बीच मे काटते हुए रजीत कह गया था, 'खेतो डालनेवाली दवा खाकर जान दे बैठा था। तुम मुझे भी उसी की तरह कायर समझ हो क्या ?'

सवाल इतनी बुलदी के साथ किया गया था कि सुरधनी के आगे उस मु पर बात करने की हिम्मत महीने भर नही हो पाई थी।

नीचे की उस घाटी मे जहॉ-तहॉ देश के छोटे खेतिहर अपने सब्जियो के खे

मे जुटे दिखाई पड रहे थे। कही गाय पालनेवाली औरते घास काटने मे लगी हुई थीं। आज सुरधनी उनकी बगल मे नही थी, क्योकि आज उसे अपने पॉच वर्षीय बच्चे का दाखिला प्राइमरी स्कूल मे कराना था। ढाई बजे वह दोबारा गॉव के सरकारी स्कूल गई थी और छुट्टी के बाद अपने बेटे सजू के साथ घर लौटकर घटे भर बाद उसे साथ लिये इधर आ गई थी।

शाम को मगली के घर से अपने ससुर के लिए अगियाखर की पत्तियॉ लेकर ही वह इधर आई थी। मन को सुकून दे जानेवाले इस ठौर पर वह जिस पत्थर पर बैठी थी, वहॉ की धूप उस भारी ठड के एहसास को मिटा चुकी थी। घाटी के बाद एक ओर मुडिया पहाड अपना प्रभुत्व जताते दिख रहा था तो दूसरी ओर पोर्ट-लुई के बदरगाह का एक हिस्सा क्रेव-केर गॉव की आड से झॉकता दिखाई पड रहा था। क्रेव-केर ही तो वह गॉव था, जहॉ से उसकी अपनी कहानी का वह हिस्सा शुरू हुआ था, जिसमे उसने बहुत कुछ पाकर बहुत कुछ खोया था। जब वह कहानी शुरू हुई थी तो रजीत खेतो से जुडा हुआ था। अपने बाप के साथ कुम्हडे और खीरे के बीज के लिए सुरधनी के चाचा के यहॉ आया हुआ था। तब घाटी के घर इस तरह के नही थे, जैसे सूर्य की अतिम किरणो की चमक मे वे नजर आ रहे थे। उसके अपने गॉव मे सूरज पहाडियो के कारण कुछ पहले ही ओझल हो जाता था। सुरधनी से कुछ ही दूरी पर सजू तितलियो के पीछे इधर-से-उधर दौड रहा था।

पर अभी उसके ओझल होने मे समय था। वह सीमेट के उन घरो को, जो लगभग दो सौ साठ किलोमीटर प्रति घटेवाले 'केरौल' तूफान के बाद एक-एक करके खडे होते गए थे, देखकर भी नहीं देख रही थी। उनकी जगह उसे अपने गॉव के वे घर दिखाई पड रहे थे, जो या तो टीन के छाजन लिये हुए थे या गन्ने के सूखे पत्तो के छप्पर। टीन के घर तो यही कोई छह-सात परिवारो के ही थे, जो अदरक तथा अनन्नास की खेती करके कही-से-कही पहुँच गए थे। गॉव के बाकी सभी घर लगभग एक ही जैसी दीवार और छप्पर के थे। उन्ही घरो के बीच से सुरधनी की ऑखो के सामने फुलवा पहाडी का अपना घर झिलमिला गया। उसका पिता फूल उगाता और बेचता था। शहर के बाजार मे उन लोगो की फूलो की एक छोटी दुकान थी। उनका परिवार आठ जनो का बडा परिवार था और कमानेवाला एक। पॉच बहनो के बीच एक भाई था, जो पहले बच्चे के समय से हर बच्चे के जन्म पर प्रतीक्षित रहकर एकदम बाद मे आया। उस घर मे रजीत के प्रथम प्रवेश के समय जब सुरधनी सत्रह वर्ष पूरा कर रही थी तो पकज दो साल का था और घर की बडी बेटी बीस वर्ष की थी। गॉव के मनोहर अहीर के बेटे के कारण सुरधनी की बडी बहन उसे देखने

पहुँचे परिवारो के सामने कभी आई ही नहीं। पिछली बार सब्जियो के बीज के लिए पहुँचे रजीत के सामने जब वह आ गई थी तो सुरधनी की माँ और पिता दोनो को यह विश्वास हो चुका था कि अमृता के हाथ अब पीले होकर रहेगे, पर वह विश्वास महज कुछ दिनो तक का ही था, क्योकि रजीत के परिवारवालो के पास से यह तकाजा हुआ कि उन लोगो ने अमृता को नही बल्कि सुरधनी को अपने घर की बहू बनाना निश्चित किया है। अपने माँ-बाप की तरह जब सुरधनी भी द्विविधा मे पड कर न तो 'हाँ' बोल पाने की स्थिति मे अपने को पा रही थी और न ही 'नही', तभी अमृता उसके गले मे बाँहे डालकर बोली थी, 'मान जा, धानी।'

'तुम बडी हो, दीदी। तुम्हारी शादी पहले होनी चाहिए।'

अमृता हँस पडी थी। बोली थी, 'मैं शादी के लिए नहीं बनी हूँ।'

उसने 'बनी' शब्द का उच्चारण इस ढग से किया था कि सुरधनी को लगा था कि वह किसी खिलौने की बात कर गई हो। पर नही। सुरधनी को तो कुछ वर्ष बाद ही इस बात की अनुभूति हुई कि खिलौना अमृता नही थी, बल्कि खुद वह थी। अमृता ने तो सारे रीति-रिवाजो को तोडने की हिम्मत की थी। अपने को धोखा देनेवाले के बच्चे को उसने जनमने ही नहीं दिया और न ही किसी मर्द के सहारे के बिना अपने को अधूरी मानने के लिए तैयार हुई। आज वह सरकार मे नौकरी करके अपने पूरे परिवार का पालन-पोषण एक माँ और एक बाप की तरह कर रही है। अब इधर कुछ दिनो से उसी की बदौलत सुरधनी की दूसरी बहन भी म्यूनिसिपेलिटी मे टाइपिस्ट है।

अपने गाँव की ओर देखती हुई सुरधनी अपने आपसे पूछ बैठी, 'आखिर मै रजीत के बारे मे सोचते-सोचते अपनी बडी बहन के बारे मे क्यो सोच बैठी? क्या इसलिए कि परसो मिलने पर उसने मुझसे यह कहा था कि जब पडोस का गणेश उसे उतना महत्त्व देता है तो फिर वह उसकी माँग स्वीकार करके उसकी क्यो नही बन जाती?'

पर इस प्रश्न का उत्तर तो वह अपनी बडी बहन को उसी समय दे चुकी थी, 'तुम जैसा साहस सभी औरतो मे नहीं होता है, दीदी। और फिर मेरी बच्ची, मेरे सास-ससुर ?'

'तुम्हारे सास-ससुर आज है, कल नहीं रहेगे। अपने बच्चे के भविष्य का सोचो। जिस खेल को तुम खामोशी साधे खेले जा रही हो, उसमे हार-ही-हार है।'

'और जिस दाँव की बात तुम कर ही हो, उसमे जीत-ही-जीत हो, इसकी क्या गारटी है? शादी करके जीत की सारी उम्मीदो के बाद भी हार खानी पडी। मेरा

पति तो दॉव पर दॉव हारकर भी मुझसे कम ही हारा, मुक्ति ले ली—और में हूँ कि बदिनी रह गई। और तुम ? तुम मुझे अब इससे भी बडे बधन मे बँध जाने की राय दे रही हो ?'

'मैं रिश्ते की बात नही कर रही हूँ, एकाकीपन तोडने की बात कर रही हूँ।'

'तुम अपने एकाकीपन को तोड पाई ?'

उसक इस प्रश्न का कोई उत्तर उसकी बडी बहन ने नही दिया था। सुरधनी अपने दिमाग से अपनी बडी बहन के खयाल को हटाकर रजीत के बारे मे सोचने लगी। रजीत के साथ उसके साढे तीन वर्ष तगहाली मे भी खुशियो के दिनो की तरह बहुत जल्दी से बीत गए थे। पर इधर रजीत की मृत्यु के बाद के ढाई साल युग से भी लबे थे। सुरधनी सोच उठी—कितना अतर था उसकी बडी बहन के खयालात और उसकी अपनी विचारधाराओ मे। उसकी बहन उस अधूरेपन मे सपूर्णता की खुशी और इधर उसके अपने अधूरेपन की वह टीस। उसके बच्चे के जन्म पर रजीत ने उससे कहा था, 'अब अगर मै नही भी रहा तो तुम अपने को अकेली नही पाओगी। मेरा बेटा तुम्हे हमेशा एक मर्द का सरक्षण देगा।'

सुरधनी को हॅसी आ गई। उसने अपने आपसे पूछा, 'रजीत के जीवन-काल मे मै उसके सरक्षण मे थी ? उसका सबसे बडा साथी तो उसका जुनून था—रातोरात धनी बन जाने का जुनून। कभी-कभी तो आधी रात मे ही नीद मे वह बडबडा उठता—तुम देखना दानी। एक दिन राजमन के आलीशान मकान की तरह हमारा भी मकान होगा, कार होगी, नौकरानी होगी। लोग तुम्हे 'मालकिन' कहेगे।''

वह सोच उठी। साढे तीन साल एक छत के नीचे रहकर, पति-पत्नी की तरह जीकर भी जब वह अपने बीच सान्निध्य की इच्छा रखकर भी उसे नहीं पा सकी थी, तो फिर अब इस एकाकीपन मे वह किस आत्मीय रिश्ते की चाह अपने मे लिये हुइ थी ? सास-ससुर उसे अपनी बेटी की तरह चाहते थे, उसका अपना सजू उसके हृदय का टुकडा था, तो फिर अमृता किस एकाकीपन की बात कर गई थी ?

उस दिन गणेश ने अपनी लोरी रोककर सुरधनी और मगली के सिर के बोझ को अपनी लोरी मे रख लिया था। दूसरे दिन मगली ने उससे कहा था, 'धानी। हर आदमी खून-पसीना एक करके, दिमाग लडाकर अपनी जिदगी को बेहतर बनाने मे जूझता रहता है। गणेश की बन जाने से तुम्हारे और सजू, मनोज के दिन भी इस बदतर से बदलकर बेहतर हो जाएँगे।'

और सुरधनी मन-ही-मन कह उठी थी, 'मेरा पति भी तो जिदगी भर यही चाहता रहा। हमारी जिदगी को बेहतर बनाने के लिए अपनी कमाई के पेसे ताश के

खेल से लेकर घोडो के पीछे तक गॅवाता रहा था। उसका अपना ससुर गॉव की सभा का प्रधान था। जब पहली बार बाजार से मिले सब्जियो के सारे पैसे पोर्ट-लुई की घुडदौड मे घोडो पर रजीत हार आया था तो उसने बेटे से कहा था, 'सारी कमाई घोडो को खिला आए। रातोरात धनवान् बन जाने का सपना मत देखो, रजीत। मैंने इस गॉव और दूसरे गॉवो के कई लोगो को जुए के पीछे तबाह होते देखा है।' उसके पिता को रजीत के शहर के चीनी क्लबो मे ताश और दूसरे जुएवाले खेल की जानकारी नही थी। यह बात तो मगली ने अपने बेटे से सुनकर सिर्फ सुरधनी को ही बताई थी

अपने पिता की नसीहत का जवाब रजीत ने इस शब्दो मे दिया था, 'घोडो पर दॉव लगाता हूँ लॉटरी खरीदकर। लॉटरी खरीदना जुआ कैसे हो सकता है?'

सुरधनी ने अपने ससुर को एकाएक अधिक गभीर हो जाते देखा था।

'हॉ बेटे, लॉटरी खेलना जुआ नही, क्योकि वह सरकार की इजाजत से होता है। अजीब बात हुई, जुआ जब कानूनी होता है तो जुआ नही होता। वह तो बस सरकार द्वारा प्रमाणित खेल मे भाग लेने की बस एक विवशता होती है।'

'मैं गॉजा और शराब नही पीता हूँ, पापा।'

'गॉजा और शराब पीनेवाले ता अपने शरीर को नुकसान पहुँचाते है, अपने भविष्य को बिगाडते है, पर जुआ खेलनेवाला तो अपने मॉ-बाप, बाल-बच्चे और पूरे समाज को तबाह कर जाता है। मै तुमसे बहुत पहले से घुडदौड मे आता-जाता रहा हूँ। अपनी ऑखो से गोरे सचालको को दर्जनो बैगो मे लॉटरी के रूप मे कागज के टुकडो के साथ आते देखा है, पर जब घुडदौड के बाद वे लौटते हैं तो उन बैगो मे कागज के बदले नोट और सिक्के भरे रहते थे। इस आदत से बाज आ जाओ।'

सुरधनी को वह दिन भी याद है, जब रजीत अपनी कलाई घडी तक बेचकर उसे चीनी क्लब मे हार आया था। उस शाम उसके पास बस के किराए तक के लिए पैसा नही बचा था और वह पोर्ट-लुई से नूवेल-देकूवेर्त पैदल आया था—दस बजे रात मे।

सुरधनी ने अपने ससुर को पहली बार बच्चो की तरह गिडगिडाते हुए पाया था, 'यह क्या कर रहे हो, बेटे?'

तब रात अपनी समाप्ति पर थी, जब रजीत को बार-बार करवटे बदलते पाकर सुरधनी ने कहा था, 'पूरे घर के साथ-साथ अपनी भी नीद हराम किए बैठे हो। हर महीने अगर इसी प्रकार तीन-चौथाई कमाई दॉव पर जाती रहेगी तो हमारे बच्चे का भविष्य क्या होगा?'

'तुम्हारे और उसी के भविष्य के लिए तो यह सबकुछ करना पड रहा है।'

'सौ हारकर बीस जीतते हो और लोभ बनाए हुए हो।'

'बहुत जल्द वह बडी जीत होकर रहेगी।'

'तीन साल से यही सुनती आ रही हूँ।'

'पुजारीजी ने कहा था न कि हमारा लडका होगा। हुआ न ? अभी उसी दिन उसने कहा था कि अगले सप्ताह से शुरू होनेवाले देव पक्ष मे दो और पॉच मेरे शुभ अक होगे। मैने दो और पॉच नबर घोडे पर बारह सौ रुपए जीते थे। मैंने तो दॉव पर सिर्फ तीन सौ लगाया था। अगर बारह सौ लगाता तो बारह हजार हाथ आता।'

'तो तुम्हे अब भी विश्वास है कि पुजारीजी की भविष्यवाणी सच होकर रहेगी ?'

'भविष्यवाणी नही, ज्योतिष की बात सच होकर रहेगी। मेरा नछत्तर जागेगा और मै अपने जीवन की सबसे बडी जीत हासिल करके रहूँगा।'

'इस बुरी आदत को छोड दो। अब तक बहुत हार चुके हो।'

'दॉव लगानेवाला हारता है और जो हारता है, वही जीतता है। हमजा चाचा के बेटे ने पिछले महीने दो लाख रुपए जीते थे। रामबरन नाई फुटबॉल पूल मे पॉच लाख जीतकर रहा। मेरी भी बारी आएगी और तुम्हे इस तगहाली से निकालकर रानी बना दूँगा।'

अपने घर से मील भर की दूरी पर बैठी सामने की घाटी को देखती हुई सुरधनी के जेहन मे ये बीते हुए क्षण अपने आप नहीं मचल उठे थे। जो खयाल हमेशा अपने आप आ जाते थे, उन्हे आज सुरधनी ने खुद अपने भीतर सजीव किया था। कल शाम जब गणेश उसके ससुर की दवाइयॉ छोडने आया था तो ओरियानी के नीचे धीरे से सुरधनी से कहा था, 'तुमसे बहुत जरूरी बात करनी है। कल शाम मुझसे मिलो।'

जगह बताने की जरूरत नही थी। एक ही तो जगह थी, जहॉ दोनो सप्ताह मे दो-तीन बार जरूर मिल लिया करते थे। घास लेकर लौटती गॉव की औरते वहॉ ठहरकर विश्राम करती थीं। पिछले सप्ताह शाम के वक्त जब अस्त हो रहे सूर्य के समय सामने के पहाड की परछाई वहॉ की हरियाली पर पसरी हुई थी तो गणेश ने भी तो उसी तरह के शब्द कहे थे, जो सुरधनी का पति कहा करता था। गणेश लगभग उसी स्वर मे बोला था, 'तुम बहुत जूझ चुकीं इस अभाव भरी जिदगी से। मैं तुम्हे खुशहाली की जिदगी देना चाहता हूँ। मेरे घरवाले तैयार हैं। तुम्हारे सास-ससुर को भी कोई आपत्ति नही होगी।'

उसका वैसा कहना पहली बार नही था, पर हॉ, सुरधनी के सास-ससुर का उल्लेख उसने पहली बार किया था।

पहाड के पीछे सूरज के जाते ही धूप ओझल हो गई और ठड का एहसास हुआ उसे। उसने सिर उठाकर अपनी दाई ओर की पगडडी को देखा। वह सुनसान थी। वह जिसकी प्रतीक्षा कर रही थी उसकी जगह मगली अपने सिर पर घास का बोझ लिये सामने आ गई। उसके साथ की दूसरी औरते उस दूसरे रास्ते से गॉव की ओर बढ गई थीं। अपने सिर का बोझ सुरधनी की मदद से नीचे उतारने के बाद मगली ने तितलियो के पीछे मस्त सजू को आवाज देकर पास बुलाया। सुरधनी ने मगली की ओर देखा। फिर जैसे कि बहुत पहले से सोची हुई बात को मगली के सामने रखती हुई बोली, 'तुम कुछ भी बोलो भौजी, रजीत ने मेरे ही कारण आत्महत्या की।''

मगली ने अपने खोयचे से लाल चीनी अमरूद निकालकर पास आ गए सजू की ओर बढाकर कहा, ''लो, अमरूद खाओ।''

''अगर मै अपने मगलसूत्र का टूट गया अकुश बनाने के लिए उसे न देती तो वह नौबत नही आती।''

''इन ढाई वर्षो मे यह बात तुम दस से ज्यादा बार कह चुकी हो यह और मै भी दसवीं बार तुमसे कह रही हूॅ कि अगर तुम उसे वह मगलसूत्र सुनार के पास ले जाने के लिए न भी देती तो एक-न-एक दिन वह उसे दॉव पर लगाकर ही दम लेता।''

मगली बोलती गई और सुरधनी अतीत की उस कई बार देखती रहनेवाली झलकी को फिर से देखने लगी।

उसकी शादी का दूसरा सप्ताह था और उस रात की वह आत्मीयता उससे कभी भुलाई नही गई। प्यार से पहले रजीत ने उसे अपने बचपन की बाते बताई थी और उस लबे प्यार के बाद बोला था, 'मैं तुम्हे भी धनराज की पत्नी की तरह नई-नई साडियों नए-नए गहनो मे देखना चाहता हूॅ। मैं अपने ऑगन मे भी मोटर कार का सपना देखता हूॅ। धनराज स्कूल मे मुझे कभी पार नहीं कर पाया, हमेशा पढाई मे पीछे रहा। पैसे के बल पर वह पढने के लिए शहर जाने लगा और मै पैसे के अभाव मे पीछे रह गया उसे सरकार मे अच्छी-खासी नौकरी मिल गई और मुझे कही चपरासी की भी नौकरी नहीं मिल पाई। वह मुझसे हमेशा बोलता रहता था कि वह बहुत ही सुदर लडकी से शादी करेगा, पर यहॉ मात खा गया। तुम उसकी पत्नी से कई गुना अधिक सुदर निकली। गॉव के लोग इलाके की सबसे सुदर दुलहनिया कहते है तुम्हे। मै अपनी दुलहनिया को हमेशा दुल्हन के रूप मे देखना चाहता हूॅ—गॉव मे सबसे अधिक सजी-धजी। देख लेना, मैं अपने इस सपने को सच करके रहूॅगा।'

वह मदहोशी की रात थी, सुरधनी के अपने जीवन की सबसे निराली रात। बाहर की बरसात से पैदा हो आई ठड के कारण दोनो मे अगारो की गरमी की चाहत पैदा हो आई थी। उस मधुर रात मे वे दो न रहकर एक हो गए थे।

मदहोशी टूटने पर जब सुरधनी ने रजीत के कान मे धीरे से कहा था—मैं रसोइ मे जा रही हूँ—तो रजीत ने ऑखे मूँदे ही पूछ लिया था, 'क्या सुबह हो गई ?'

'बहुत पहले।'

और ऑखे खुलने पर रजीत चौककर चारपाई पर उठकर बैठ गया था। खिडकी से झॉकते सूरज को देखकर उसने कहा था, 'अरे, सूरज इतना अदर आ गया।'

और यह बोलकर देर से खेतो के लिए निकलने लगा था वह, 'मैं जब काम पर जाता हूँ तो अपना दिल घर पर छोडकर जाता हूँ।'

मगली अपनी जगह से उठती हुई बोली, "तुम इतजार करो, मैं चलती हूँ।"

सुरधनी ने सहारा देकर घास के बोझ को उसके सिर पर के बिट्ठे पर रख दिया। मगली के चले जाने पर वह फिर से खयालो मे खो गई। इस बार उसके मन-मस्तिष्क मे रजीत नही बल्कि गणेश चिपक गया था। वह सुरधनी के पास सबसे पहले सहानुभूति लिये पहुँचा था। फिर उसने सुरधनी को उसका सबसे बडा हमदर्द होने का एहसास दिया। आत्मीयता बढी और वह दोस्त बन गया। और उस लबी भूमिका के बाद एक दिन अचानक वह प्रेमी का रूप लिये सामने आ गया। और अब इधर कुछ दिनो से सुरधनी अपने आपसे पूछती आ रही थी—इससे आगे क्या होना है ? पिछली बार जाते हुए गणेश ने सुरधनी से कहा था, 'गॉव की सभा की सहमति हमे मिलकर रहेगी।'

रात भर सुरधनी अपने आपसे पूछती रह गइ थी—कैसी सहमति ? किस बात की सहमति ? मेरे मालिक बनने की ?

शाम का धुँधलापन छाने लगा था, जब गणेश सामन से आता हुआ दिखाई पडा। बहुत पहले एक बार सुरधनी ने उससे पूछ लिया था, 'तुम हमेशा धुँधलके मे मुझसे मिलने क्यो आते हो ? लोग तुम्हे मेरे साथ न देख पाएँ, इसलिए ?'

'नही धानी, ऐसी बात नहीं है।'

तो फिर क्या बात थी—यह उसने सुरधनी को नही बताया।

गणेश जब पास आ गया तो सुरधनी बोली, "मेने तुमसे कहा था कि कुछ पहले आ जाना, घर लौटकर मुझे खाना तैयार करना है।"

"मै घटा भर पहले आ जाता, पर क्या करूँ ? रामलाल चाचा के खेत मे आलू उठाकर मार्केटिग बोर्ड छोडने जाना पड गया।"

सजू पर नजर पडते ही गणेश कह उठा, "अब तुम्हे मुझसे अकेले मे डर लगने लगा है क्या?"

दोनो के बीच एक लबी चुप्पी रही। जब गणेश भी देर तक चुप्पी साधे रहा तो सुरधनी ने कहा, "तुम मुझसे कोई जरूरी बात करने वाले थे।"

"हाँ, मगली भौजी कहती है कि तुम उस घर मे शायद ही कभी दोनो वक्त खाना खा पाती हो। इधर भी अपने सास-ससुर और बच्चे को खिलाने के बाद जो बचता है, उससे तुम पेट भर लिया करती हो।"

वह फिर चुप हो गया। उस खामोशी को लबा पाकर सुरधनी बोली, "यही वह जरूरी बात थी?"

"नही।"

"तो फिर?"

गणेश ने कहना चाहा, 'तुम्हारा यह वर्तमान तुम्हारा नही है, धानी। वह तुम्हारे अतीत का वर्तमान है। तुम मेरी बात मान लोगी तो कल अपना एक उज्ज्वल भविष्य होगा।' पर कह न सका। उसने पतलून की जेब से एक छोटी सी डिबिया निकालकर सुरधनी की ओर बढा दी।

सुरधनी पूछ बैठी, "क्या है?"

"वह जरूरी बात जो तुमसे कहनी थी। इसे थामो तो सही।"

"पर यह है क्या?"

"खोलकर देखो।"

सुरधनी ने उसके हाथ से डिबिया लेकर उसे खोला। उसे देखकर वह इस तरह दहल गई जैसे डिबिया के भीतर से किसी बिच्छू ने उसे डक मारने की कोशिश की हो। वह तुरत नही बोल सकी। पहले साँस ली, फिर गणेश को देखा और तब हैरानी तथा दर्द मिले स्वर मे पूछ बैठी, "यह कहाँ से मिला तुम्हे?"

"जिस आदमी के हाथो इसे हारा गया था, उससे दोगुने दाम देकर ला रहा हूँ।"

"पर क्यो?"

"क्योकि यह तुम्हारा है।"

"मेरा था।"

"अब फिर से तुम्हारा है।"

सुरधनी ने अपने हाथ के मगलसूत्र को डिबिया मे रखा और गणेश को लौटाकर कहा, "नहीं, यह अब मेरा नही है।"

‘‘तुम्हे देकर मै तुम्हे अपना बनाना चाहता हूँ।’’

‘ तू ही तो एक दोस्त था मेरा।’’

‘‘था ?’’

बिना कुछ कहे सुरधनी अपनी जगह से उठी और अपने बेटे की ओर बढ गई।

गणेश जहॉ था वही से पुकार उठा, ‘‘धानी।’’

‘‘          ’’

‘‘धानी। मेरी बात सुनो।’’

सुरधनी अपने बेटे का हाथ थामकर गॉव लौटनेवाली पगडडी पर चल पडी। पीछे से गणेश ने फिर आवाज दी, ‘‘ठहरो धानी।’’

सुरधनी ने चिल्लाकर उससे कहना चाहा, ‘अब तो सजू ही मेरा एकमात्र दोस्त है।’

पर कह नही पाई।

गणेश अपनी जगह पर खडा रहा और मॉ-बेटे को जाते हुए देखता रहा। पहाडो के पीछे सूरज समदर की गहराई मे डूब चुका था।



# फैसला

जासूस ने आकर बादशाह औरगजेब को सलाम पेश किया और फाइल उस
आगे बढा दी।

फाइल पर एक सरसरी नजर दौडाकर बादशाह ने वजीर की ओर देखा, ''य
क्या हो रहा है इस मुल्क मे ?''

''बादशाह सलामत। आपने इन लोगो को बहुत आजादी दे रखी है।''

''क्या इसी वजह से लोग अब खुलेआम हमारे खिलाफ बोलने ल
है ?''

''पूरी रियाया तो ऐसा नही करती।''

''आखिर यह आदमी है कौन, जो लोगो को हमारे खिलाफ भडकाता फि
रहा है ?''

जासूस थोडा सा आगे आकर कमर झुकाए हुए बोला, ''बादशाह सलाम
यह आदमी कभी अखबार निकालता था। अखबार मे चूँकि हुकूमत के खिलाफ ब
लिखी जाती थीं, इसलिए अखबार को जब्त कर लिया गया। अब यह आदमी लो
के बीच पहुँच-पहुँचकर लोगो को भडका रहा है।''

''लोग उसे सुनते हैं ?''

''बडी तादाद मे।''

''तब तो यह आदमी हुकूमत के लिए खतरनाक है।''

''आपके हुक्म की देर है और हम उसे ।''

''उस आदमी को मेरे सामने पेश किया जाए।''

दूसरे ही दिन सिपाही उस आदमी को पकडकर बादशाह के सामने ले आ
बादशाह ने डॉटकर कहा, ''मेरी पीठ के पीछे तुम जो बोलते रहते हो, क्या उसे
सामने भी बोल सकते हो ?''

''जरूर बोल सकता हूँ।''

''तुम्हारी यह हिम्मत। खैर, बोलो, क्या बोलना है ?''

"आपकी हुकूमत मे बेइनसाफी हो रही है। गरीबो का जीना हराम हो गया है। दुकानदार उन्हे लूट रहे है। महँगाई बढती जा रही है। नौकरियाँ सिर्फ बडे लोगो के रिश्तेदारो को मिल रही है। बेकारी बढ रही है। भूख फैल रही है। इस देश की हुकूमत ऐयाशी है। उसे अपनी जनता की परवाह नहीं है।"

यह सुनकर बादशाह आगबबूला हो उठा। अपनी जगह पर खडे होकर उसने कहा, "यह क्या बकवास कर रहा है, वजीर ?"

वजीर ने मुजरिम को डॉटकर कहा, "तुम्हारी इतनी हिम्मत! बादशाह के सामने उनके खिलाफ बोल रहे हो ?"

"मुल्क मे जो धनी है, वह अधिक धनी बनता जा रहा है और जो गरीब है, वह और अधिक गरीब होता जा रहा है, क्योकि इस मुल्क की हुकूमत एक जल्लाद के हाथ मे है।" यह कहकर उसने वजीर की ओर देखा।

वजीर चिल्ला उठा, "यह हरामी है।"

बादशाह गुस्से से कॉप उठा। उसने जल्लाद को बुलवाकर हुक्म दिया, "इस हरामी की जबान काट ली जाए।"

देखते-ही-देखते उस आदमी की जबान काट ली गई।

इसके बाद बादशाह ने तनकर कहा, "अब बोलो, क्या बोलना हे ? अब बोलते क्यो नही, चुप क्यो हो ? कहॉ गई तुम्हारी हिम्मत ? बोलो, क्या बोलना है ? सुना तुमने ? अब बोलते क्यो नही ? वजीर, आखिर यह मेरे आदेश का पालन क्यो नही कर रहा है ? गूँगा हो गया क्या यह हरामी ?"

वजीर थोडा सा आगे आया। बादशाह के सामने झुककर बोला, "आलमपनाह! हरामियो की जीभ काट लिये जाने के बाद वे गूँगे नहीं, बल्कि बहरे हो जाते हैं।"

"तो यह हरामी नहीं ?"

"हरामी है जहॉपनाह! तभी तो सुन नहीं पा रहा है।"

"ता फिर हमने इसे गद्दारोवाली सजा क्यो नहीं दी ?"

"गद्दारोवाली भी दी जा सकती है।"

"क्या सजा होती है वह ?"

"इससे कहा जाए कि यह सात बार 'आलमपनाह जिदाबाद' बोले। अगर नही बोलता है तो गद्दार माना जाएगा।"

"तो इसे कहो कि यह सात बार 'आलमपनाह जिदाबाद' का नारा लगाए।"

लेकिन जब उस जीभ कटे से एक भी शब्द बोला नही गया तो वजीर ने ध से बादशाह से कहा, ''आलमपनाह ! यह आपकी जय-जयकार करने के लिए तैय नही है। गद्दारी है यह।''

''तो इसे तत्काल गद्दारोवाली सजा दी जाए।''

वजीर ने तुरत आदेश दिया, ''इस गद्दार को फॉसी के फदे पर झुला दि जाए।''

[

# रॉबिन हुड की मौत

लोग मिलते रहते है, एक से अनेक बार—कभी गली मे, कभी बाजार मे, कभी बस मे तो कभी मत्री के गलियारे मे। कभी एक ही मुलाकात मे दो व्यक्ति हमेशा के लिए मित्र बन जाते हैं। कभी बीसो बार मिलकर भी केवल जाने-पहचाने रह जाते हैं। यो कहे कि कैदखाने के गलियारे मे मिल थे। मिले भी नहीं, बल्कि एक-दूसरे से टकराए थे। एक ने दूसरे को देखा था—ऑखो मे एक-दूसरे के प्रति शिकायत लिये कि क्यो टकराए मुझसे ? देखकर नहीं चल सकते। या—ऑखे नहीं हैं तुम्हारे पास ? पर किसी-न-किसी से कुछ भी नहीं कहा था। बस, एक-दूसरे से मुसकराकर विपरीत दिशा मे चल पडे थे।

उस मुलाकात का आज तीसरा साल था। इन चार वर्षों मे वे कई बार मिले थे। कई सवाल कई जवाब हुए थे दोनो के बीच। कई उदासियॉ बॉटी गई थीं, कई ठहाके लगाए थे दोनो ने। वक्त के साथ दोनो ने रिहाई के बाद की बाते की थीं। योजनाएँ बनाई गई थीं। वायदे किए गए थे—आजाद होकर भी इस बदी जीवन की दोस्ती बनाए रखनी है।

बदीगृह से मुक्ति पाने का पहला अवसर सबीर को मिला—सबीर, जो चार साल पहले पुलिस सार्जेट था। कानून का रक्षक था, कानून की गिरफ्त मे खुद आ गया था। सार्जेट की तरक्की पाने से पहले वह साधारण पुलिसमैन था। दो साल एक मत्री का ड्राइवर था। फिर दूसरे साल उसी मत्री का अगरक्षक रहा। इसी दौरान सार्जेट बन जाने का सौभाग्य पाया। यह सौभाग्य उससे पहले पुलिस मे भरती हुए उसके कुछ साथियो को नही मिल पाया था। उस सौभाग्य के दूसरे साल वह दुर्भाग्य आ गया। धधे मे शामिल करनेवाले मत्री के दोनो एजेट तो बाल-बाल बच गए, सबीर फॅसकर रहा। धधे के उसके दोनो साथी चाहते तो वह भी उन्ही की तरह बच निकलता। उन्होने चाहने का वायदा करके भी नही चाहा। जिस मत्री की सेवा मे वह चार साल रहा, उसने भी कुछ नही कर पाने की बेबसी दिखा दी थी।

सबीर के सामने बच जाने का आखिरी तरीका यह था कि वह पुलिस को

लेकिन जब उस जीभ कटे से एक भी शब्द बोला नही गया तो वजीर ने ध से बादशाह से कहा, "आलमपनाह! यह आपकी जय-जयकार करने के लिए तैय नही है। गद्दारी है यह।"

"तो इसे तत्काल गद्दारोवाली सजा दी जाए।"

वजीर ने तुरत आदेश दिया, "इस गद्दार को फॉसी के फदे पर झुला दि जाए।"

[

# रॉबिन हुड की मौत

लोग मिलते रहते है, एक से अनेक बार—कभी गली मे, कभी बाजार मे, कभी बस मे तो कभी मत्री के गलियारे मे। कभी एक ही मुलाकात मे दो व्यक्ति हमेशा के लिए मित्र बन जाते है। कभी बीसो बार मिलकर भी केवल जाने-पहचाने रह जाते हैं। यो कहे कि कैदखाने के गलियारे मे मिल थे। मिले भी नहीं, बल्कि एक-दूसरे से टकराए थे। एक ने दूसरे को देखा था—ऑखो मे एक-दूसरे के प्रति शिकायत लिये कि क्यो टकराए मुझसे ? देखकर नही चल सकते। या—ऑखे नही हैं तुम्हारे पास ? पर किसी-न-किसी से कुछ भी नही कहा था। बस, एक-दूसरे से मुसकराकर विपरीत दिशा मे चल पडे थे।

उस मुलाकात का आज तीसरा साल था। इन चार वर्षो मे वे कई बार मिले थे। कई सवाल कई जवाब हुए थे दोनो के बीच। कई उदासियॉ बॉटी गई थीं, कई ठहाके लगाए थे दोनो ने। वक्त के साथ दोनो ने रिहाई के बाद की बाते की थी। योजनाएँ बनाई गई थीं। वायदे किए गए थे—आजाद होकर भी इस बदी जीवन की दोस्ती बनाए रखनी है।

बदीगृह से मुक्ति पाने का पहला अवसर सबीर को मिला—सबीर, जो चार साल पहले पुलिस सार्जेट था। कानून का रक्षक था, कानून की गिरफ्त मे खुद आ गया था। सार्जेट की तरक्की पाने से पहले वह साधारण पुलिसमैन था। दो साल एक मत्री का ड्राइवर था। फिर दूसरे साल उसी मत्री का अगरक्षक रहा। इसी दौरान सार्जेट बन जाने का सौभाग्य पाया। यह सौभाग्य उससे पहले पुलिस मे भरती हुए उसके कुछ साथियो को नही मिल पाया था। उस सौभाग्य के दूसरे साल वह दुर्भाग्य आ गया। धधे मे शामिल करनेवाले मत्री के दोनो एजेट तो बाल-बाल बच गए, सबीर फॅसकर रहा। धधे के उसके दोनो साथी चाहते तो वह भी उन्ही की तरह बच निकलता। उन्होने चाहने का वायदा करके भी नही चाहा। जिस मत्री की सेवा मे वह चार साल रहा, उसने भी कुछ नहीं कर पाने की बेबसी दिखा दी थी।

सबीर के सामने बच जाने का आखिरी तरीका यह था कि वह पुलिस को

सच्चाई बता दे, किंतु वह यह चाहकर भी नही कर सका। उसके दोनो साझेदारो ने धमकी जो दी थी। मत्री ने उसकी खामोशी यह वायदा करके खरीदी थी कि जेल की सजा के बाद उसे मालामाल कर दिया जाएगा। उसे इसका पूरा यकीन था। मत्री की बात पर न सही, पर पाकिस्तान की पिछली यात्रा के दौरान लाए गए उस माल से प्राप्त होने वाली रकम पर उसे पूरा विश्वास था। साढे सात मिलियन रुपए मे उसके अपने हिस्से का पूरा एक मिलियन बनता था। ऊपर से उन दोनो खतरो की कीमत दो लाख से कम की नही थी। अपने दोनो मित्रो के झिझक और भय के कारण वह माल पाकिस्तान से मॉरीशस अपने बैग मे लाने के लिए तैयार हो गया था। दूसरा बडा खतरा वह था, जब माल को चार अलग बडलो मे रखकर उन्हे चार बडे ग्राहको तक पहुँचाने की उसने जिम्मेदारी ली थी। और इन्ही मे से एक आखिरी सौदागर तक पहुँचने से पहले वह एटी ड्रग पुलिस के हाथो आ गया था।

सबीर इमरान के आठ महीने बाद उसके दोस्त राजीव सेवक की रिहाई हुई। राजीव सेवक ने पहली चोरी चौदह साल की उम्र मे की थी—अपने ही गॉव की एक बुढिया के घर। आज तक कोई नही जान सका कि उस बुढिया के घर से उसके पूरे साल भर के जमा उसके बुढापे के भत्ते की राशि किसने चुराई थी। गॉव के लोग घूम-फिरकर यह कहते रह गए थे कि अगर वह काम रफिकवा के बेटे का नही था तो जरूर ही गास्तो का काम रहा होगा। जबकि उस रात दोनो एक नाव मे समदर के भीतर प्रवाल-रेखा की चट्टानो के बीच ओरित फॅसाने मे लगे हुए थे। उस रात जोरो की बारिश के कारण एक भी ऑक्टोपस उनके अकुश के मार्ग मे नही आ पाया था। अगर कुछ मछुआरो ने उन्हे बीच समदर मे नही देखा होता तो वे पुलिस से छूट नही पाते।

इन्ही दोनो से राजीव ने यह बात सीखी थी कि काम करने से पहले उस घर और वहॉ के लोगो के बारे मे पूरी जानकारी ले लेनी चाहिए। पूरी योजना मे किसी तरह की जल्दबाजी नही करनी चाहिए। अच्छे-से-अच्छे दोस्त तथा अपने घर के किसी भी सदस्य को उस योजना का पता नही लगने देना चाहिए।

गन्ने के कारखाने मे मैकेनिक का काम करते हुए भी राजीव अपने रात के कारनामो से बाज नही आया। स्थान देखता, मौका ढूँढता, योजना बनाता और पूरी सफाई के साथ काम पूरा कर जाता। अपने काम करने की जगह पर उसने तीन बार चोरी की। एक बार कई कीमती औजारो के साथ रॅगे हाथो पकडे जाने से वह बच गया, पर उसकी पत्नी सात साल के विवाह-बधन को तोडकर मायके लौटकर रही। साथ मे अपने दोनो बच्चो को भी लेती गइ। राजीव हमेशा उस घर पर नजर रखता था

जिसमे रहनेवाला या तो अकेला रहता था या घरवाले घर छोडकर अन्य परिवारा क यहॉ घूमने जाया करते थे।

उसकी पिछली काररवाई एक ऐसे ही घर मे थी, जिसक चार सदस्यो का परिवार था। उस रात वे दूर के एक परिवार के यहॉ शादी मे गए हुए थे। इम वात का पता राजीव को तीन दिन पहले ही लग गया था। उसे इस बात की भी जानकारी थी कि दो दिन पहले उस घर से दो गाये बेची गइ थी ओर पैसे घर मे ही थ। बस, एक पुरानी बात थी जो राजीव भूल बैठा था। उसने जब अपनी चोथी चोरी की थी तो उस घर के मालिक ने चार बजे सुबह मकई के खेत की रखवाली के बाद घर लोटते हुए उसे घर के पिछवाडे मे अपनी साइकिल की रोशनी मे देख लिया था, पर चूँकि उस घर के लोगो से उसकी पुरानी दुश्मनी थी, लिहाजा उसने अपना मुँह बद कर लिया था। कितु उसे दो दिनो के बाद जब गॉववालो से चोरी के बारे म पता चला था तो वह राजीव से हजार रुपए लेकर ही रहा था। राजीव से उसने यह वादा भी लिया था कि महीने भर बाद वह उसे और हजार रुपए देगा, पर वादा निभाया नहीं गया। इसका भयकर परिणाम राजीव को तब देखने को मिला, जब उस व्यक्ति की झूठी गवाही पर पुलिस ने राजीव की रखैल के घर धावा बोला। झूठी गवाही सच साबित हो गइ। चारी का माल पुलिस के हाथ लगते ही उसे सात साल की सख्त सजा हो गई।

खुली हवा मे दोनो की पहली मुलाकात जूमन के बॅगले म हुई। यह वही जूमन था, जिसने कभी सबीर इमरान को मत्री लाब्रोस के दोनो एजेटो के बीच से निकालकर अपनी टोली मे ले आने की कई कोशिशे की थी। जो उन तमाम काशिशो से भी न हो पाया था, वह इधर तीन महीने पहले अपने आप हो गया। स्वय सबीर एक शाम उसके घर पहुॅच गया था। जूमन को इस बात की खुशी हुई थी। उसके दोनो प्रतिद्वद्वियो से छूटकर यह काम का आदमी खुद उस तक आ गया था उसके धधे मे अपना सहयोग देने। जूमन ने मन-ही-मन सोचा था—मत्री ने जब वादा निभाया ही नही तो साला करता क्या, आना ही पडा।

जूमन का बॅगला अपने देश के अन्य बॅगलो की तरह समुद्र किनारे न होकर एक पहाडी पर था। पहाडी इलाके के उस आखिरी बॅगले तक पहुॅचने का एकमात्र चक्करदार रास्ता बबूल के पेडो के बीच से निकलकर ऊपर को पहुॅचता था। उसे बहुत कम कीमत मे वह इलाका मिला था। उसके साथी यही बोलते रह गए थे कि उतने ऊपर उस वीरान ठौर पर घर बनाने की बात सोचना निरा पागलपन था। जूमन की ही कार मे सबीर इमरान और राजीव सेवक उस बॅगले पर पहुॅचे थे। सबीर, जो कि जूमन की गतिविधियो से बहुत पहले से अवगत था। इस जगह पर पहली बार पहुॅचकर भी वह चकित नही था।

पर राजीव सेवक ने अपनी हैरानी को न रोक पाकर फोर-बाई-फोर की पिछली सीट से सिर को आगे बढाकर सबीर के कान मे धीरे से कहा, ''सबीर। यहाँ तो पछी भी पर नहीं मार सकता। चारो रास्ते से आनेवाला कोई भी व्यक्ति मील भर की दूरी पर भी अपने को छिपा नहीं सकता।''

चारो ओर की ऊँची मेटालिक दीवारो के बीच राजीव ने एक बार फिर अपने को जेल के अहाते मे पाया। सामने की भूरे रगवाली इमारत नई होकर भी धूप और पानी से धुल गए रग के कारण पुरानी लग रही थी। फाटक पर पहले अरबी, फिर नीचे कुछ छोटे अक्षरो मे अग्रेजी मे लिखा हुआ था—'जन्नत का दरवाजा'। जिस आदमी ने दरवाजा खोला था वह अधिक लबा-चौडा न होकर भी ऐसा लग रहा था कि बहुत छोटी सी गाली पर भी वह किसी की गरदन मरोडने से नही रुकेगा। घर का आम दरवाजा खुलने मे समय लगा। लोहे की सलाखो को दाएँ-बाएँ खीचकर खोला गया।

जूमन के पीछे चलते हुए राजीव ने गलियारे मे सबीर से पूछा, ''यह घर ही है या ''

''यह घर थोडे ही है।''

सबीर इमरान की आवाज की हलकी झनक पाकर जूमन ने ठिठककर पूछा, ''कुछ कहा तुमने ?''

''अपने दोस्त को कुछ बता रहा था।''

दो कमरो को पार करके जिस तीसरे कमरे मे पहुँचकर तीनो बैठे वह एक विस्तृत कमरा था। उसमे घर के सामान से कही अधिक अलमारियाँ थी। उन दर्जन भर अलमारियो के बीच लकडी की एक लबी मेज और कुछ साधारण कुरसियाँ थीं। सबसे पहले बैठकर जूमन ने अपने दोनो साथियो को बैठ जाने दिया। उनकी हैरत को भी कुछ कम हो जाने दिया। फिर बोला, ''देखो यार सबीर। तुम अब तक लोगो के सामान चुराते रहे। लोगो के लिए तो तुम चोर रहे, पर सरकार ने तुम्हे कभी भी चोर माना ही नही। अब मेरे साथ जुडने के बाद तुम सरकार को लूटोगे और सरकार तुम्हे कभी भी डाकू नही सिद्ध करेगी।''

उसके रुकते ही राजीव ने कहा, ''यानी हम हमेशा सरकार के सरक्षण मे रहेगे ?''

''और जनता के बीच वाहवाही पाते रहेगे।''

''जनता हमारी वाहवाही क्यो करने लगी ? कैसे करेगी ?''

''जैसे मेरी करती रही है। तुमने आरसेन लीपे की कहानी पढी है ?''

''नही।''

''फ्रास का जेटलमैन चोर था वह। खैर। रॉबिन हुड की कहानी तो मालूम है तुम्हे ?''

''बहुत अच्छी तरह।''

''तो फिर बहुत ही अच्छी तरह तुम दोनो को रॉबिन हुड की तरह बडी-बडी चोरियाँ करके जनता के बीच से हमदर्दी और शुक्रगुजारी हासिल करते रहना है।''

''वह कैसे ?''

''तुम्हारे दोस्त का यह सवाल उसकी बुद्धि के तेज होने का सबूत नहीं दे पा रहा, सबीर।''

''आगे-आगे देखो जूमन भाइ। यह शेर नहीं, बल्कि सवा शेर होकर दिखाएगा।''

''तो फिर ठीक है। परसो रात से तुम्हारे कारनामे शुरू हो रहे है। इनमे से किसी एक के लिए भी तुम दोनो अपनी पसद के किसी भी व्यक्ति को नही लोगे। जो भी आदमी तुम्हारी मदद के लिए तुम्हारे साथ होगे वे मेरे आदमी होगे। मेरी ओर से दी गई हर सहूलियतो के बीच तुम दोनो ऑपरेट करोगे।''

''ये सब तो मानी हुई बाते हैं। मेरी भी आपसे एक मॉग ''

''मजूर की जा रही है।''

''यानी ''

''यानी बीस प्रतिशत के बदले तीस प्रतिशत। पर जरूरी है कि ''

तभी फोन की घटी बज उठने के कारण उस बात को अधूरी छोडकर फोन का स्विच ऑन करना पडा, ''हैलो। हॉ हॉ, कस्टम से बची पूरी राशि तुम्हारी ही तो होगी। हॉ एकदम हॉ, वैसा ही जैसा तय था मेरे आदमी एयरपोर्ट पहुँच जाएँगे वह तो भेजा जा चुका है हॉ, जो एकाउट नबर तुमने दिया था, उसी मे मेरे लिए एक काम तुम्हे करना है नहीं, इस बार मुझे अपने नहीं, अपने एक जिगरी दोस्त के बेटे के लिए तुम्हारी ही मिनिस्ट्री मे हो जाए, तब तो और भी ठीक रहेगा। हॉ जैसा तुम कहते हो सुहागा परसो नहीं अगले सोमवार को मिलते हैं तुम्हारे दोस्त का बॅगला ही अधिक ठीक रहेगा।''

उसके फोन रखते ही सबीर इमरान बोल उठा ''आप मत्री को इस तरह तुम-तुम करके बाते कर लेते है जूमन भाई ?''

''तुम्हे कैसे मालूम हो गया कि मैं किसी मत्री से बाते कर रहा था ?''

''एकदम साफ था।''

''जब गधे को बाप बोलना पडता है तब तो उसे गधा नही कह सकते, लेकिन इन दिनो मे इन लोगो का बाप हूँ। इस समय जनता के इन सौतेले बापो को मै 'गधा' कहकर पुकार सकता हूँ। जीवन मे कभी भी मौका नही चूकना चाहिए। खासकर इस तरह के मौके, जो विरले ही मिलते है। हम तो लोहार है भाई। उन सोनारो के ठक-ठक के हथौडे तो हम लोहारो का एक ही धडाम।''

घटे भर तक तीनो व्यक्तियो मे बाते होती रहीं। जूमन दोनो को अपनी योजनाओ की जानकारी देता रहा, पर पूरी सावधानी के साथ। वह दोनो को बाते वही तक बताता रहा जहॉ तक बताना उसकी अपनी नजरो मे जरूरी था। जगह भी उन्हे वे ही और वही तक बताई जिनके बताने मे किसी तरह के खतरे की गुजाइश नही थी। शाम को वहॉ से लौटकर सबीर और राजीव हाथ लग आए रुपयो के साथ शहर मे चानकीन के रेस्तरॉ मे जा बैठे।

इद-गिर्द बेठे छह-सात व्यक्ति उनकी बातो को न समझ पाएँ, इसलिए रम के पहले पेग को हलक के नीचे उतारकर सबीर ने राजीव से भोजपुरी मे कहा, ''जूमन से एगो बात त बडा बढिया सीखे के मिलल यार।''

''कोन बात?''

''इहे कि लोहार के सौ त सोनार के बस एके गो।''

''ई कोन बडा बात भयेल?''

''बखतवा आवे दे, देख लिये।''

दो पेग के बाद सबीर ने तो पीना बद कर दिया, पर राजीव ने पॉचवे पेग के बाद ही अपने फ्राइड नूडल्स के प्लेट को अपने करीब खीचा। उसपर मिर्च और सॉस छिडका। फिर लहसुन-पानी। आपस मे ऐठी नूडल्स के बीच से कॉटे के सहारे चिकन के दो टुकडो को उठाकर उसने अपने मुँह के हवाले किया। सबीर तो अपनी प्लेट से टुकडे उठा-उठाकर खाता रहा, पर राजीव कठिनाई से चार कौर खा पाया।

जब वह कुरसी से उठा तो तश्तरी भरी-की-भरी ही थी। अपने को गाफिल न दिखने से रोकने के लिए बडी सावधानी से उसने कदम आगे बढाए और अपने इलाके की आखिरी बस पकडने के लिए बस टर्मिनल की ओर बढ गया।

सडक पर सबीर ने कहा, ''जूमन की वह रॉबिन हुडवाली बात भी बडे ही महत्त्व की थी।''

''कैद से रिहाई के बाद दोनो का वह पहला खतरनाक कदम था।''

''जूमन की ओर से उन्हे तीन व्यक्ति मिले थे। एक कार चालक था, दूसरा जगह और पूरी योजना की सारी जानकारी रखनेवाला और तीसरा रुपयो का बैग लिये

हुए जूमन का सबसे विश्वसनीय साथी था। जूमन ने कहा भी था कि उसकी गैरहाजिरी मे अनवर को ही जूमन मानकर चलना है। बदरगाह क जिस भाग म वे पहुॅचे, वहॉ के हर कोने, हर मोड तथा हर कोंटेयनर की जानकारी थी अनवर को। जाली नबर प्लेटवाली कार को मारीन ऑथोरिटीवाले इलाके की जगह छोडकर वे इधर पैदल आए थे। कोटेयनरो की दो कतारो के बीच बाकी लोगो को छोडकर अपने साथ सबीर को लिये अनवर आगे बढा। दोनो को देखकर भी एक सिक्यूरिटी गाड इस तरह चहलकदमी करता रहा, जेसे उसने कुछ देखा ही नही था। कुछ ही कदमो के बाद दोनो को एक आदमी मिला, जो सबीर को बिना टाई पहने बदरगाह का काइ बडा अफसर प्रतीत हुआ।

सबीर का परिचय उस व्यक्ति को देते हुए अनवर ने कहा, "गूप का नया जोरी।"

उस आदमी ने सबीर की अपेक्षा से अनवर के हाथ के बेग को कहीं अधिक ध्यान के साथ देखा। फिर जेब से अपनी कार की चाबी अनवर की ओर बढाकर कहा, "दो तीन चार सात सफेद टोयोटा। के-डे के सामने।"

अनवर के हाथ से बैग और फिर गाडी की चाबी लेकर सबीर बिना कुछ कहे सकेत किए गए ठौर की ओर चल पडा। उसे हिदायत याद आई—सिर्फ तीन मिनट।

और तीन मिनट से पहले ही बैग को उस अफसर की कार मे रखकर वह दोनो के बीच लौट आया। यहॉ भी तीन मिनट से पहले कोंटेयनर से सामान बाहर निकल गया था। जो बैग, जो बाहर निकाला गया था, उसपर लिखा हुआ था—'इलेक्ट्रॉनिक्स विज केर' और फिकटियस एड्रेस।

फिर तो दस मिनट बाद वह बैग मारिन ऑथोरिटीवाले इलाके की कार की डिकी मे था और पैंतालीस मिनट बाद 'जन्नत का दरवाजा' के अहाते के भीतर। उस बैग को जब सात आदमियो के सामने जूमन के सबसे फर्माबरदार ने खोला तो उसके भीतर से तीन वी सी आर बाहर निकाले गए।

अनवर ने सबीर की ओर देखकर कहा, "इस तरह का वीडियो कैसेट रिकॉर्डर इस देश मे पहली बार पहुॅच रहा है।"

सबीर और राजीव—दोनो ने अपनी हैरत को जाहिर नही होने दिया।

लगभग घटे भर बाद जूमन की एक कार को ड्राइव करते हुए घर की ओर जा रहे सबीर ने राजीव से कहा, "हमे तो यार एकदम मूर्ख समझा गया।"

बगल मे बैठे राजीव ने पूछा, "तुम अनुमान लगा पाए कि उन तीनो वी सी आर के भीतर क्या होगा?"

"दो ही चीजे हो सकती हैं।"

"ड्रग्स और क्या ?"

"ब्राउन शुगर या सोने के बिस्कीट। पता लगाकर रहेगे। तुमने उस खास कमरे की चाबी को "

"साबुन के टुकडे पर उतार लिया।"

तीन दिन बाद उन दोनो का दूसरा धावा बहुत पहले से तैयार योजना के तहत उत्तर प्रात के एक सुनसान इलाके मे दिन-दहाडे हुआ। शक्कर कारखाने के मजदूरो की महीने भर की तनख्वाह लेकर जा रही कार को दो तरफ के गन्ने के खेतो के बीच की एक सॅकरी गली मे रोका गया। दो मिनट से कम समय मे कार के भीतर के दो व्यक्तियो को पिस्तौल दिखाकर कार से नीचे उतारा गया और पिछली सीट के दोनो सूट केसो पर कब्जा कर लिया गया।

दूसरे ही घटे राशि दोनो के सामने गिनी गई—नौ लाख रुपए थे।

रात मे अपने-अपने घर लौटने से पहले राजीव ने अपने मित्र से पूछा कि आखिर वे दोनो ये सारे खतरे क्यो मोल ले रहे हैं ?

बडी गभीरता के साथ सबीर ने उत्तर दिया, "अपने लिए यार तुम देखो तो सही।"

पॉच दिन बाद एकदम आधुनिक मोटर बोट पर सवार सबीर और राजीव जूमन तथा बदरगाहवाले दो व्यक्तियो के साथ 'इल प्लात' इलाके मे पहुॅचे। रात चॉद की रोशनी मे लिपटी हुई थी और समदर खराब मौसम से पैदा हो आए ज्वार-भाटे लिये हुए था। पोर्ट-लुई के बदरगाह की ओर लपकता हुआ जहाज पास आता गया। जहाज के पिछले भाग की हरी रोशनी तीन बार जली और बुझी। और फिर एक बक्से को ज्वार-भाटो के ऊपर उथल-पुथल होते देखा गया। दो घटे बाद ही सबीर और राजीव को पता चला कि उसमे पिस्तौल और बदूके थीं, क्योकि उन हथियारो मे से दोनो को एक-एक पिस्तौल थमाते हुए जूमन ने कहा, "जिसे भी हमारे धधे की भनक मिले उसे उसी क्षण खत्म कर देने के लिए।"

'जन्नत का दरवाजा' का जश्न मनाया जा रहा था। तेरह लोग थे, जिनमे सबीर और राजीव के अलावा कस्टम विभाग का एक उच्चाधिकारी भी था। पुलिस का एक चीफ इस्पेक्टर और एक मजहबी गुरु भी शामिल था उस जश्न मे। उस मजहबी गुरु ने ही अगले ऑपरेशन के बारे मे बताते हुए कहा, "हमारा अगला लक्ष्य देश का एक बहुत बडा कैसिनो है। हमारे पास अब इतना सामर्थ्य है कि हम देश मे हो रही गैर-मजहबी हरकतो को खत्म करके रहेगे। इस काम की शुरुआत हम इस कैसिनो से,

जिसका नाम वक्त आने पर बताया जाएगा, शुरू करने जा रहे हैं। मजहब को यह गवारा नही कि शराब और जुए को इस तरह खुल्मखुल्ला बढावा मिले। मजहब के खिलाफ होनेवाली उन तमाम गतिविधियो पर हमारा हमला होगा, जो हमे शैतानियत की ओर ले जा रही है। हमे पहले कैसिनो का सारा धन बटोरना होगा, फिर उसे बम से उडा देना होगा।'' वह बोलता ही गया।

और कुछ लोग इस बात के लिए बेताब थे कि कब तकरीर खत्म हो और कब वह व्यक्ति वहाॅ से टले और वे शिवास रीगल की बोतल को मेज पर ला सके। पर बोलनेवाला अपनी धुन मे बोलता जा रहा था।

और जब बॅगले मे यह तकरीर चल रही थी, उधर 'जन्नत का दरवाजा' के भीतर भी कुछ हो रहा था। इमारत के दोनो रखवाले आखिरी स्नीफिग के बाद मदहोश पडे हुए थे। इमारत के भीतर का वह विशेष बडा सा कमरा खुला हुआ था। तीन व्यक्ति, जो आधे घटे पहले अपनी कार नीचे पेडो के झुरमुट मे छोड आए थे, इस समय कमरे के भीतर अपने-अपने सिर पर हेलमेट पहने सक्रिय थे। टॉर्च की रोशनी मे दोनो ने तिजोरियो से नोटो के बडलो को निकालकर अपने बैग मे भरना शुरू किया। रुपयो के बाद सोने की ईटो को दूसरे बैग मे भरा गया।

इसके बाद उस छोटे कमरे को खोला गया जिसमे हथियार थे। एक ने गैलन से केरोसीन छिडकना शुरू किया। पूरी तरह छिडक लेने के बाद वह गलियारे मे आ गया, जहाॅ उसका एक साथी लाइटर जलाए खडा था। तेल छिडकने वाले का इशारा पाते ही उसने लाइटर को हथियारो के बीच फेकते हुए कहा, ''चलो, पीछे की ओर से निकलते है।''

दो बैगो के साथ तीनो व्यक्ति गलियारे से आकर चाँद की रोशनी मे बाहर आ गए। इमारत के भीतर विस्फोट हुए। लपटे धधक उठीं। धमाको से 'जन्नत का दरवाजा' के एक रखवाले की बेहोशी मिटी। उसने झकझोरकर अपने दूसरे साथी को जगाया। लपटो का अधिक ऊॅचे उठते देखकर वे दोनो ऊॅची दीवारो के घेरे से बाहर भागे।

लपटे देखते-ही-देखते काले रग के धुएॅ मे बदलकर घनी होती गई और पूरे माहौल मे छिटकी-मचलती चाॅदनी कालिमा मे बदलती रही। नीचे पेडो के झुरमुट से बाहर आती हुई कार सॅकरी गली से होकर आम सडक की ओर दौड गई।

'जन्नत का दरवाजा' से तीस किलोमीटर दूर समुद्र-तट के बॅगले मे जश्न जारी रहा।

तकरीर पूरा करके मजहबी गुरु जगह छोड चुका था। बडे कमरे मे मेज के इर्द-गिर्द सात व्यक्ति अपने गिलासो को थामे हुए थे—तीसरी बार मेज पर से उठाने

के बाद। उनके पहले पेग के साथ जूमन ने अपने जूस भरे गिलास को उठाकर 'चीयर्स' किया था। एक घूँट पीकर बाकी जूस को हाथ मे लिये ऊपर बँगले के उस कमरे मे वह चला गया था, जहाँ ह्विस्की से भरे दो गिलासो के सामने कोइ उसका इतजार कर रही थी।

सबीर ओर राजीव अपने बाकी साथियो के साथ तीसरी बार भरे गए गिलासो को होठो तक ले जाने वाले थे कि दाई ओर से जल्दी-जल्दी सीढियाँ उतरने की आवाज आई। दूसरे ही मिनट बाद जूमन अपने मोबाइल को कान से लगाए, गिलास थामे लोगो के बीच आ गया। पर आते-आते फोन पर बोला, "मैं तुरत पहुँच रहा हूँ। तुम दोनो वहाँ से मत हटो। न तो पुलिस को फोन करना है, न दमकल को। किसी को भीतर मत जाने देना। मै पहुँच ही रहा हूँ।"

अनवर पूछ उठा, "क्या हुआ, जूमन भाई ?"

"जन्नत का दरवाजा जल रहा है।"

छिपी नजरो से सबीर और राजीव ने एक-दूसरे को देखा। उनकी आँखो मे चमक जरूर आई, पर उन्होने चेहरे पर खुशी का कोई भी रग आने नही दिया।

इस घटना के तीन दिन बाद।

राजीव ने अपने सबसे नए, पर सबसे घनिष्ठ दोस्त से कहा, "सबीर, चला मेरे साथ। फ्रास मे मेरे रिश्तेदार है। इन रुपयो के साथ वहाँ ठाट से बिताएँगे। यहाँ रहना अब सुबह-शाम खतरे मे जीना है।"

"तुम जाओ राजीव, मुझे यही रहने दो।"

इस घटना के कोई तीन महीने बाद शहर के चार अनाथालयो के पतो पर दूसरी बार दान बीस-बीस हजार रुपए के चेक गुमनाम से पोस्ट करके सबीर पोस्ट ऑफिस से बाहर निकला। हाई-वे पार करके मछली मडी के भीतर वह पहुँचा तो पीछे से किसी ने उसे दबोच लिया। सबीर कुछ बोल पाता या भीड कुछ समझ पाती, इससे पहले दबोचनेवाला व्यक्ति अपना काम करके भीड के बीच से होता हुआ सडक की भारी भीड मे गायब हो गया।

छाती पर खजर लिये सबीर इमरान को लुढकते देखकर लोग चारो ओर से उसको घेरकर 'पुलिस। डॉक्टर। पुलिस। डॉक्टर।' चिल्लाते रहे, पर तब तक रॉबिन हुड दम तोड चुका था।

□

# आमंत्रण

तीन दिन पहले से मौसम खराब होना शुरू हुआ था।

वैसे तो तूफान की अवधि पार हो चुकी थी। ठड का हलका सा एहसास सप्ताह भर पहले से ही शुरू हो गया था। लेकिन इधर तीन दिनो से हवा मे उमस थी। मेटीओरोजिकल विभाग ने बस सक्षिप्त मे इतना ही बताया कि हमारे इलाके मे कोइ एटी साइक्लोन चल रहा था, जिसकी वजह से हवा की उस रफ्तार के बावजूद वातावरण मे गरम लहरे थीं। आकाश पर बादल भी हमेशा जैसी आकृतियो मे न होकर पतली-लबी कतारो मे बिना रगो के ढीले पड गए इद्रधनुष की तरह थे। पश्चिमी आकाश मे सूरज के अस्त हो जाने के काफी देर बाद तक लाली फेली हुई थी।

दो दिन पहले ऐसे ही समय मे जब धुँधलका पसरने ही वाला था, वह घटना घटी थी। माहौल का रग देखते-ही-देखते बैगनी-सा हो गया था। विवेक अपनी ऊपरी मजिल के उस पश्चिमी टेरेस पर शाम का अखबार पढ रहा था, जब उसे उन बैगनी किरणो का आभास हुआ था। अपने हाथ के फ्रेच अखबार को बगल के दूसरे बेत के सोफे पर रखकर वह टेरस की मुँडेर पर दोनो हाथो को रखे अपने सामने के उस भिन्न दृश्य को देखने लगा था। उसके दोनो बच्चे भी, जो केरम खेल रहे थे, अपने खेल को बद करके उस विचित्रता को देखने लगे थे। हवा मे उष्णता थी। उस बैगनी रग से ऑखो मे चुभन होने लगी थी। वह अजीब रग अधिक देर तक फैला नहीं रहा। लोग उसे समझने की कोशिश मे ही थे कि तभी वह धीरे-धीरे छँटकर हर शाम के साधारण रग मे बदल गया था।

धुँधलके के गहरे होते ही विवेक के बडे बेटे ने बिजली की बत्ती जला दी। पर तभी चालीस-पचास चिडियॉ—जिनमे मैना, पिडकी, गौरैया, लालमुनिया और बुलबुल तक थी—पख फडफडाते टेरेस मे आ गई। विवेक को ऐसा लगा कि वे सभी पक्षी उस बैगनी किरण के कारण देखने की शक्ति खो बैठे थे और बत्ती के जलते ही उनकी रोशनी लौट आई थी। विवेक का सात वर्षीय लडका तो उन पक्षियो के छटपटाते परो के शोर से डरकर घर के भीतर चला गया था। उन चिडियो मे से

कुछ तो शीशो को घेरे लोहे की छडो पर सहमी हुई-सी बैठ गई थी। कुछ फर्श पर उतर गई थी और कुछ अधखुली खिडकी और दरवाजे से घर के भीतर तक पहुँच गई थीं। सभी डरी हुई थी। असीम के ताली बजाकर उन्हे भगाने की चेष्टा से भी वे नहीं भागी थीं। विवेक के छोटे भाई की पत्नी ने डरी हुई सुषमा को रवि की गोद मे थमाकर जब उन पक्षियो को भगाना शुरू किया तो उसे रोकते हुए विवेक ने कहा था, 'ठहरो मनीषा। ये पक्षी डरे हुए हैं।'

'किस चीज से ?'

इसका उत्तर विवेक से नही बन पडा था। घर की सभी बत्तियाँ जला दी गई थी। उस प्रकाश मे विवेक ने आँगन के उस पेड की ओर देखा, जिसकी टहनियो पर ये सारे पक्षी रात बिताते है। पेड को इस तरह देखा था जैसे उसपर कोई बिल्ली जा बैठी हो, जिससे भयभीत होकर सभी पक्षी इधर भाग आए थे। पर उसे यह खयाल आते देर नही लगी थी कि वैसी कोई भी बात नहीं थी और चिडियो के इस तरह डर जाने का कारण सभवत वह विचित्र प्रकाश ही था। घटे भर बाद ही घर के सभी सदस्य मिलकर उन सभी पक्षियो को घर से निकाल पाए थे।

आज दो दिन बाद भी इस बार अपने घर के पूर्वी टेरेस पर बैठे अपने बारह बैडवाले ट्राजिस्ट्र से विवेक किसी विदेशी रेडियो से विश्व-समाचार सुनते हुए भी कलवाली उसी घटना को सोचे जा रहा था। हवा तेज होकर भी अपने मे उमस लिये हुई थी। वह सुन रहा था गोर्बाचेव के द्वारा उठाए गए नए कदमो पर रूसी नेताओ की अस्वीकृति की खबर। और उसकी ऑखे पूर्वी आकाश पर फैलते अँधियारे को घूर रही थीं। उसने पूर्वी आकाश के दो पहले तारो को झिलमिलाते देखा। रूस की खबरो के बाद फ्रेच न्यूज रीडर ने भारत-पाकिस्तान के बीच अकस्मात् पैदा हो आई गरमागरमी की सक्षिप्त सूचना दी। फिर विश्व फुटबॉल कप के तहत फीफा के अध्यक्ष की एक भेटवार्त्ता से आई कुछ बातो को सामने से कटी जीन की एक चुस्की ली और गिलास को छोटी मेज पर रख दिया। ऐसा करते हुए भी उसके कान रेडियो से खबरे सुन रहे थे और ऑखे आकाश के बारी-बारी से चमक आते तारो को तलाश रही थीं। तभी उन तारो के बीच से उसने एक अधिक तेज तारे को किसी पुच्छल तारे की तरह अपने पीछे प्रकाश की पतली लबी लकीर को छोडते हुए धरती की ओर उतरते देखा। पहले तो उसे कोई साधारण पुच्छल तारा ही माना, लेकिन जब उसकी उस शिथिल गति का खयाल किया तो हैरान रह गया। वह सभी तारो से तेज था और उनकी तरह स्थिर भी नहीं था। उसके कानो ने विश्व-समाचार सुनने से इनकार कर दिया। उसकी ऑखे सामने से अधिक स्पष्ट होते बढे चले आ रहे उस विचित्र तारे

को ताकती रहीं। तभी उसके कानो को बरबस रेडियो की ओर आकर्षित होना ही पडा।

उसके अपने हाथ के उस ट्राजिस्टर से इस तरह की घडघडाहट शुरू हुइ जैसी कि कभी बिजली के कौधने या बिजली के तारो के आपस मे छू जाने से पैदा हो जाया करती है। उसने जल्दी से वॉल्यूम को कम कर दिया। आवाज बद हो चली थी, लेकिन घडघडाहट बनी रही थी। उसने रेडियो को किसी दूसरे स्टेशन से लगाने का प्रयास किया, पर तभी रेडियो से उसने जो आवाज सुनी, उससे दहल गया। वह स्वर सस्कृत मे था। उसे सस्कृत का उतना ज्ञान तो था ही, जिससे वह आगे की बातो को समझ सकता था। उसके पिता हिदू महासभा के मत्री थे और गीता परीक्षा के जिम्मेवार भी। उनकी बहुत बडी इच्छा थी कि विवेक की छोटी बहन उस गीता परीक्षा मे अव्वल आए। विवेक और शारदा मे होड लग गई थी। पर चूँकि परीक्षा मे उसे ही पहले आना था, इसलिए वही आई। उसके बाद विवेक का सस्कृत अध्ययन शिथिल ही रहा। रेडियो से अचानक आई उस आवाज से उसे हैरानी तो हुई, लेकिन बोलनेवाले से सुनकर उसे और भी आश्चर्य हुआ, जिसमे भय का बोध भी था।

''सुनिए। आप विवेक शर्मा है न ? आवश्यक नही कि आप मेरे प्रश्नो के उत्तर देने की बात सोचे। आप मुझे केवल सुनिए। आप तनिक भी आश्चर्य मत कीजिए। यह युग आश्चर्य का नही है क्यो, वह वाक्य आप ही का कहा हुआ है न ? स्मरण कीजिए छोडिए इसे। आप मुझे ध्यान से सुनिए। मैं आपसे मिल चुका हूँ। कोई दस-बारह दिन पहले ''

विवेक अपने सोफे पर सँभलकर बैठ गया। अभी पॉच दिन पहले तो वह अस्पताल मे था। दो महीने पहले उसे इनसोमनिया हो चला था। कई दिनो तक सो नही सका था। इसी कारण वह अस्पताल मे भरती कराया गया था। उसे बताया गया कि पूरे बीस दिन उसे वहॉ रहना पडा था, तब कहीं जाकर उसकी नींद लौटी थी। पर उसके घर के लोगो का यह कहना एकदम गलत था कि उन दिनो वह बार-बार लोगो को मुडिया पहाड की तराई मे छिपे एक खजाने की बात बताता रहा था। खैर, रेडियो से आ रही आवाज से उसने यह कहना चाहा कि कोई पद्रह-बीस दिन पहले अगर वह उससे मिल चुका था तो इसका मतलब हुआ अस्पताल मे। पर वहॉ तो वह सैकडो लोगो से मिलता रहा था। इस आवाज को तो उसने कभी सुना ही नहीं। कुएँ मे से प्रतिध्वनित हो रही आवाज थी वह।

'' आप मुझे सुन नही रहे हैं ? मुझे ध्यान से सुनिए श्री विवेक शर्माजी मैं आपसे मिलना चाहता हूँ कल ठीक छह बजे शाम को मैं आपका इतजार करूँगा।

मो स्वाजी के समुद्र-तट पर  ठीक उसी ठौर पर, जहॉ आप हर शुक्रवार की शाम अपने परिवार के साथ पिकनिक पर जाते हैं   ''

विवेक को प्रश्न करना ही पडा, ''आप कौन हैं ? इस रेडियो के भीतर से आप मुझसे कैसे बाते कर पा रहे है ?''

वह सस्कृत स्वर इस बार थोडा धीमा होकर बोला, ''आप कल शाम मुझसे मिलना मत भूलिएगा। अति आवश्यक है हमारा मिलना   ''

ओर इससे आगे कि वह कुछ पूछता या समझ पाता, रेडियो से फिर वही गाना शुरू हो गया जो एकाएक बद हो गया था। उसकी ऑखे अनायास ही आकाश की ओर उठ गई। उसने देखा—चद्रमा के आकार की एक गोलाई को दूर जाते हुए। वह स्तब्ध बैठा रहा। इतना अवश्य जानता था कि वह सपना नही देख रहा था।

मनीषा गोद मे सुषमा को लिये सामने आ गई। उसने अपने हाथ की भुजिया की प्लेट को विवेक के सामने की छोटी सी मेज पर रख दिया और सुषमा को गोद से उतारकर बोली, ''यही बडे पापा के पास बैठकर खेलो।''

सुषमा के हाथो मे उससे कभी न छूटनेवाली लाल कपडो की उसकी बडी गुडिया थी। विवेक की मॉ की अकस्मात् मृत्यु के बाद से सुषमा उस गुडिया को अपने से सटाए हुए थी। सोते समय वह उसे अपने से लगाए ही रहती थी। शुरू-शुरू मे तो उसने उस गुडिया को 'बडी अम्मा' कहना शुरू किया था। बडी कठिनाई से विवेक उसकी उस आदत को छुडवा सका था। फिर भी गुडिया को उससे अलग करना घर के सभी लोगो के लिए असभव रहा।

जिस ठौर पर विवेक अपने परिवार के सदस्यो के साथ हर शुक्रवार की शाम पिकनिक के लिए पहुॅचता था वह उसके घर से ढाई किलोमीटर के फासले पर था। समुद्र का वह साफ-सुथरा किनारा हर शुक्रवार की शाम एक तरह से उनका निजी-सा हो जाया करता था। रविवार की भीडभाड और आपाधापी से एकदम अलग वह स्थान तीन घटो के लिए धरती का सबसे शातिदायक स्थल होता था उनके लिए। सूर्यास्त को हर बार बादलो के नए डिजाइन मे देखते थे विवेक। कभी जब क्षितिज पर दूर तक बादल नहीं होते थे तो लगता था कि सूरज एक समदर से निकलकर दूसरे मे गोता ले रहा था। लालिमा से जुडे होते थे आकाश और समदर।

उस अद्भुत निमत्रण पर जब अपने होनडा सीविक को झावे के पेडो के बीच रोककर विवेक उससे नीचे उतरा तो सूरज बादलो के एक सुनहले टुकडे के बीच से सरककर नीचे चला आ रहा था। किनारे की ठडी बालू को पार कर जब तक वह तट से टकराती उन मद लहरो की गुदगुदी को अपने तलुओ मे महसूस करता, सूरज

अपनी पूरी गोलाई के साथ बादल के उस टुकडे और समुद्र की सतह के बीच आ गया था। खुद वह आग का रग लिये हुए था ओर अपने इद-गिद को सिदूरी रग म लपेटे हुए था।

मौसम की चचलता अभी गई नहीं थी। हवा अभी भी तीन दिन पहल शुरू हुई तेजी को बरकरार रखे हुई थी। उन सुनहले आर सिदूरी रगो के आग मे पक्षियो की एक लबी कतार गुजरी, फिर एक पालवाली नाव। आर जब सूरज पूरी तरह ओझल होने को हुआ तो उस समय वाटर स्कीइग करता काइ सेलानी अपने पीछे फेनिल तरगो की लबी कतार को छोडते हुए मेडीटरेनियन क्लब की ओर बढ चला था। विवेक ने अपनी कलाई का ऑखा के सामने किया। छह बजने मे अभी दस मिनट कम थे पर देखते-ही-देखत चारा ओर धुँधलका छाने लगा था। ममुद्र के किनारे दूर-दूर जो एक-दो कारे और एक दो लोग थे, वे एकाएक शुरू हो आइ बारिश के कारण तट को छोडने लगे थे। पॉच मिनट बाद विवेक उस विस्तृत ओर लबे तने तट पर अकेला था। जॉगिग करते दो-तीन लोग सामने से गुजरकर फिर ओझल हो गए थे। वह अपने सामने की लालिमा को छॅटते हुए देखता रहा। उसके लिए हमेशा यह घडी सबसे ज्यादा सुकून देनेवाली होती थी।

लेकिन इस बार उसके भीतर उस सुकून की जगह एक अधीरता थी। उसन घर पर किसी को कुछ नही बताया था, इस अनजान और अद्‌भुत निमत्रण पर पहुँच आया था। मन मे डर जैसा कोई भाव था, पर उससे अधिक तेज थी उसके अपने भीतर की जिज्ञासा। कल रात वह देर से सो सका था। सोचता रहा था अपने रेडियो से कौंधकर निकली उस आवाज और आकाश पर के उस रहस्यमय प्रज्वलित गोले के बारे मे। उडन तश्तरियो की कहानियो से कभी वह बहुत ही प्रभावित था, पर समय के साथ उसे कपोल-कल्पित चीज मानकर अपने को उस सम्मोहन से मुक्त कर लिया था। कल रात घटो तक वह यही सोचता रह गया था कि जो उसने देखा था वह किसी दूसरे उपग्रह से पहुँची कोई उडन तश्तरी तो नही थी और वह अजीब शोर, जिससे रेडियो की फ्रीक्वेसी खडित हो गइ थी, क्या किसी अतरिक्ष यात्री की आवाज थी ? इसका उत्तर न तो उससे 'हॉ' मे बन पडा था ओर न ही 'ना' मे।

और जब नीद आई थी कइ करवटो के बाद, तो मुद्‌दत बाद उस देखा था सपनो मे। एकदम उसी रूप मे, जिस रूप मे लगभग बीस वष बाद वे दोनो जीवन मे पिछली बार मिले थे। वह उस नीली कमीज को कैसे भूल सकता था जो रोही ने उसके उस मित्र को नए साल की खुशी के अवसर पर भेट की थी। विवेक के लिए वह कमीज नीले रग की न होकर अस्ताचलगामी सूर्य के रग की थी और उसमे

सूरज के उस रग की ठडक के बदले धधकते अगारो का एहसास था। उसका मित्र सरकारी नौकरी मे लग गया था और विवेक गन्ने की कोठी मे मजदूर-का-मजदूर ही रह गया था। रात के सपनो मे वह हू-ब-हू वैसा ही था।

वह विवेक से पूछ बैठा था, 'यार, तुमने मुझे यह बताना आवश्यक क्यो नही समझा कि तुम भी आखिर सरकारी नौकरी मे लग ही गए ? तुमने तो सचमुच बहुत कम समय मे अपने को कुछ-से-कुछ बना लिया। लगता है, रोही की वह बात तुम्हे लग गई होगी, जब उसने तुमसे कहा था कि चाहने पर तो गरीब-से-गरीब आदमी भी पढ-लिखकर कुछ-से-कुछ बन ही जाता है।

सपने मे सारी बाते विवेक के मित्र ने ही कही थी। उसने बहुत सी बाते की। लगा था कि पीछे छूटे उन सभी महीनो और वर्षो की बात वह एक ही बार मे कर लेना चाह रहा था। उसकी कुछ बातो से विवेक को डर लगने लगा। ऐसा लगा था कि उससे बाते करते-करते वह कही उसे खजर न मार बैठे। लेकिन बीच-बीच मे जब उसके होठो पर पुरानी मुसकानो को थिरकते देखता तो उसका वहम मिट जाता। फिर भी, न जाने क्यो विवेक उससे बात नही कर पा रहा था। दरअसल, वह उसे बात करने का अवसर ही नही दे रहा था।

न जाने कैसे वे दोनो मुडिया पहाड की चोटी पर पहुँच गए थे, जहाँ से पूरे मॉरीशस को उन्होने दूर तक फैले हुए देखा, पर हरे रग मे नही, जैसा उसे होना चाहिए था। वह भूरे और मटियाले रगो के बीच का एक रग था, जिसमे दोनो ने पूरे देश को लिपटा हुआ पाया था। सारा कुछ स्थिर था। न पत्ते हिल रहे थे, न कोई आवाज थी। एकदम सन्नाटा। विवेक फिर उससे डर गया था। लगा कि उसका मित्र उसे पीछे से धकेलकर ठहाके लगा बैठे। फिर विवेक की माँ सामने आ गई थी और विवेक हैरान रह गया था। उसका मुँह खुला रहकर भी उस वाक्य को अपने से बाहर न कर सका कि मेरी माँ तो मर चुकी है, फिर वह हमारे सामने कैसे आई ? वह इस तरह हँस पडा था जैसे वह उसके अनपूछे प्रश्न को ताड गया हो। विवेक ने माँ से बात नहीं की। दूसरे क्षण दोनो मित्र पहाड से नीचे उतरे। विवेक को ऐसा लगा था कि अगर अचानक ही उसकी माँ बगल मे आकर खडी न हो जाती तो उसका दोस्त उसे धक्का देकर नीचे गिरा देता। उस खयाल पर उसका मित्र जोरो से हँस पडा था। उसकी हँसी से मैनाओ का एक झुड किसी पतझड हुए पेड से फडफडाकर उड गया था। बडा भयावह था वह सपना। उसमे विवेक ने यह भी देखा था कि वे सभी मैना, जो उड गई थीं, एकाएक सभी एक-दूसरे से मिलकर एक काली चट्टान की तरह उडकर उस तक आई थीं, और

सामने के धुँधलके से बालू पर अपने हलके कदमो के निशान को छोडते हुए विवेक एकदम उस जगह पर पहुँचा, जहाँ हर शुक्रवार की शाम को लोग अपनी-अपनी अँगीठी के अगारो पर खाना तैयार करते और लहरो की थिरकन के बीच खा-पीकर घर लौटते थे। छह बजने मे अभी पाँच मिनट बाकी थे। उसे लगा कि या तो उसकी घडी अचानक रुक गई थी या सपने की बातो को उसने मिनट भर मे ही सोच लिया था। उसने अपनी घडी की ओर दुबारा देखा। केवल दोनो चमकती सुइयाँ ही दिखाई पड रही थी। छोटी सुई स्थिर थी। बडी स्थिर दिखती हुइ भी चल रही थी, पर वह ग्यारह को पार कर के बारह पर आ ही नही रही थी। लगता था, वैसा करने मे उसे युग लग जाएगा। उसके देखते-ही-देखते वह सुई झटके के साथ बारह पर पहुँच गई और उसके साथ ही उसने पश्चिमी आकाश से एक प्रकाश को बडी ही विचित्र आकृति मे डूब गए सूरज के ऊपर किसी प्रत्यचा से छूटे बाण की तरह फैल जाते देखा। लगा कि कोई विचित्र यान बिजली की रफ्तार से आगे निकल गया और अपनी रफ्तार की छाप को क्षितिज पर छोड गया। उस अद्भुत बादला की रेखाओ के बीच से उसने एक ज्योति को समुद्र की छाती पर अपनी आभा को फैलाए तट की ओर आते देखा। वह करीब आता गया और उसका गोल आकार स्पष्ट होता गया। प्रकाश रेखा के ऊपर पहुँचकर वह रुक गया। चकाचौंध कर जानवाली उसकी वह रोशनी बुझ गई। उसकी जगह से एक छोटी सी रोशनी तट की ओर बढी। किनारे पर आकर वह रोशनी विवेक से आधे कद की एक मानव आकृति मे बदल गई।

वह भयभीत हो गया। पर चाहकर भी अपने पगो को उठाकर आगे नहीं बढा सका। वह आकृति अपने चारो ओर के हरे प्रकाश मे एकदम स्पष्ट होकर बालू पर उतरी। विवेक ने उसे अपने से लगभग बीस कदम की दूरी पर पाया। तीन-साढे तीन फीट का वह आदमी भूरे रग के लिबास मे था, जो न तो कपडा था और न ही चमडा या लोहा। क्या था, पता नही चला। उसकी दोनो आँखे हरे रग की थीं और किसी दीये की लौ की तरह कपन लिये हुए थीं।

दो बडे स्वाभाविक कदमो के साथ उसके कुछ करीब आकर उसने एक यात्रिक स्वर मे विवेक से सस्कृत मे पूछा, "मुझसे डर तो नहीं रहे ?"

उसके उत्तर से पहले ही वह फिर बोला, "डरने की कोई बात नहीं है। मे मित्र हूँ तुम्हारा।"

अपने उस मित्र को पहचानकर विवेक ने अपने आपसे अपने को कहते सुना, मै आज भी तुम्हे मरा हुआ नहीं मानता, यार। ऐसा मान लूँ तो अपने को हत्यारा भी मानना पडेगा मुझे। उस शाम समुद्र के किनारे जब गगा-स्नान की भारी भीड के चले

जाने के बाद हम समुद्र किनारे ही रह गए थे तो वह तुम्हारा ही हठ था कि हम जगली बादाम के उस पेड के पास जाकर तैरे। मेरे पिता कोला इलाके के नारियल के बगीचे की रखवाली करते थे। डॉक्टर झब्बू के बॅगले के सामने ही मैं उसी बादाम के पेड के नीचे उसका खाना लेकर पहुँचता था। एक दिन जब मै सामने के समुद्र मे नहाने के लिए आगे बढा था तो मेरे पिता ने मुझे रोकते हुए कहा था कि मै कभी भूल से भी बादाम के पेड के सामने तैरने की कोशिश न करूँ, क्योकि वहॉ कुछ ही दूरी पर एक बवडर था। उसमे एक बार तीन मछुओ के साथ एक नाव डूब गई थी।

अभी उस दिन उसके घर चिडियो के पनाह लेने के दो दिन पहले विवेक ने अपनी मानसिक चिकित्सा की गोलियो मे से तीन गोलियॉ एक साथ ले ली थी। उसकी पलके जैसे-जैसे भारी होती गई थी वैसे-वैसे उसके सामने अपने बचपन के वे दिन आते गए। उसके अपने घर के ठीक सामने दस फीट के फासले पर गुलमोहर के दो पेड थे, जो अब नही रहे। एक तो तूफान मे धराशायी हो गया था और दूसरा नए अनजाने कीटाणुओ के द्वारा चाट लिया गया था। कुछ लोग यह सोच बैठे थे कि किसी डायन ने उस पेड पर टॉका मार दिया था, जिसके कारण वह देखते-ही-देखते अपने खिल आए फूलो सहित सूख गया था। पहले लुढक गए उस पेड के नीचे उसके मित्र का पिता अखबार लेकर बैठता था। वह दूसरे विश्वयुद्ध का समय था। उन दिनो लडाई से पैदा हो आई तगहाली के कारण देश के तीन फ्रासीसी अखबार एक ही अक मे छपकर पाठको के सामने आते थे। उसके दोस्त का पिता सरकारी स्कूल की छठी कक्षा तक ही पढा हुआ था। गॉव मे गिने-गिनाए तीन-चार ही ऐसे व्यक्ति थे, जो उतने पढे-लिखे थे। अपने इलाके मे उसका पिता सबसे बडा विद्वान् माना जाता था। वह जब अखबार लेकर गुलमोहर के पेड के नीचे बैठता था तो उस समय शाम का वक्त होने के कारण आस-पास के चालीस-पचास लोग उसे घेरकर बैठ जाते थे। गुलमोहर के दोनो पेडो के सामने, उसके मित्र के घर की बगल मे और एकदम रास्ते को छूता हुआ उन लोगो की एक ताबाजी थी, सिगरेट और तबाकू की एक छोटी सी दुकान। लोगो के उस तरह इकट्ठे हो जाने पर उन लोगो की दुकान की बिक्री बढ जाती थी। इसलिए अखबार की कीमत उसका पिता ही चुकाता था।

जब विवेक के मित्र का पिता अखबार से उन देश-विदेश तथा विशेषकर विश्वयुद्ध की खबरे पढकर लोगो को भोजपुरी मे सुनाता था तो उस समय उसका एक पॉव दुकान मे होता था और दूसरा इस रास्ते पर। तब रास्ता भी क्या था, इस रास्ते का एक-तिहाई चौडा, जिसपर शायद आधे घटे बाद ही कोई बैलगाडी या मोटरगाडी सामने से होकर गुजर जाती थी। बच्चे बडे इत्मीनान से उसपर गुल्ली-

डडा या कबड्डी खेलते नजर आ जाते थे। कभी कुछ बच्चे लट्टू नचाते भी मिल जाते थे तो कभी कुछ चकोतरे को गद बनाकर खेलते हुए। उसका दोस्त उन बच्चा म नही होता था, क्योकि उसके घरवाले मैले-कुचैले बच्चो के बीच जाने से उसे रोकते थे। वह या तो अपनी दुकान के भीतर टॉफियॉ चबा रहा होता या दुकान के पिछवाडे के पेड से कच्ची-पक्की इमलियॉ तोडता। विवेक के उस मित्र को लोग 'भद्दा' कहा करते थे और वह लोगो पर पत्थर फेका करता था। एक बार उसका एक पत्थर विवेक के सिर से जा टकराया था। उसकी चोट का निशान अब भी उसके सिर पर था। इसके बावजूद वे दोनो और भी गहरे दोस्त हो चले थे।

दोनो के बीच कई ऐसी बाते थीं जो भुला दी गई थीं और कइ ऐसी बाते भी थी जो कभी भुलाई नही जा सकी। विवेक के ऑगन से उसका दोस्त आम तोड ल जाता और अपनी दुकान से उसे टॉफियॉ दे जाता था। वे दोनो अपनी कइ चीजो को आपस मे बॉट लिया करते थे। वैसे तो विवेक उसे कम ही दे पाता था और उससे अधिक ले लिया करता था। उन दोनो का वह पहला झगडा पता नहीं उसके मित्र को याद हो या नही, पर विवेक को याद है—रोहिणी को लेकर हुआ था। रोही ने विवेक के लिए लाए हुए पपीते को उसके मित्र की हठ पर उसके सिर पर दे मारा था। और वह इस तरह चिल्लाता रह गया था, गोया उसके सिर से टकराकर छितराया वह पपीता न होकर नारियल हो। तभी से उसके कई मित्र उसे 'मार पपैया' कहकर पुकारने लगे। मित्रो की उस हरकत पर एक दिन जब वह लडकियो की तरह रो पडा था तो उसकी मॉ ने सभी बच्चो को उन लोगो के ऑगन मे खेलने से मना कर दिया था। पर वह रोक दो दिनो से ज्यादा की नहीं थी।

उसी ने विवेक को वह बात बताई थी कि झूनी भौजी की बहन की वह बेटी, जिससे झूनी भौजी के ऑगन मे टकराकर मै गिरा था, उसी के यहॉ रहने लगी थी। विवेक और उसके दोस्त—दोनो को झूनी भौजी जितना प्यार करती थी उतना प्यार तो उसे उसकी मॉ भी नही करती थी—वह कह दिया करता था। लेकिन वे दोनो झूनी भौजी को जितना चाहते थे उतना ही डरते थे उसके पति से। उस दिन विवेक उसके घर के पिछवाडे अमरूद के पेड पर था और उसका मित्र नीचे। विवेक पके अमरूद तोडकर उन्हे छिपाता जा रहा था। तभी वह यह कहता हुआ गन्ने के खेतो की ओर दौड गया था कि झूनी भौजी का पति उनकी ओर लपक रहा है। छह-सात फीट ऊपर की उस डाली से विवेक नीचे कूदा था और अपने मित्र की विपरीत दिशा मे दौड गया। भागने की उस प्रक्रिया मे ही वह रोहिणी से इतने जोर से टकराया था कि वे दोनो खाद के ढेर पर जा गिरे थे। विवेक को चोट नहीं आई थी। दूसरे दिन डर के

कारण वे सूनी भौजी के घर नहीं गए थे—भौजी ने उन्हे बताया था कि रोहिणी को सिर पर चोट आई थी। और जब वह उन दोनो के सामने गई थी तो विवेक का सिर अपने आप झुक गया था। सप्ताह भर बाद जब उसके दोस्त ने यह बताया था कि रोहिणी अपने घर को लौट गई तो विवेक उदास हो चला था। उस दिन जेब से मेढक के बच्चे को निकालकर उसके आगे रख देने के उसके मित्र के उस मजाक से भी उसकी वह उदासी नही टूट पाई थी।

रोहिणी उन दोनो से तीन-चार साल छोटी थी। उन दोनो की उम्र तब दो महीनो के फर्क के साथ बारह-तेरह वर्ष के बीच की रही होगी। गरमी की रातो मे जब विवेक और उसका मित्र तारो को एकटक देख रहे होते थे तो उस समय वह कहा करता था कि भगवान् ने हर आदमी को एक ही जैसे रूप मे बनाया है। और जब विवेक ने पूछा था कि तुम्हे कैसे मालूम, तो वह बोल गया था कि रूपचद साधु ने उसे वह बात बताई थी। उसका यह भी कहना था कि हमारा एक शरीर तो इस धरती पर होता है और दूसरा ऊपर के उन तारो मे से किसी एक पर। और फिर वे जब भी उन तारो को देख रहे होते थे तो एक-दूसरे से यही पूछते रहते थे कि क्या उन तारो की दुनिया मे रहनेवाले उनके उस दूसरे भाग की सूरत सभी कुछ उन्ही जैसी होगी क्या ? विवेक ने तो यह प्रश्न अपनी माँ से भी किया था। पर वह हँसकर चुप रह गई थी।

उसने हठ किया तो फिर वह बोली थी, 'इसमे कोई हैरानी की बात नही है। ऐसा हो भी सकता है।'

और जब उनके पडोस के रमानन चाचा मरे थे तो उन्होने लोगो से यह कहते सुना था कि वह दूसरे लोक मे चले गए हैं। इसपर विवेक ने अपने मित्र से पूछा था कि कही वह उन तारो के देश मे अपने उस दूसरे भाग के यहाँ तो नही चले गए, पर उस दिन तो उसके एक प्रश्न के कारण उसके दोस्त ने अनगिनत प्रश्न किए थे—क्या वहाँ का घर-आँगन एकदम ऐसा ही होगा ? क्या वहाँ भी रमानन चाचा के उस दूसरे भाग की पत्नी लँगडी होगी ? क्या वह भी जगल मे लकडियाँ काटकर कोयला बनाने का काम करता होगा ? क्या उसे भी आल्हा गाने का उतना ही शौक होगा ? अगर सभी कुछ एक जैसा हुआ तो क्या उसकी भी मृत्यु ठीक रमानन चाचा की तरह ही तपेदिक से हुई होगी ? क्या उस लोक मे भी उस लोक की बीमारियाँ होगी ?

उत्तर न तो उनसे बन पडा था और न ही झूनी भौजी से। वह तो यह बोल गई थी कि शिवालय जाएगी तो पुजारी से पूछकर उन्हे बताएगी। पर शायद पुजारी से भी कोई उत्तर नही बन पडा होगा, तभी तो उस बात की चर्चा भौजी ने उनसे कभी की

ही नहीं। विवेक को लगा कि उसके सामने की आकृति का उसपर असर सा होने लगा था। उसने अपने को जमीन से थोडा सा ऊपर पाया।

''तुम शायद भूल गए होगे दोस्त, कि तुम्हारे आँगन के उस आम के पेड की छाती पर रोही ने तुम्हारे नाम के साथ मेरा भी नाम लिख छोडा था। जब मेरी नजर उसपर पडी थी तब तुमने रोहिणी के नाम को तो यो ही छोड दिया था, पर मेरे नाम के आस-पास की छालो को किसी पुराने लोहे के टुकडे से कुरेदकर उसकी जगह कुछ दूरी पर अपना नाम दुबारा लिख दिया था। न तो मैंने उसपर आपत्ति की थी और न ही रोही ने। वैसे तो तुम भी उसे 'रोहिणी' न कहकर 'रोही' ही कहा करते थे और रोहिणी कई बार इसपर आपत्ति कर चुकी थी कि तुम उसे रोही न कहकर उसके पूरे नाम से पुकारा करो। तुम्हे याद है ? तुम कैसे भूल सकते हो ?''

इसपर उसका उत्तर देते हुए विवेक ने अपनी आवाज सुनी—

''तुम कभी बहुत अधिक खुदगर्ज हो जाया करते हो दोस्त, और अपने फायदे की बातो से बाहर की हर बात को आसानी से भुला देते हो। तुम हमेशा गणित के मामले मे अव्वल रहे हो क्या ? जाने क्यो, जब भी मेरे प्रश्न सामने आए हैं तो हर बार तुमने गणित को ऐसा मोड दे दिया है कि हल तुम्हारे ही पक्ष मे रहा है। तुम्हारी ही तरह मैंने कई बार चाहा कि उतनी ही कुशलता मेरे अपने भीतर भी बनी रहे, पर लाख चाहकर भी मै ऐसा नही कर पाया। उस दिन तुम्हारा यह कहना ही सभवत सही था कि तुम्हारी तरह बनिया वश का न होने का ही वह परिणाम था। तुम भली-भाँति जानते हो कि मैं उन लोगो मे से हूँ, जो यह मानकर चलते रहे हैं कि आदमी जन्म से नही, कर्म से कुछ बनता है। मै तो कर्म करके भी वह नहीं बन पाया जो तुम जन्म से आज तक बने रहे। तुम तो गुडियो की शादियो के उन तमाम खेलो मे हाजिर रहकर भी यह भूलते रहे कि रोहिणी की दुल्हन गुडिया ने हर बार मेरे दूल्हे गुड्डे के गले मे ही माला डाली थी। चिढकर जब तुम यह कह जाते थे कि अगर रोही ने तुम्हारे दूल्हे गुड्डे के गले मे हार डाला होता तो तुम उसे लेकर देश-विदेश की यात्रा कर आते। इसपर रोही बोली थी—'छोडो भी। विवेक तो मुझे तारो की यात्राएँ करा लाएगा।'

''मै कभी नहीं जान सका कि वह रोही की ओर से मेरे प्रति प्यार और विश्वास का बोधक था या तुम्हारे प्रति अरुचि का। पर हाँ, उसके द्वारा कही गई वह बात मेरे अपने भीतर की वह बात थी, जिसे बचपन से मैं अपने भीतर सँजोए हुए हूँ और आज भी तारो की यात्रा पर निकल जाने की उस चाह को त्याग नहीं पाया हूँ।

''मैने तुम्हे बार-बार मना किया था कि हम लोग उस ठौर पर न नहाएँ, पर

तुम हठ करते रह गए थे और हम सभी मित्र एकदम नगे कूद पडे थे उन दहाडती लहरो मे। वैसे भी उस दिन हवा तेज थी और समुद्र के बीच बडे-बडे ज्वार-भाटा उठ रहे थे। लेकिन हम तो उनसे खेलते हुए आगे निकलने के आदी थे। कितना आनद होता था उन ऊँची लहरो के साथ नीचे-ऊपर आने मे। हम सभी दोस्तो मे तुम सबसे अच्छे तैराक थे। इसलिए हमे पीछे छोडकर तुम आगे निकल जाया करते थे। उस शाम भी तुम हमसे आगे निकल चुके थे। समुद्र सुनसान था। गगा-स्नान की दिन भर की उस रौनक के बाद सूनापन था। तुम्हे उस ओर तेजी के साथ बढते हुए देखकर जहॉ मेरे पिता ने बवडर का सकेत किया था, मैंने तुम्हे आगे बढने से रोका था। तुमने मेरी बात को अनसुनी कर दिया था। तुम मुझसे इतनी अधिक दूरी पर नही थे कि मे भी तुम तक पहुँच न पाता, पर ऐसा न करके मैने अपने ही स्थान से तुम्हे बवडर की ओर बढने से रोका। पर तुमने किसी की न सुनी थी। आज भी इतने वर्षो बाद मै बार-बार अपने से पूछता रहा हूँ कि आखिर मैने लपककर तुम्हे रोका क्यो नही ? क्या केवल इसलिए कि कुछ दिनो से मैं देख रहा था कि रोही तुम्हारे कुछ अधिक करीब पहुँचने लगी है ? क्या कारण था कि मैने तुम्हे बवडर की लपेट मे आ जाने से रोकने का प्रयास नही किया ?''

विवेक की आश्चर्यचकित ऑखे अपने उस मित्र को अपलक देखती रही। उस धुँधलके मे भी उसके दोस्त का चेहरा दोपहर का प्रकाश लिये चमक रहा था। उसने धीरे से कहा, ''तुम्हे मेरे सस्कृत-ज्ञान से आश्चय हो रहा होगा। रोही को तो और भी होता। खैर, छोडो इसे। आओ, चले। वर्षो के बिछडे फिर साथ रहने का अवसर पा रहे है।''

विवेक को भयभीत और ठिठका हुआ पाकर उस हरी ऑखोवाली आकृति ने कहा, ''क्षितिज पर विमान हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। तुम रोही को उसकी इच्छा के अनुसार तारो का भ्रमण नही करा सके तो कोई बात नही, उससे वहॉ मिल तो सकते हो। आओ दोस्त, देर हो रही है।''



# कमीज

मै जिस सस्थान मे काम करता था, वही वह इजीनियर था। अपने को हमेशा स्मार्ट रखने की कोशिश मे वह रोज नए लिबास मे दिखता। जब पहली बार उसे मैंने बिना जैकेट और टाई मे पाया, तब वह नीले रग की एक धारीवाली कमीज पहने हुए था। इस कमीज मे उसे तीन दिन लगातार देखकर मुझे हैरानी हुइ।

मिलने पर मेने कहा था, 'तुम्हारी यह कमीज बहुत सुदर है।'

उसकी ऑखो मे चमक आ गई थी। उसने झट कहा था, 'तुम्हे भी पसद है ? मे तो इसे अपने ऊपर से उतारना ही नही चाहता हूँ। रियली आई लाइक इट वेरी मच।'

सचमुच ही तब से उसे हफ्ते मे दो-तीन बार उस कमीज को पहनते देखता रहा। और फिर एक दिन एक अप्रत्याशित घटना घटी। सस्थान का एक चपरासी एक दिन एकदम उसी तरह की कमीज पहनकर आ गया। सयोग से उस दिन मेरा मित्र इजीनियर भी वही अपनी बेहद पसदवाली कमीज पहने हुए था। उस दिन उसकी बुरी हालत थी। सिर उठाना उसके लिए दुश्वार था।

इस घटना के बाद फिर कभी भी मैने उसे वह कमीज पहने नहीं पाया।

एक दिन मैने पूछ ही लिया था, 'क्यो यार! अब तुम अपनी वह सुदर कमीज क्यो नही पहनते ?'

उसका चेहरा लाल हो आया था और घृणा भरे उच्छ्वास के साथ बोला था, 'अब तो साले चपरासी को भी वैसी कमीज पहनने की हिम्मत हो आई है।'



# अहल्या

दो सप्ताह बाद वह अपने गॉव को लौट रही थी।

उसकी मॉ ने उसे यही तो बताया था, वरना उसे क्या मालूम होता कि वह अवधि दो सप्ताह की थी या दो साल की। अस्पताल से उसे लिये टैक्सी तक जाती हुइ उसकी मॉ बोली थी कि एक जरूरी काम मे व्यस्त होने के कारण उसके पिता उसे लेने नही आ सके थे। उसकी बात सुनकर भी उसने अनसुनी कर दी थी। वास्तव मे उसने अनसुनी नही की थी, बात खुद अनसुनी हो गई थी। हॉ, यह जरूर था कि काम का जरूरी होना, या न होना इसपर टैक्सी मे बैठ जाने के बाद भी वह सोचती रही थी।

अस्पताल के भीतर महीने भर बाद जब वह बातो पर गौर कर सकने की स्थिति मे लौटी थी तो उसके जेहन मे यही बात पहले कौधी थी। उसने जो किया था, वह जरूरी था या नही ? पर फिर वह यह सोच बैठी थी कि वह सवाल किसके लिए था। अपने लिए था या अपने पति के लिए ? किसके किए हुए की जरूरी होने या न होने की बात थी वह ?

फिर जब मॉ टैक्सी मे उससे बाते करने लगी थी तो उसने अपने प्रश्न को अनुत्तरित छोड दिया और जब मॉ के चुप होने पर उसे अपना प्रश्न अनुत्तरित प्रतीत हुआ तो उसने मन-ही-मन सोचा—कैसा प्रश्न, कैसा उत्तर ? क्या जरूरी है सभी उत्तर प्रश्न के बाद ही आऍ और सारे प्रश्न उत्तर से पहले ? वह टैक्सी मे अपने पति के बारे मे नही सोच रही थी। लेकिन जब उसकी मॉ ने उसे बताया कि उसके बच्चे को उसका पति विमल अपने यहॉ न रखकर उसे नानी के हवाले कर गया था तो माधुरी अपने पति के बारे मे सोच उठी। विमल का उस दिन का वह उत्तर भी तो प्रश्न से पहले आ गया था। वह एक ऐसा उत्तर था जिससे माधुरी के भीतर अनगिनत प्रश्न कौंध उठे थे। और वे ऐसे प्रश्न थे, अपने आपसे, कि उनमे से किसी एक का भी उत्तर स्वय को माधुरी नहीं दे पाई थी। पर अपने आपसे, अकेले मे, हाथ को हाथ न सूझनेवाले कमरे के उस घटाटोप मे उसने सवाल किया था, 'माधुरी। क्या इसी घडी

के लिए तुमने अपने माँ-बाप तथा परिवारो से बगावत की थी और उनके न चाहने पर भी तुम उसे अपना पति बना बैठी थीं ?'

तभी उसे खयाल आया था कि वह तो प्रश्न न होकर हकीकत थी। उस निर्णय के समय की उसकी सबसे बडी हिम्मत थी, उसके जीवन का सबसे बडा यथार्थ। पर जब ज्वालामुखी का विस्फोट हुआ था और जब उसे लगा था कि यथाथ आखिर मिथ्या मे कैसे परिवर्तित हो सका था ? कही उसी ने परिभाषा की भूल तो नही की थी ? कही अपने जीवन की सबसे बडी मिथ्या को वह यथार्थ के रूप मे स्वीकार तो नही कर गई थी ?

टैक्सी उसके घर के सामने रुकी।

दो साल बाद वह अपने घर लौटी थी। माँ की बात पर विश्वास कैसे नही कर पाती। उसे अस्पताल का वह दो सप्ताह न तो लबा लगा और न ही छोटा। उसने अपने मायके के आँगन को देखा। सामने के घर को देखा। दोनो उसे न तो अपने प्रतीत हुए और न ही पराए। उसके पिता, उसका बडा भाई, उसकी भौजी और उसकी छोटी बहन—सभी घर से बाहर आकर उससे मिले। माधुरी को उस मिलन मे न तो ठडक का एहसास हुआ और न ही गरमी का। सभी लोग कुछ-न-कुछ बोल रहे थे। पर उन मिले-जुले स्वरो के बीच से उसने एक आवाज सुनी। शायद पडोस की कोई महिला बोल गई थी, "माधुरी को नया जीवन मिला।"

उसे लगा कि उसके सामने तो कुछ भी नया नहीं था। पुराना भी कुछ नहीं था। अपनी एक अध्यापिका की बात उसे याद आ गई, 'नया उसे ही कहा जा सकता है जो हमेशा नया हो। आज का जो नया कल पुराना हो जाता है, उसे 'नया' क्यो कहा जाए।'

माधुरी उस समय न तो अपनी अध्यापिका की उस बात को समझ पाई थी और न उसके बाद कभी समझ पाई। एक दिन इस बात को लेकर वह अपनी सहेलियो से पूछ बैठी थी, 'नई दुनिया, नया सूरज, नई बात, नए लोग, नई रोशनी। कहाँ है नया ? दुनिया, सूरज, बात, लोग, रोशनी सभी तो वे ही हैं जिन्हे हम हमेशा से देखते रहे है। ये नए कैसे हो सकते हैं ?'

माधुरी ने चाहा कि वह रुककर बोल जानेवाली से पूछे कि अगर यह मेरा नया जीवन है तो क्या अब तक मैं पुराने और पैबद लगे चिथडे जीवन को जीती आ रही थी ?

पर वह चुप रही। लोगो के हाल-चाल पूछने पर भी खामोशी के साथ वह दहलीज तक पहुँची, वही पुरानी दहलीज जिसे उसने कभी विमल के साथ लाँघकर

जिस दुनिया मे प्रवेश करके रही थी उसे भी लोगो ने नई दुनिया का नाम दिया था। उसके बचपन की सहेली रूपा मुसकराती हुई सामने आई और माधुरी को अपनी बॉहो मे जकड लिया। माधुरी न तो मुसकराई और न ही अपनी बॉहो को बॅधने दिया।



दो सप्ताह पहले वह अपने पति, बच्चे और सास-ससुर के अनजाने मे घर से बाहर हुई थी। उसने तीन दिन पहले रूपा को फोन किया था। बोली थी, 'रूपा। मैं तुमसे मिलना चाहती हूॅ।'

उसकी लडखडाई हुई आवाज और उस आवाज से जाहिर होनेवाले दर्द को अनुभव कर रूपा ने हेरान होकर उससे जानना चाहा था कि आखिर बात क्या थी। माधुरी ने यह कहकर फोन रख दिया था कि फोन पर वह कुछ नहीं बता सकती, सीधे उसके घर पहुॅचकर ही उससे बात करना चाहती है। सवा घटे बाद माधुरी अपनी सहेली के सामने थी। उसे लिये रूपा ऊपर के कमरे मे चली गई थी। यह वही कमरा था, जिसमे माधुरी ने दो साल पूर्व रूपा को विमल के बारे मे पहली बार बताया था। मात्र तीन महीने की उस दोस्ती के बारे मे, जो प्यार मे बदल गई थी।

माधुरी ने बाते पूरी भी नही की थी कि रूपा बोल उठी थी, 'पर माधुरी, यह कैसे सभव हो सकता है ?'

'सभव हो गया, रूपा। हम दोस्त से प्रेमी बन गए हैं।'

'मैं तुमसे इस सबध की बात नही कर रही हूॅ। मेरा मतलब किशन से है।'

'क्यो ? तय हुई शादियॉ और मॅगनियॉ तोडी नही जा सकती ?'

'तोडने को तो मदिर, मसजिद और गिरजा भी तोडे जा रहे है, पर तुम तो रिश्ता तोडने '

'नही रूपा, रिश्ता अभी बना ही कहॉ, जो तोडने की नौबत पैदा हो। मै तो उस बधन को तोडने की बात कर रही हूॅ, जिससे मुझे किसी के साथ बॉध दिया गया था।'

'तुम्हारी रजामदी के बाद।'

'मेरी खामोशी के बाद। इनकार से थककर मेरे चुप हो जाने को मेरी स्वीकृति मान ली गई थी।'

माधुरी के किशन के साथ ब्याह का डेढ महीना रह गया था। निमत्रण-पत्र छपकर आ गए थे। परिवारो मे मौखिक न्योते देने भी शुरू हो गए थे, जब एक रात अचानक किसी को कुछ बताए बिना माधुरी अपने घर से बाहर आकर विमल की कार मे बैठ गई थी। दूसरे ही दिन बाद सिविल स्टेट्स ऑफिस मे पहुॅचकर दोनो ने

दो गवाहो के बीच सिविल मैरेज कर ली थी।

और यह खुशखबरी माधुरी ने फोन पर सबसे पहले रूपा को देते हुए कहा था, 'तुम जो नही कर सकी वह मैं करके रही। मुझे निर्णय लेने का अधिकार नहीं था। बस, सिर झुकाकर आज्ञापालन कर जाना मेरा कतव्य था। मैं निणय लेकर रही ओर अपनी पसद के व्यक्ति को अपना जीवनसाथी बनाकर रही। तुम भी ऐसा कर गइ होती तो आज ।'

उधर से फोन पर रूपा बोली थी, 'माधुरी। एक बात मेरी समझ मे नही आ रही है। तुम अपने ब्याह की खुशखबरी दे रही हो या मनोज को खो बेठने का ताना दे रही हो मुझे?'

'तुम बुरा मान गई। मैं तो केवल यह बता रही हूँ कि मैं तुमसे कम पढी-लिखी होकर भी तुमसे अधिक साहसी आर आजाद साबित हुइ। मे मजबूर होने के लिए तैयार नही '

'मजबूर तो तुम भी रही, मधु। हॉ, हम दोनो की विवशताओ मे अतर जरूर था। तुम मजबूर थीं अपने मॉ-बाप, हित-मित्र, सगे-सबधी—सभी के खिलाफ जाने के लिए। तुम्हारी मजबूरी थी अपने और अपने नए साथी की खुशी। मजबूर तो तुम भी थी। हर हालत मे जीतकर रहने की मजबूरी।'

एक साल बाद वह अपनी सहेली के घर के उसी कमरे मे अपनी मजबूरी का इकरार करने पहुँची थी। उसके मुँह से वही पहला वाक्य निकला था, 'मैं मजबूर होकर ऐसा कर रही हूँ।'

'इस बार पति के दोस्त को प्रेमी बना लेने की मजबूरी?'

'विमल का वह इजीनियर दोस्त एकदम सलमान खॉ जैसा है। मुसकराता भी उसी तरह है, बोलता भी उसी ढग से है। सभ्रात परिवार का तो है ही, खुद इतनी सौम्यता लिये हुए है कि लगता है, इस धरती का न होकर किसी दूसरे प्लानेट से आया हुआ जीव है। कल उसके साथ मैं उसके बॅगले पर पहुँची थी। क्या बॅगला है। बॅगले से बाहर आते ही दूसरा पग दूध जैसे सफेद बालू से टकराती समदर के तट की फेनिल लहरो मे जा मिलता है। सबसे बडी बात तो यह है कि वायलिन इतना अच्छा बजाता है वह कि लेडी डायना जिदा होती तो उसके कधे पर सिर रखकर खो जाती। विमल की एक मनपसद धुन उसने विशेष रूप से मेरे लिए बजाई थी। ही इज ग्रेट।'

उसके दो ही महीने बाद माधुरी ने रूपा को फोन करके उसे पोर्ट-लुई के करी पूल्ले रेस्तरॉ मे लच पर बुलाया था। दोनो खाने का ऑर्डर देकर जूस पी रही थीं। तब माधुरी ने अपने चेहरे पर आधे गर्व और आधे पछतावे का भाव लाकर रूपा से कहा

था, 'तुम मेरी इतनी जिगरी हो, फिर भी कल घटी घटना को तुम्हे बताते हुए मै झिझक रही हूँ।'

'अरे, तुमसे तो किसी की हत्या भी हो जाए तो सबसे पहले मुझे ही आकर बताओगी।'

इधर साल भर से दोनो दो अलग-अलग कॉलेजो मे काम करने लगी थी, जिसकी वजह से उनका मिलना भी कम हो गया था। तब से वे दोनो दो ही बार मिल पाई थी और दोनो बार घर के बाहर उन दोनो अवसरो पर माधुरी ने बाते राजीव से ही शुरू की थी। आज भी रूपा इस बात के लिए घर से तैयार होकर आई थी कि यहाँ भी बात राजीव से ही शुरू होकर रहेगी।

और हुआ भी वेसा ही था।

'कल पूरा दिन राजीव के साथ बीता।'

फिर वह अपने हाथ के गिलास पर बर्फ की ठडक से पैदा हो आए वाष्प पर अँगुलियाँ फेरती रही। रूपा को देखे बिना वह आगे बोली थी, 'मैंने जीवन मे पहली बार '

फिर खामोश हो गई थी। उसकी अँगुलियाँ अब भी गिलास पर दौड रही थी। फिर से बोली थी, 'हम दोनो राजीव के उस शानदार बँगले मे थे।'

इस बीच रूपा अपने गिलास का आधा जूस पी चुकी थी, जबकि माधुरी का गिलास अब भी उसके होठो तक नही पहुँच पाया था। उसे मेज पर रख़कर उसने रूपा को इस बार पछतावे या झिझक भरी नजर से न देखकर फख्र के साथ देखते हुए कहा था, 'बँगले का चौकीदार शैंपेन की बोतल के साथ दो गिलास मेज पर रखकर जाने को हुआ ही था कि राजीव ने उसे रोककर कहा कि वह रसोइए से कह दे कि अब से तीन घटे बाद ही हमारे लिए खाने का बदोबस्त करे। और हाँ, उसे यह भी बता देना कि हम लोग डाइनिग हॉल मे नहीं, इसी कमरे मे खाना खाएँगे। फिर मुझसे पूछा, 'रूपा, तुमने कभी शैंपेन पी है ?'

'देखा तक नही है।'

'मैंने कल पहली बार शैंपेन पी और वह भी अपने उस प्रिस के हाथ से। जब वह मेरे लिए दूसरा गिलास उडेलने लगा तो मैंने उससे कहा—राजीव, मै आज का यह दिन पूरे होश-हवास के साथ जीना चाहती हूँ। मुझमे खुमारी आने लगी थी फिर भी मैं एक-एक पल को बिना किसी तरह की खुमारी लिये देखने की चाहत पाले हुए थी। मेरे इनकार करने पर राजीव ने भी अपने लिए दूसरा गिलास नहीं भरा।'

अपने हाथ के गिलास को खाली करके उसे मेज पर रखने के बाद रूपा ने

कहा था, 'क्या ऐसा नही हो सकता हे कि कल की वे सारी बाते तुम विस्तार मे न कहकर उसका सार ही सुना दो ?'

'अरी रूपा! मैं तो चाहकर भी उन सात घटो को विस्तार से नही सुना पाऊँगी। उन सुनहले पलो का वर्णन करने के लिए मैं शब्द कहाँ से लाऊँगी ?'

'मैं तुम्हारा काम आसान किए देती हूँ। मैं सवाल करती जाऊँगी और तुम जवाब देती जाओ। पहला सवाल—तुम दोनो मे से किसने किसको पलग तक ले जाने का साहस किया था ?'

'साहस तो मुझे ही करना पडा था।'

इससे आगे रूपा ने दो और सवाल करके पूरी कहानी सुन ली थी। उसके बाद उसने उत्तर की कोई उम्मीद न रखते हुए अपनी सहेली से एक और प्रश्न पूछा था, 'अपने दोस्त के साथ धोखा करने से वह नही चूका और तुम भी अपने पति के साथ धोखा कर गइ ?'

इस प्रश्न का उत्तर न तो माधुरी ने दिया और न ही रूपा ने उससे उत्तर का तकाजा किया था। खाने के बाद दोनो फ्रूट-सलाद डेसर्ट म ले रहे थे, जब माधुरी को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपनी सहेली की नजर मे गुनहगार प्रमाणित हो गई हे। तब अपनी वकालत करते हुए उसने कहना चाहा, 'अगर तुम्हारा पति तुम्हारे भीतर चाह और दहक पैदा कर सकता है तो फिर उसमे उस चाह और दहक को शात करने की शक्ति भी तो होनी चाहिए। गौरैया की तरह या कूदा, यो झटक गया। जितनी तेज गति के साथ मेरे ऊपर झपटता है, उसी गति के साथ सतुष्टि पाकर लुढक जाता है और मे भीतर-ही-भीतर दहकती रह जाती हूँ। कब तक ऐमा करती रहती ? कब तक '

पर उससे अपनी वकालत नहीं हो पाई थी।

बात कह जाने की चाह उसके भीतर बफ की तरह जम गई थी।



साहस के जिस जुनून मे माधुरी ने अपने मॉ-बाप के घर को छोडा था उसी साहस के साथ वह अपने ससुराल को नही छोड पाई थी। वहॉ से निकलने के लिए उसे साहस की आवश्यकता महसूस नही हुई थी। उसे जीवन से हार मान लेना पडा था। दो दिन पहले राजीव ने साल भर के प्यार को पल भर मे महज जिस्म की भूख साबित करते हुए कहा था, 'मेरी शादी एक बहुत सभ्रात परिवार मे सौम्यता से भरी एक लडकी से होने जा रही है। तुम्हारे साथ इस साल भर मे मैंने बहुत सुनहली घडियॉ बिताइ हें। आज से हम उन घडियो को अतीत मानकर अपने से नोच फेककर

भविष्य की सोचे।' राजीव तो बोलता गया था, पर माधुरी उन सभी बातो को नहीं पाइ थी। किसी तरह उस भव्य बॅंगले से वह घर लौट तो आई थी, पर अपन कमरे मे बद कर लेने के बाद उसे लगा था कि वह अपने बदन को वही समुद्र वि छोड आई थी। फिर लगा था कि नही, वह अपने बोझिल शरीर को ढोती हुई घर तो ले आइ थी, पर अपनी धडकने छोड आई थी बॅंगले के उस बद कमरे मे, कभी उसने ऑखे बद करके जन्नत की सैर की थी। उसका तीन महीने का ब बगल के कमरे मे रो रहा था। उसे लगा कि वह आवाज पडोस के मुहम्मद भा घर से आ रही थी। तीन महीने पहले अमीना ने भी तो बच्चे को जन्म दिया सभी बच्चो का रोना तो एक जैसा होता है, न सुर का भेद, न मजहब का, न रग न ही भाषा का अतर। पर नही, वह रोदन अमीना के बच्चे का नही था। अमीन बच्चे का होता तो उसके अपने स्तन का दूध क्यो टपक जाता ?

वह झपटकर दूसरे कमरे मे पहुॅंची। उससे आगे उसके सास-ससुर का क था। गलियारे के उस दूसरे भाग मे उसके जेठ और गोतनी का कमरा था। र घर मे ही थे। सभी बच्चे को रोते हुए सुन रहे थे। कोई आगे नही आया। तीन पहले तो उसके सास-ससुर, जेठ-गोतनी, भतीजे-भतीजी—सभी राकेश को गो लेने के लिए आपस मे छीना-झपटी करने लगते थे। उसकी तीन साल की भत तो बच्चे के पास से हटती ही नही थी। राकेश भी सबसे अधिक उसी से हॅंसता उसकी गोद मे जाने के लिए मचल उठता था। पर यह सब तो दो दिन पहले की थी। दो दिन पहले जब विमल की मॉ ने माधुरी के मुॅंह पर थूका नहीं था। विमल ने उससे यह नही कहा था कि वह अपने अवैध बच्चे को इस घर से ले निकल जाने मे देर क्यो कर रही है।

अपने बच्चे के पास पहुॅंचकर माधुरी उसे देखती रही। उसके हाथ आगे ब बच्चे को उठाना चाहा, पर यह सोचकर उसने अपने हाथो को पीछे कर लिया उसके पास गोद थी ही कहॉ। सुबह उसके पति ने तीसरी बार उससे कहा था, ' हरामी को यहॉ से लेकर कब निकलोगी ? आज शाम मेरे लौटने के बाद अगर और तुम्हारी यह नाजायज औलाद मुझे यहीं दिखाई पड गई तो मै धक्के देकर त् घर से बाहर निकालकर रहूॅंगा।'

तीन साल की उषा उसकी बगल मे आकर खडी हो गई थी। माधुरी इसका पता तब चला जब उसके हाथ को पकडकर उसे हिलाते हुए उषा ने कहा 'चाची। मुन्ना रो रहा है।'

गलियारे से ही चिल्लाती हुई उषा की मॉ भीतर आ गई थी और अपनी ब

की बॉह पकडकर उसे कमरे से घसीट ले गई थी। माधुरी ने सलाखो से घिरे लकडी के छोटे पलग से अपने बच्चे को उठाया था। उसे बॉहो मे लिये बगल के कमरे म लौट आइ थी। उसने सामने की मेज पर रखी गोलियो की ओर देखा था, फिर पानी भरे गिलास की ओर। खडी-खडी उसने चोली के भीतर से अपने स्तन को बाहर किया था। उसे मुँह मे लेते ही बच्चे का रोना बद हो गया था।

दस मिनट बाद जब उसने मेज पर रखी उन गोलियो को उठाकर मुँह मे रख लिया था तो भी उसकी बॉहो मे चिपका बच्चा दूध पी रहा था। जब उसने पानी पीकर उन गोलियो को गले से नीचे उतारा तो बच्चे ने दूध पीना छोडकर अपनी मॉ की ओर देखा था और पच्चीस मिनट बाद जब विमल कमरे मे दाखिल हुआ था ता माधुरी फर्श पर पसरी हुई थी और उसका बच्चा उसके मगलसूत्र से खेल रहा था।



अपने मायके के घर की दहलीज को पार करके माधुरी भीतर पहुँची। कमरे के भीतर के चार-पॉच लोगो मे से सभी ने बारी-बारी से माधुरी से पूछा।

किसी ने धैर्य धराया, "कैसी हो, बेटी?"

"तुम अब मॉ के घर लौट आई हो। सभी कुछ ठीक हो जाएगा।"

"बच्चे का मुँह देखकर भगवान् ने तुम्हे नई जिदगी दी है।"

और जिनकी नजरो मे माधुरी चरित्रहीन थी, उन्होने कुछ नहीं कहा। अपनी बाते आगे के दिनो के लिए रख लीं।

सोफे पर बैठकर माधुरी ने रूपा की ओर देखा। एक सूखा हुआ सवाल कर गई, "कैसी हो, रूपा?"

बिना कुछ कहे रूपा ने उसके गालो को चूम लिया और उस लबे सोफे पर माधुरी की बगल मे बैठ गई। माधुरी ने उसके हाथो को अपने हाथो मे लेकर अपनेपन का एहसास किया और मन-ही-मन बोला, "कोई तो है जो अनजाना नही है।"

माधुरी की भाभी अपनी गोद मे राकेश को लिये हुए भीतर आ गई और बोली, "अब अगर मैं तुम्हे यह बच्चा न लौटाऊँ तो?"

माधुरी अपने बच्चे को देखती रही। कुछ नहीं बोली।

उसकी भाभी ने ही आगे कहा, "चॉद जैसे इस मासूम को अकेले छोड जाने का साहस तुम कैसे कर पाई, मधु?"

माधुरी सोच उठी—यह सारा कुछ साहस का ही तो परिणाम है।

"चलो, पहले इसे दूध पिला दो।"

आधे घटे बाद माधुरी कमरे मे अपने को सिर्फ रूपा के साथ पाकर उ लिपटकर रो उठी।

दूसरे आधे घटे बाद माधुरी ने रूपा से कहा, "रूपा! अगर मै तुमसे यह कि राकेश विमल का बेटा है, तो मानोगी?"

"सच्चाई को सच न मानूँ?"

"तो फिर एक बाप अपने खून को पराया खून कैसे मान बैठा?"

"हो सकता है, अपने ऊपर विश्वास न होने के कारण।"

"या मुझे मेरी भूल की सजा मिल रही है?"

"तुम मानती हो कि तुमसे भूल हुई है?"

"भूल तो हुई ही है, रूपा, पर शायद "

"चुप क्यो हो गई, मधु?"

माधुरी सोच उठी कि विमल ने अगर अपनी जरूरत के साथ अपनी पत्नी भी जरूरत का खयाल किया होता तो यह भूल उससे हो पाती?

पर वह बोल नहीं पाई।

# तिलमिलाहट

जब वह महीने भर का था, तभी से लोग उसे 'ची मिशेल' कहकर पुकारत थे। वह प्रेमिए कोमिनियो के योग्य हुआ था तो उसकी माँ के कुछ परिचित उससे कहते रहे थे कि वह तो कभी गिरजाघर जाती नहीं, पर अपने बच्चे को अपना जैसा न बनने दे। सिमोन इस बात के लिए लगभग तैयार भी हो गइ थी। लेकिन जब उसने एक व्यक्ति को यह कहते सुन लिया था कि 'किसा बातार ला पू आल फेर दॉ लेग्लीज', तो सिमोन भी अपने आपसे बोल गई थी। सचमुच, अगर उसका बेटा दोगला माना जाता है तो वह गिरजाघर को अपवित्र करने वहॉ क्यो जाए। इलाके के पादरी ने उसे समझाया था कि भगवान् का घर नो इसीलिए है कि लोग शुद्ध हो सके।

सिमोन अपना इरादा बदलकर अपने बच्चे के उस प्रथम सस्कार के लिए पैसे जुटा पाती, सफेद कपडे तैयार कर पाती, इससे पूर्व उसके उक्त हितैषी रोजे ने उसे वैसा करने से रोक लिया था। रोजे उस समय से उसका हितैषी था जब से सिमोन अपने बदन पर गर्व कर जाने की अधिकारी थी। तब तक जब तक रोजे के द्वारा लाए गए शारीरिक सुदरता के पारखी सिमोन को जूलेखा और रेशमा से अधिक आकर्षक पाते थे, अधिक कमसीन। वे दिन पच्चीस-तीस या अधिक-से-अधिक पच्वास रुपए के दिन थे। समय के साथ भाव दो से तीन सौ तक के हो चले थे। यह दूसरी बात थी कि ईमानदार खरीदार मास के स्वाद से खुश होकर पच्चीस-पच्चास ज्यादा दे जाते थे, पर ऐसा बहुत कम अवसरो पर होता था। अब तो समय जब तीन से पॉच सौ का हो चला था और माल पर निर्भर करके हजार रुपए तक पहुँच चुका था, तो सिमोन को तीसरे दरजे की करार दिया गया था।

वह अपने इस दरजे पर पहुँच जाने का कारण कुछ हद तक ची मिशेल को भी मानती थी। धधे की शुरुआत थी वह। घर की बेलमामॉ बूढी फ्रास्वाज ने तो शुरू से ही उसे यह नसीहत दे रखी थी कि सावधानी बरतने मे कभी भूल मत करना, पर उससे भूल हो रही थी और उसका पता उसे तत्काल नहीं लगा था। उसे वह बरसात

की रात आज भी याद थी। वे उन तीन लोगो मे से किसी के चेहरे को आज करके पहचानने मे तो असमर्थ थी, पर उस बॅगले के उस कमरे की एक-एक च उसे इस तरह याद थी, गोया कल की बीती बात हो। उस तरह का पलग उसने f कभी नही देखा। उन तीनो मे से एक ने बताया था कि वह आबनूस की लकडी पलग था और उसपर रीलाक्स मास्टर का बिस्तर था। सिरहाने की दीवार पर फीट लबा और चार फीट चौडा आईना था। उसी तरह का आईना बाई ओर की दी पर भी था। उसी दीवार पर ऊपर चार हाथोवाले किसी हिदू देवता की तसवीर ः उसपर नजर पडते ही सिमोन ने अपने पहले गठीले बदनवाले उस तीस वष व्यक्ति से कहा था कि वह बत्ती बुझा दे। उसने कारण न समझकर कहा था कि व औरते अँधेरे के लिए होती हैं, तुम उनमे से नही हो।

कमरे की दूसरी दीवार पर मॉरीशस के किसी समुद्र-तट के फोटो का ब्ल अप था। शीशेवाली एक अलमारी मे कई देशो की गुडियो का सुदर सग्रह था। न कालीन था, जिसपर सगीत का एक भारतीय साज था, जिसका नाम सिमोन मालूम नही था। उस रात की बढिया फ्रासीसी वाइन और कमरे की मनमोहकता त उसमे फैली सुगध के कारण सिमोन ने अपने को बेसुध पाया था। पर तीनो की एक एक बात को उस बेसुधापन मे उसने अपने जेहन मे अकित कर लिया था। रात के बजे से सुबह के चार बजे के बीच के उस लबे अतराल मे उसने बारी-बारी से मस्त आशिको से अपनी प्रशसा सुनी थी। उसने अपने रात भर के आशिको को क भी अपना सही नाम नही बताया था। वैसे भी बेलमामॉ फ्रास्वाज भी अप 'गेईशाओ' को सही नाम से न पुकारकर अपनी ओर से दिए गए नाम से पुकारती ? 'गेईशा' नामक फिल्म देखने के बाद वह उन्हे जापानी गुडिया 'गेईशा' कहती ?

उस पहले व्यक्ति ने सिमोन के कान मे कहा था, 'तुम तो आसमान से उत हुई एजल-सी लगती हो।'

दूसरा उसे बॉहो मे कसने के बाद बोला था, 'तुम्हे देखकर तो मजह लिबासवाला भी अपना लबादा उतार फेकेगा।'

तीसरा तब बोला था, जब अपने पहले दौर के अतिम क्षणो पर था, 'इत आनद तो मर्लिन मुनरो भी कैनेडी को नही दे पाई होगी।'

दो महीने बाद सिमोन को इस बात का पता चला था कि उन तीनो मे से क एक उसके अदर अपना नाम लिख गया था, पर वह नाम, जो उसके बेटे को नहीं सकता था, अगर सिमोन सिविल स्टेट्स के एक अफसर के साथ रात नही बिता तो। लेकिन प्राइमरी के बाद सिमोन मे वह दम ही कहाँ बाकी रहा कि वह उ

सेकडरी स्कूल भी भेज सके। वक्त से पहले सिमोन जुलेखा और रेशमा के सामने पहले नबर से तीसरे नबर पर आ गई थी।

चीं मिशेल की मॉ का वह हितैषी भी अब तीसरे नबर पर आ गया था। अब रोजे सभ्रात लोगो की सेवा और मामॉ फ्रास्वाज जैसी ठाटवाली महिला के साथ सबध नही रखता था। अब तो वह सिमोन की तरह मौके की ताक मे रहनेवाला व्यक्ति रह गया था, जिसकी नजर बदरगाह के नाविको और समुद्र-तटो के तीसरे दरजे के सैलानियो पर रहती थी। और फिर, इस नई जानलेवा बीमारी ने तो धधे को और भी चापट कर दिया था। रात मे वह अपने एक साथी के साथ पोर्ट-लुई के बदरगाह के आस-पास घूमकर ग्राहक तलाशता और सुबह दस से बारह बजे तक उत्तर प्रात के समुद्र-तटो पर टुटपुँजिए पर्यटको की ताक मे रहता। बाकी समय वह सीते-लाकीर के एक एकात स्थान पर सात-आठ मित्रो के साथ ताश खलता रहता और कभी सस्ती वाइन और बीयर पीता रहता था। यहीं पर ची मिशेल उसकी बगल मे बैठकर ताश खेलनेवालो की सेवा मे उपस्थित रहता।

जिस वीरान जगह पर इमली के पेड के नीचे रोजे अपने साथियो के साथ किस्मत आजमाने बैठता था, वहॉ से दुकान दूर थी। उन पॉच-छह घटो मे ची मिशेल को पॉच-छह बार दुकान के लिए दौडना पडता था। वाइन और बीयर की हर बोतल पर उसे कभी पैसे दिए जाते थे, पर अब हर खेवे पर। हर बार दुकान जाने के लिए उसे एक रुपया मिलता था। दिन भर मे उसकी छह-सात रुपए की कमाई हो जाती थी और कभी पोकर के खेल मे जीतनेवाला दो-तीन अतिरिक्त रुपए दे जाता तो यह राशि कभी पद्रह रुपए तक पहुॅच जाती थी। खाली बोतले भी कभी-कभार बेचने के लिए मिल जाती थी।

ची मिशेल अपना तेरहवॉ साल पार करने वाला था। आस-पास के सीते, सरकार की बनाई बस्तियो मे जब भी बॉल या सेगा के नाच होते तो वह रोजे के साथ उसमे भाग लेने पहुॅच जाता था। रोजे उससे हमेशा यही कहता रहता था कि हम लोग यहॉ आए और जनमे इसलिए कि नाचते-गाते, मौज मनाते जिदगी को गुजारे। वह कहता, 'ची मिशेल मो गारसो। नू फिन विन ला पू आमीजे, पू शाते, पू दॉसे।' (हम यहॉ मौज करने आए है। हम यहॉ नाचने-गाने आए हैं। सोफे रावान, ढपली को गरम करो यारो।) 'की तो उले ? आला मो दोने। आला मो दोने। आला मो दोने।'

ची मिशेल का सबसे प्यारा सेगा था—'रान मो मारी आगले रान मो मारी।' (मेरे पति को मुझे लौटा दो ए अग्रेजो।)

यह सेगा कभी उसकी मॉ अकेले मे गाती रहती थी। उसकी शादी के दो

सप्ताह बाद अग्रेजो ने उसके पति गासपार को पायोनीर कोर्प्स मे भरती कर लि था। तीन साल के बहाने पॉच साल हो गया था और उसका पति औरो के पतियो तरह घर नही लौट पाया था। और उन्ही दिनो उसकी भेट हो गई थी बेलम फ्रास्वाज से और फिर जब गासपार अपने वतन को लौटा तो अपने घर को नही लौ अपनी बीवी के पास नही लौटा। तब उसके माता-पिता जीवित थे। सिमोन उ कहती रहती थी कि उसकी ससुराल के लोग उसके पति को मिस्त्र मे झूठी चिट्ठि लिख-लिखकर उसे बताते रहे थे कि उसकी बीवी यहॉ औरो के साथ रँगरेलि मना रही है। सिमोन को जो सरकारी पेशन मिलती थी, वह बद हो गई थी। उस शादी जब हुई थी तब वह उन्नीस साल की थी और जब ची मिशेल पैदा हुआ वह पच्चीस साल की हो चली थी। आज वह पैंतीस साल की उम्र मे अपने जवान बनाए रखने की पूरी कोशिश करती, क्योकि मार्मा फ्रास्वाज उससे कह चु थी कि अब मॉगे सोलह से पच्चीस सालवालो की होती है। अपने से अपने अनचाहे सालो को निकाल फेकने के लिए वह अपने को अधिक आकर्षक बनाने प्रक्रिया मे हमेशा लगी रहती थी।

जब वह अपने बेटे से कहती कि अब वह बूढी होने लगी है, तो ची मिश कह उठता, 'नही मॉ। तुम तो मुझे आस-पास की सभी औरतो से जवान और सु दिखती हो।'

सिमोन अपने आपसे कह जाती—काश। ये मर्द भी ऐसा ही सोचते।

ची मिशेल दुकान की सबसे सस्ती जीवे की दो बोतले खरीदकर रोजे अड्डे को लौट रहा था कि रास्ते मे एक अजनबी ने उससे पूछा, "ए गारसो तो पार लामेम ?"

उत्तर मे ची मिशेल ने कहा, "हॉ, मै इधर ही रहता हूँ।"

"रोजे का घर किधर है ?"

"वह इस समय घर पर नही है। मैं वही जा रहा हूँ, जहॉ वह इस सम है।"

"दूर है यहॉ से ?"

"इस सीते के आखिरी घर के बाद।

"यह सरकारी बस्ती तो वहॉ सामने समाप्त हो जाती है।"

"वहॉ से थोडी ही दूरी पर तो रोजे दोस्तो के साथ ताश खेल रहा है।"

यह कहकर ची मिशेल सहम गया। सोचा, कितनी बडी भूल हो गई उसर उसे यह नही बताना चाहिए था कि वे लोग वहॉ ताश खेल रहे है। यह आदमी क

सी आई डी का तो नही।

अपनी भूल को सुधारने के लिए झट कह गया, ''पर वे लोग पैसा नहीं खेलते।''

आदमी कुछ नही बोला। दोनो चलते रहे। इमली के पेड के कुछ करीब आकर ची मिशेल सीटी बजाने लगा। रोजे और उसके साथी ची मिशेल की सीटी सुनकर सजग हो उठे। दॉव पर लगे सिक्को को जल्दी से बटोरकर रोजे ने अपनी जेब के हवाले कर लिया। खेल जारी रहा। रोजे की डॉट का भय अपने मे लिये ची मिशेल ने सहमे हुए स्वर मे कहा, ''तो रोजे सा जीमून ला पे रोद ऊ।''

अपने हाथ के ताश के तीनो अलग-अलग पत्तो को एक के ऊपर एक करके रोजे ने आगतुक की ओर देखकर पूछा, ''क्यो, क्या काम है मुझसे ?''

''दाऊद ने भेजा है मुझे।''

दाऊद का नाम सुनते ही रोजे को उस अजनबी के वहॉ पहुॅचने का मकसद मालूम हो गया। उसने अपने हाथ के पत्तो को नीचे रखते हुए कहा कि वह अपना खेल बद कर रहा है। वह अपनी जगह से उठा और उस व्यक्ति के साथ, जो पचास वर्ष से अधिक का लग रहा था, कुछ आगे बढ गया।

''की ग्राद ऊ बीजे।''

''अच्छा माल, पर बहुत महॅगा नहीं।''

''अच्छा भी चाहते हो और सस्ता भी। कब ?''

''आज रात। दो चाहिए। मेरा एक दोस्त अपनी कार लेकर आएगा।''

''ठीक है। दो के सौ-सौ रुपए होगे। लडकियॉ जब कार मे बैठेगी तभी उन्हे पूरी रकम दे देना होगा।''

''मजूर। गाडी ठीक सात बजे आ जाएगी।''

''अभी हम जिस इमली के पेड के पास थे, वहीं लडकियॉ इतजार करेगी। मेरे हिस्से का चालीस अलग से बनता है।''

''दाऊद ने कहा था, तीस।''

''चलो, यही सही।''

उस आदमी से तीस रुपए लेकर रोजे अपने दोस्तो के बीच आ गया। इस दूरी से भी ची मिशेल ने उसे उस आदमी से रुपए लेकर जेब मे डालते देख लिया था और उसने अपने मन मे महीने पहले उठे एक खयाल को फिर से उठते हुए पाया। पढा-लिखा कम था तो क्या, पर ऐसी बात नहीं थी कि दो जोड दो का हिसाब भी उसे नही आता था। वह अपने उस गणित मे लगा रहा।

सप्ताह बाद अग्रेजो ने उसके पति गासपार को पायोनीर कोर्प्स मे भरती कर लि था। तीन साल के बहाने पॉच साल हो गया था और उसका पति औरो के पतियो तरह घर नही लौट पाया था। और उन्ही दिनो उसकी भेट हो गई थी बेलम फ्रास्वाज से और फिर जब गासपार अपने वतन को लौटा तो अपने घर को नहीं लौ अपनी बीवी के पास नही लौटा। तब उसके माता-पिता जीवित थे। सिमोन उ कहती रहती थी कि उसकी ससुराल के लोग उसके पति को मिस्र मे झूठी चिट्ठि लिख-लिखकर उसे बताते रहे थे कि उसकी बीवी यहॉ औरो के साथ रँगरेलि मना रही है। सिमोन को जो सरकारी पेशन मिलती थी, वह बद हो गई थी। उस शादी जब हुई थी तब वह उन्नीस साल की थी और जब ची मिशेल पैदा हुआ वह पच्चीस साल की हो चली थी। आज वह पैंतीस साल की उम्र मे अपने जवान बनाए रखने की पूरी कोशिश करती, क्योकि मामॉ फ्रास्वाज उससे कह चु थी कि अब मॉगे सोलह से पच्चीस सालवालो की होती है। अपने से अपने अनचाहे सालो को निकाल फेकने के लिए वह अपने को अधिक आकर्षक बनाने प्रक्रिया मे हमेशा लगी रहती थी।

जब वह अपने बेटे से कहती कि अब वह बूढी होने लगी हे, तो ची मिश कह उठता, 'नही मॉ! तुम तो मुझे आस-पास की सभी औरतो से जवान और सु दिखती हो।'

सिमोन अपने आपसे कह जाती—काश! ये मर्द भी ऐसा ही सोचते।

ची मिशेल दुकान की सबसे सस्ती जीवे की दो बोतले खरीदकर रोजे अड्डे को लौट रहा था कि रास्ते मे एक अजनबी ने उससे पूछा, "ए गारसो तो पार लामेम ?"

उत्तर मे ची मिशेल ने कहा, "हॉ, मै इधर ही रहता हूँ।"

"रोजे का घर किधर है ?"

"वह इस समय घर पर नही है। मै वही जा रहा हूँ, जहॉ वह इस स है।"

"दूर है यहॉ से ?"

"इस सीते के आखिरी घर के बाद।

"यह सरकारी बस्ती तो वहॉ सामने समाप्त हो जाती है।"

"वहॉ से थोडी ही दूरी पर तो रोजे दोस्तो के साथ ताश खेल रहा है।"

यह कहकर ची मिशेल सहम गया। सोचा, कितनी बडी भूल हो गई उस उसे यह नही बताना चाहिए था कि वे लोग वहॉ ताश खेल रहे है। यह आदमी क

सी आई डी का तो नही।

अपनी भूल को सुधारने के लिए झट कह गया, ''पर वे लोग पैसा नहीं खेलते।''

आदमी कुछ नही बोला। दोनो चलते रहे। इमली के पेड के कुछ करीब आकर ची मिशेल सीटी बजाने लगा। रोजे और उसके साथी ची मिशेल की सीटी सुनकर सजग हो उठे। दॉव पर लगे सिक्को को जल्दी से बटोरकर रोजे ने अपनी जेब के हवाले कर लिया। खेल जारी रहा। रोजे की डॉट का भय अपने मे लिये ची मिशेल ने सहमे हुए स्वर मे कहा, ''तो रोजे सा जीमून ला पे रोद ऊ।''

अपने हाथ के ताश के तीनो अलग-अलग पत्तो को एक के ऊपर एक करके रोजे ने आगतुक की ओर देखकर पूछा, ''क्यो, क्या काम है मुझसे ?''

''दाऊद ने भेजा है मुझे।''

दाऊद का नाम सुनते ही रोजे को उस अजनबी के वहॉ पहुॅचने का मकसद मालूम हो गया। उसने अपने हाथ के पत्तो को नीचे रखते हुए कहा कि वह अपना खेल बद कर रहा है। वह अपनी जगह से उठा और उस व्यक्ति के साथ, जो पचास वर्ष से अधिक का लग रहा था, कुछ आगे बढ गया।

''की ग्राद ऊ बीजे।''

''अच्छा माल, पर बहुत महॅगा नहीं।''

''अच्छा भी चाहते हो और सस्ता भी। कब ?''

''आज रात। दो चाहिए। मेरा एक दोस्त अपनी कार लेकर आएगा।''

''ठीक है। दो के सौ-सौ रुपए होगे। लडकियॉ जब कार मे बैठेगी तभी उन्हे पूरी रकम दे देना होगा।''

''मजूर। गाडी ठीक सात बजे आ जाएगी।''

''अभी हम जिस इमली के पेड के पास थे, वहीं लडकियॉ इतजार करेगी। मेरे हिस्से का चालीस अलग से बनता है।''

''दाऊद ने कहा था, तीस।''

''चलो, यही सही।''

उस आदमी से तीस रुपए लेकर रोजे अपने दोस्तो के बीच आ गया। इस दूरी से भी ची मिशेल ने उसे उस आदमी से रुपए लेकर जेब मे डालते देख लिया था और उसने अपने मन मे महीने पहले उठे एक खयाल को फिर से उठते हुए पाया। पढा-लिखा कम था तो क्या, पर ऐसी बात नही थी कि दो जोड दो का हिसाब भी उसे नही आता था। वह अपने उस गणित मे लगा रहा।

दो महीने पहले एक दिन ची मिशेल ने अपनी माँ को रोजे के साथ हिसाब करते सुन लिया था। अपनी माँ की बातो से उसे ऐसा ही लगा था कि रोजे ग्राहको से अपना हिस्सा तो लेता था, ऊपर से उसकी माँ से भी कमाई का पचास प्रतिशत लेता था। उसकी माँ गिडगिडाती हुई रोजे से बोली थी, 'धधा ठीक से चलता तो कोई बात नही थी उसका हिस्सा देने मे, पर इस समय तो धधा भी ठप है और महँगाई भी चार गुनी ज्यादा हो चली है।' उसी दिन से ची मिशेल को रोजे से नफरत होने लगी थी। पर क्या करता, चद रुपए पाने के प्रलोभन से वह अपने को कैसे रोक सकता था। उसने इधर-इधर कई जगह नौकरी तलाशी, पर बारह वर्ष के लडके को कोई नौकरी देकर कानूनी खतरा मोल लेने के लिए तैयार नही था।

ची मिशेल तब साल भर का रहा होगा, जब मामाँ फ्रास्वाज का दरवाजा बद हो जाने के बाद सिमोन को अपने ग्राहको के लिए अपने घर का दरवाजा खोलना पडा था। उसके धधे मे एकाएक शिथिलता आ जाने के कारण एक बार फिर मिशेल ही को माना उसने। पर जब घर मे पाँच साल का हो जाने पर ची मिशेल रात की उस गतिविधि पर उससे सवाल करने लगा था तो उसके सामने और कोई दूसरा चारा ही नही था। उसे अपने घर का किवाड भी बद करना पडा था।

उसके एक नियमित रात के मेहमान ने उससे कहा भी था, 'मेरे पास न तो बँगला किराए पर लेने की औकात है और न ही किसी साधारण-से-साधारण होटल का कमरा। अपने घर भी तो तुम्हे नही ले जा सकता। अब जब तुम्हारे घर का दरवाजा भी बद हो गया तो क्या करे, तुमसे दूर रहना ही पडता है।'

यह व्यक्ति एक अध्यापक था। इसके न आने का दु ख तो सिमोन को हुआ पर खुशी भी हुई थी। दु ख तो इसलिए हुआ कि वह महज बाकी लोगोवाली इच्छा के साथ नही आता था। दु ख-सुख सुन-सुना जानेवाला तो था ही, साथ मे औरो से कुछ ज्यादा ही देकर जाता था। खुशी इस बात के लिए हुई कि औरो की तरह उसके भी न आने से मिशेल को उसने एक कडवे और घिनौने एहसास से बचा लिया था।

एक बार सिमोन ने रोजे से कहा भी था, 'देखो रोजे, एक बच्चे का यह जानना कि उसकी माँ वेश्यावृत्ति करती है, दु खदायी तो होगा ही। पर जब वह हर रात अपनी बगल के कमरे मे अपनी माँ को वैसा करता हुआ पाए तो यह कितनी बडी पीडा हो सकती है—यह केवल मैं समझ सकती हूँ, तुम नही, क्योकि उसकी अबोध स्थिति मे भी वैसा करके मै किन यातनाओ से गुजरती रही हूँ—यह कभी नहीं बता पाऊँगी।'

एक बार रोजे अगूरी शराब के नशे मे नही था। गया-गुजरा काम करनेवाला

आदमी—पर था अपने पूरे होशो-हवास मे। ओर उसी दिन पहली बार उसने सिमोन से कहा था, 'ठीक है। इस घर मे दो पैसे ज्यादा आ सके, इसलिए कल से मैं भी ची मिशेल को अपने दोस्तो के अड्डे पर ले जाया करूँगा।'

दया और एहसान के एहसास से सिमोन के भीतर की औरत गीली होकर रही थी और अपनी ऑखो को डबडबा आने से नही रोक सकी थी।

रात मे देर तक ची मिशेल सो नहीं पाया। वह इमली के पेडवाले इलाके मे रोजे को उस आदमी से मिलाने के बारे मे सोचता रहा। राजे द्वारा उस आदमी से पैसा लेकर जेब मे डालने की उस प्रक्रिया पर भी वह देर तक गौर करता रहा—किसके हिस्से का पैसा था वह, जो बिना कुछ किए रोजे की जेब के भीतर पहुँच गया था? धीरे-धीरे ची मिशेल बहुत कुछ समझने लगा था। सिर्फ चुपचाप देखता ही नहीं रहा था। देखते रहने के बाद अब वह यह भी समझने लगा था कि जिन चार-पॉच औरतो से तो रोजे काम करवाता था, वह अच्छा काम नही था, पर जीविका के लिए उन्हे वह काम करना पडता था।

ताचीन रेश्मा को भी एक दिन उसने तो रोजे से झगडते पाया था। उसे यह कहते सुना था, 'तुम्हे अपना हिस्सा तो मिल जाता है, फिर हमारे हिस्से से भी आधा तुम ले लेते हो। यह कहॉ का न्याय हुआ?'

रोजे बोला था, 'न्याय-अन्याय काहे को। यह पेशे का कानून है। दुनिया भर मे ऐसा ही होता है।'

'क्यो? क्या दुनिया के हर काम करनेवाले को अपनी कमाई का आधा हिस्सा किसी दूसरे को देना पडता है?'

रेश्मा का यह सवाल ची मिशेल के दिमाग मे चिपक गया था।

वह रात भर इस बात को भी सोचता रहा। उसकी करवटो का आभास पाकर दूसरे कमरे से उसकी मॉ ने उससे कहा, ''ची मिशेल। दोरमीं मो गारसो लि प्रे पू मिन्वी ला।''

''मुझे नीद नही आ रही है, मॉ। रात बहुत लबी है।''

बहुत दिनो बाद मॉ और बेटे ने इतनी आत्मीयता के साथ एक-दूसरे से बाते की थी। सिमोन तो अपनी आत्मीयता दिखाकर सो गई, पर ची मिशेल उस आत्मीयता को पाकर भी नही सो पा रहा था। उसका गणित जारी था। उसका निर्णय अभी हो नही पाया था।



इस कशमकश के तीन दिन बाद।

दो महीने पहले एक दिन ची मिशेल ने अपनी मॉ को रोजे के साथ हिसाब करते सुन लिया था। अपनी मॉ की बातो से उसे ऐसा ही लगा था कि रोजे ग्राहको से अपना हिस्सा तो लेता था, ऊपर से उसकी मॉ से भी कमाई का पचास प्रतिशत लेता था। उसकी मॉ गिडगिडाती हुई रोजे से बोली थी, 'धधा ठीक से चलता तो कोई बात नही थी उसका हिस्सा देने मे, पर इस समय तो धधा भी ठप है और महॅगाई भी चार गुनी ज्यादा हो चली है।' उसी दिन से ची मिशेल को रोजे से नफरत होने लगी थी। पर क्या करता, चद रुपए पाने के प्रलोभन से वह अपने को कैसे रोक सकता था। उसने इधर-इधर कई जगह नौकरी तलाशी, पर बारह वर्ष के लडके को कोई नौकरी देकर कानूनी खतरा मोल लेने के लिए तैयार नही था।

ची मिशेल तब साल भर का रहा होगा, जब मामॉ फ्रास्वाज का दरवाजा बद हो जाने के बाद सिमोन को अपने ग्राहको के लिए अपने घर का दरवाजा खोलना पडा था। उसके धधे मे एकाएक शिथिलता आ जाने के कारण एक बार फिर मिशेल ही को माना उसने। पर जब घर मे पॉच साल का हो जाने पर ची मिशेल रात की उस गतिविधि पर उससे सवाल करने लगा था तो उसके सामने और कोई दूसरा चारा ही नही था। उसे अपने घर का किवाड भी बद करना पडा था।

उसके एक नियमित रात के मेहमान ने उससे कहा भी था, 'मेरे पास न तो बॅगला किराए पर लेने की औकात है और न ही किसी साधारण-से-साधारण होटल का कमरा। अपने घर भी तो तुम्हे नही ले जा सकता। अब जब तुम्हारे घर का दग्वाजा भी बद हो गया तो क्या करे, तुमसे दूर रहना ही पडता है।'

यह व्यक्ति एक अध्यापक था। इसके न आने का दु ख तो सिमोन को हुआ पर खुशी भी हुई थी। दु ख तो इसलिए हुआ कि वह महज बाकी लोगोवाली इच्छा के साथ नहीं आता था। दु ख-सुख सुन-सुना जानेवाला तो था ही, साथ मे औरो से कुछ ज्यादा ही देकर जाता था। खुशी इस बात के लिए हुई कि औरो की तरह उसके भी न आने से मिशेल को उसने एक कडवे और घिनौने एहसास से बचा लिया था।

एक बार सिमोन ने रोजे से कहा भी था, 'देखो रोजे, एक बच्चे का यह जानना कि उसकी मॉ वेश्यावृत्ति करती है, दु खदायी तो होगा ही। पर जब वह हर रात अपनी बगल के कमरे मे अपनी मॉ को वैसा करता हुआ पाए तो यह कितनी बडी पीडा हो सकती है—यह केवल मै समझ सकती हूँ, तुम नही, क्योकि उसकी अबोध स्थिति मे भी वैसा करके मै किन यातनाओ से गुजरती रही हूँ—यह कभी नहीं बता पाऊँगी।'

एक बार रोजे अगूरी शराब के नशे मे नही था। गया-गुजरा काम करनेवाला

आदमी—पर था अपने पूरे होशो-हवास मे। और उसी दिन पहली बार उसने सिमोन से कहा था, 'ठीक है। इस घर मे दो पैसे ज्यादा आ सके, इसलिए कल से मैं भी ची मिशेल को अपने दोस्तो के अड्डे पर ले जाया करूँगा।'

दया और एहसान के एहसास से सिमोन के भीतर की औरत गीली होकर रही थी और अपनी ऑखो को डबडबा आने से नही रोक सकी थी।

रात मे देर तक ची मिशेल सो नहीं पाया। वह इमली के पेडवाले इलाके मे रोजे को उस आदमी से मिलाने के बारे मे सोचता रहा। राजे द्वारा उस आदमी से पैसा लेकर जेब मे डालने की उस प्रक्रिया पर भी वह देर तक गौर करता रहा—किसके हिस्से का पैसा था वह, जो बिना कुछ किए रोजे की जेब के भीतर पहुँच गया था ? धीरे-धीरे ची मिशेल बहुत कुछ समझने लगा था। सिर्फ चुपचाप देखता ही नहीं रहा था। देखते रहने के बाद अब वह यह भी समझने लगा था कि जिन चार-पॉच औरतो से तो रोजे काम करवाता था, वह अच्छा काम नहीं था, पर जीविका के लिए उन्हे वह काम करना पडता था।

ताचीन रेश्मा को भी एक दिन उसने तो रोजे से झगडते पाया था। उसे यह कहते सुना था, 'तुम्हे अपना हिस्सा तो मिल जाता है, फिर हमारे हिस्से से भी आधा तुम ले लेते हो। यह कहाँ का न्याय हुआ ?'

रोजे बोला था, 'न्याय-अन्याय काहे को! यह पेशे का कानून है। दुनिया भर मे ऐसा ही होता है।'

'क्यो ? क्या दुनिया के हर काम करनेवाले को अपनी कमाई का आधा हिस्सा किसी दूसरे को देना पडता है ?'

रेश्मा का यह सवाल ची मिशेल के दिमाग मे चिपक गया था।

वह रात भर इस बात को भी सोचता रहा। उसकी करवटो का आभास पाकर दूसरे कमरे से उसकी मॉ ने उससे कहा, ''ची मिशेल! दोरमी मो गारसो लि प्रे पू मिन्वी ला।''

''मुझे नीद नही आ रही है, मॉ। रात बहुत लबी है।''

बहुत दिनो बाद मॉ और बेटे ने इतनी आत्मीयता के साथ एक-दूसरे से बाते की थी। सिमोन तो अपनी आत्मीयता दिखाकर सो गई, पर ची मिशेल उस आत्मीयता को पाकर भी नही सो पा रहा था। उसका गणित जारी था। उसका निर्णय अभी हो नही पाया था।



इस कशमकश के तीन दिन बाद।

इमली के पेडवाले इलाके मे रोजे अपने साथियो के साथ ताश के खेल मे खोया हुआ था। उससे कुछ ही दूरी की एक चट्टान पर बैठा ची मिशेल कुछ सोचे जा रहा था। उस अजनबी ओर रोजे के बीच तय उस सौदे मे आखिर उसकी मॉ शामिल क्यो नही थी ? तेरह साल का वह लडका यह तय नही कर पा रहा था कि यह बिन सुलझी उलझन किसकी थी—उसकी वेश्या मॉ की या मुँहबोले चाचा की, जो कभी थोडा सा रहम दिखाकर इतना अधिक क्रूर दिखता था।

ची मिशेल ने कई बार रोजे को अपनी दलाली पर फख्र के साथ यह कहते सुना था कि आज उसने इतनी औरतो पर इतना कमाया। ऐसे मौके पर अगूरी शराब और बीयर के खर्चे की जिम्मेवारी वह अपने ऊपर ले लेता। और जो शब्द लोग गाली के तौर पर उसकी दलाली के लिए इस्तेमाल करते थे उस शब्द को बडे गर्व के साथ प्रयोग करते हुए वह कहता था, 'मै हूँ इस इलाके का सबसे बडा माक्रो।'

और अपनी जेब मे हमेशा रखे रहनेवाले खजर को बाहर निकालकर वह सामने जो भी चीज होती, उसमे घुसेड देता था। उस खजर से कई को उसने घायल भी किया था। पर इलाके के पुलिस इस्पेक्टर की कृपा होने के कारण कभी उसकी गिरफ्तारी हुई ही नही। इधर कुछ दिनो से ची मिशेल उसकी गिरफ्तारी के सपने देखने लगा था। वह यह भी सपना देखने लगा था कि एक दिन वह इस इलाके का सबसे बडा दलाल बनकर रहेगा। वह इस बात से और भी चिढा हुआ था कि गेजे ने उस दिन उसकी मॉ को उस रास्ते मे मिले आदमी के साथ जाने न देकर जुलेखा और रेश्मा को वह मौका दे दिया था। अगर वह मौका उसकी मॉ का मिला होता नो घर पर मॉ मुरगी पकाती। रोजे के साथियो के लिए बीयर खरीदकर रास्ते मे जाते हुए उसने अपने आप से पूछा—आखिर कब तक मै इस तरह की गुलामी करता रहूँगा ?

उसे रोजे के दोस्तो की गालियो और उनकी खरी-खोटियो, जो उसे रोज सुनने को मिलती थी, की परवाह नहीं थी। उसे इस बात का दु ख था कि जिस दुकान से वह उन लोगो के लिए बीयर, जीवे और सिगरेट खरीदता था उस दुकानदार का बेटा उसे 'एता स रवितेर' कहकर पुकारता था और उसे इस 'ए नौकर' सबोधन से चिढ थी। वह यही सोचते हुए चल रहा था कि इस गुलामी से कैसे पीछा छूटे और कैसे अभी से ही इलाके का सबसे बडा दलाल बनकर रोजे से भी ज्यादा रुपए हासिल करे।

तीन दिन बाद रविवार का दिन होने के कारण रोजे गिरजाघर गया हुआ था, जो कि महीनो से उसने शुरू किया था। गिरजाघर के पादरी के बार-बार के अनुरोध पर उसने और उसके साथियो मे से एक-दो ने उस अनुरोध को मानकर गिरजाघर

जाना शुरू कर दिया था। यह अनुरोध ची मिशेल की मॉ से भी किया जाता रहा था। पर हर बार उसका एक ही जवाब होता था, 'मो पे एना पूर माजिए नारिये आवेक बोजे।'

बोलती थी कि उसे भगवान् से कुछ भी भीख मे मॉगना नही था।

बस्ती के चार-पॉच परिवार, जो अच्छी नौकरी से जुडे और अच्छे माने जाने के बावजूद गिरजाघर नही जाते थे, उन्ही के बच्चो के साथ ची मिशेल बीच रास्ते मे फुटबॉल खेल रहा था। उस रास्ते से शायद ही कभी कोई कार गुजरती थी। उन बिरले कारो की तरह एक कार को रोजे के घर के सामने ची मिशेल ने रुकते हुए देखा। खेल छोडकर वह उस कार के पास पहुँच गया। उसमे सिर्फ ड्राइवर था।

उसके पास पहुँचकर ची मिशेल ने पूछा, "आप किसे ढूँढ रहे है ?"

"तुम जाकर अपने दोस्तो के साथ खेलो।"

ड्राइवर अपनी कार से उतरकर रोजे के घर की ओर बढा। ची मिशेल झपटकर उसके आगे आ गया।

इस बार ड्राइवर ने उसे डॉटते हुए कहा, "हटो मेरे रास्ते से।"

बिना हटे ची मिशेल ने कहा, "आप तो रोजे से मिलने आए हैं ?"

इस सवाल से कुछ नरम पडकर ड्राइवर ने कहा, "हॉ, मैं उसी से मिलने आया हूँ।"

"मगर वह तो अभी घर पर नहीं है।"

"कहॉ गया है ?"

"लामेस गया है। प्रार्थना के बाद वह अपनी बीमार बहन को देखने उधर ही से चला जाएगा।"

उसके इस आधे सच और आधे झूठ पर ड्राइवर कुछ चिंतित सा हो उठा। वह अपनी जगह पर ठिठका रहा।

ची मिशेल ने उससे कहा, "मैं आपकी मदद कर सकता हूँ।"

"चलो हटो।"

वह अपनी कार की ओर लौटने लगा। ची मिशेल कार की नबर प्लेट देखकर जान गया कि वह टैक्सी नहीं थी। ऐन वक्त पर उसकी बुद्धि काम कर गई। उसने कहा, "तो रोजे की गैर-हाजिरी मे मै उसके काम को पूरा करता हूँ।"

"क्या कह रहे हो।"

"मै सही कह रहा हूँ मेस्ये। आपको लडकी चाहिए न ?"

कारवाले ने हैरानी के साथ अपने सामने के तेरह वर्षीय लडके की ओर देखा।

"बच्चे होकर इस तरह की बात कर रहे हो?"

"मेस्ये! आप बताइए तो सही, अभी लडकी सामने आ जाती है।"

"सच कह रहे हो?"

"एकदम सच।"

"खूबसूरत लडकी चाहिए मुझे।"

ची मिशेल की ऑखो के सामने अपनी मॉ की छवि झिलमिला उठी और उसने मन-ही-मन कहा कि अरे, मेरी मॉ से सुदर कौन हो सकती है इधर! और बोल पडा, "एकदम खूबसूरत, मेस्ये!"

"मै पहले देखना चाहता हूँ।"

"पहले पैसे की बात हो जाए।"

"कितना लेती है इधर की लडकियॉ?"

"दो सौ रुपए।"

"पर मेरे बॅगले पर पूरे दिन भर रहना होगा।"

"आप उधर देखिए। घरो के बाद वह इमली का पेड दिखाई पड रहा है न?"

"हॉ।"

"आप अपनी कार लेकर वहीं जाइए। पॉच मिनट मे लडकी पहुॅच जाएगी।"

"तुम मेरे साथ बदमाशी तो नही कर रहे हो?"

"मेस्ये! रुपए के साथ मै खिलवाड कर सकता हूँ क्या?"

वह व्यक्ति जब कार स्टार्ट करने लगा तो ची मिशेल ने अपने हाथो को कार के दरवाजे पर रखकर कहा, "मेरा हिस्सा तो देते जाइए।"

"लडकी के साथ पहुॅचो, वहीं ले लेना।"

"एक बात और है। लडकी को पैसा कार मे बैठते ही मिल जाना चाहिए।"

"मिल जाएगा।"

कार इमली के पेड की ओर बढ गई और ची मिशेल ने अपने को छोटा मिशेल नहीं, बल्कि ग्रॉ मिशेल मानकर अपनी मॉ तक पहुॅचने के लिए झपट पडा। उसे इस बात की खुशी थी कि उसकी मॉ के हाथो पूरे-के-पूरे दो सौ रुपए आ जाएँगे। वह अपने घर से चद कदमो की दूरी पर था कि एकाएक उसके पॉव रुक गए। उसके दिमाग से पहले जैसे उसके पॉवो को खयाल आया। पॉव आगे के लिए नही उठे। वह सामने के अपने घर को देखता रहा, फिर चुपचाप रेशमा के घर की ओर बढ गया।

ठीक पॉच मिनट बाद वह इमली के पेड के पास खडी कार के सामने था।

कार के भीतर रेशमा के बैठ जाने पर उसने अपने हाथ के पच्चास रुपए के नोट को देखा। कार स्टार्ट होकर आगे निकल गई और ची मिशेल खडा अपने हाथ के नाट को देखता रहा। समझना चाहा कि अच्छा किया या बुरा, पर समझ नहीं पाया। उसकी खुली हुई हथेली से वह नोट हवा के द्वारा डोलाए जाने पर कुछ दूरी पर जा गिरा।



# भगवान् की आँखें

अरविद जब छह-सात साल का रहा होगा, तभी से उसका पिता उसकी छोटी-मोटी भूलो पर उससे भगवान् की चर्चा करता रहता था। उस दिन जब वह पडोस के ऑगन से बिना मॉगे आम तोड लाया था, तब भी उसके पिता ने उसे अपने पास बिठाकर कहा था, 'बेटे, बिन मॉगे और बिन खरीदे कोई चीज उठा लाना चोरी होता है। हम लोग कभी-कभार अपने आस-पास किसी को न पाकर सोचते है कि हमे कोई नही देख रहा और हम गलत काम कर जाते है। यह हमारी भूल है। हम जो कुछ भी करते है, वह भगवान् से छिपा नही रहता। उसकी ऑखे हर जगह हर आदमी के हर काम को देखती रहती हैं।'

तब अरविद आठ-नौ साल का था।

लेकिन आज जब वह अपनी मॉ के साथ शहर के सबसे बडे सुपर मार्केट मे पहुँचा तो दसवे साल मे पहुँच रहा था। उसकी मॉ रसोई की तथा अन्य आवश्यक चीजे स्टॉल पर से उठा-उठाकर ट्रॉली मे रखती गई। अरविद के लिए उसकी मॉ ने ड्राइग बुक और रगो की डिबिया खरीदी, चॉकलेट भी।

इसके बाद वे लोग सौंदर्य-प्रसाधन विभाग मे आ गए, जहॉ से अरविद की मॉ ने पूरे परिवार के लिए कुछ-न-कुछ लिया और अरविद के लिए बालो मे लगाने वाला जेल। कुछ आगे बढकर वह फ्रासीसी इत्रो की डिबियो के बीच अपना मन-पसद परफ्यूम ढूँढती रही। मिल जाने पर उसने उसपर छपा दाम देखा तो हताश हो गई। उसके हाथ मे जो शीशी थी उसपर उसका दाम तीन सौ रुपए लिखा हुआ था। अरविद अपनी मॉ की ओर देखता रहा। उसकी मॉ न तो उस डिबिया को सायेबान पर वापस रख पा रही थी और न ही उसे अधभरी ट्रॉली के सामानो के बीच। उसने इधर-उधर देखा और जल्दी से उस छोटी सी डिबिया को अपने कधे से लटके पहले से खुले बटुए मे डाल लिया।

अरविद को धक्का सा लगा और वह धीरे से अपनी मॉ से बोल उठा, "मॉ। उसने देख लिया।"

उसकी माँ घबरा गई। इधर-उधर देखा और लडखडाई आवाज मे पूछ बैठी, "किसने ?"

अरविद ने बिना कुछ कहे अँगुली से छत पर के टी वी कैमरे की ओर सकेत किया। फिर धीरे से बोला, "भगवान् की आँखो ने।"

उसकी माँ ने बटुए से शीशी को बाहर किया। गौर से देखती रही और फिर धीरे से स्टॉल पर, जहाँ से उठाया था, रख दिया।



# गिरफ्त

कडकती धूप और तुम। सडक पर चकनाचूर शीशे के टुकडो और अनुटुकडो की तरह चमकती हुई घाम।

भारी उमस और तुम।

और उमस से अकुलाए वे सारे आते-जाते लोग। चमडी के भीतर हड्डियो तक को जलाती हुई गरमी और चमडी से ऊपर पसीने की बूँदे। हवा नही थी। न पत्ते हिल रहे थे और न सरकारी इमारतो के चौरगे। चौरगे भीगी बिल्ली की तरह अपने ही रगो मे सिमटे पडे थे। सडक से आते-जाते पर्यटको के लिए उन रगो को परखना कठिन था, क्योकि चौरगे हवा मे बाते नही कर रहे थे। हवा अगर मद भी होती तो चौरगे के रग शायद इतने स्पष्ट नही होते। तुम्हारा आभास तो कम-से-कम ऐसा ही था।

चकाचौंध अस्पष्टता

एक हाथ से लाठी थामे और दूसरे हाथ को कमर पर रखे अपने जर्जर शरीर के बोझ को साधे उसके लिए सामने की सभी चीजे स्पष्ट थी। आजादी से पहले यह शब्द उसके लिए बहुत बडा शब्द था। स्थिति मे घोर परिवर्तन ला देनेवाला सशक्त शब्द। परिवतन न हुआ तो वह कैसे यह कह सकता था, पर जिस परिवर्तन की कल्पना उसने की थी, वह नही हुआ था शायद।

शायद

झिलमिलाती धूप झुर्रियो से भरे चेहरे पर की बूँदो को बढावा देती जा रही थी और तुम अपलक देख रहे थे। उन बूँदो को पोछने की आवश्यकता नही थी, क्योकि वे अपने आप टपकती जा रही थीं। सडक के जिस मोड पर तुम खडे थे, वहॉ भी भीड की चिपचिपाहट और अकुलाहट थी। एक-दूसरे की लबी सॉसो की गरमी। और पसीने की गध कारखानो की मशीनी गधो से मिली हुई अजीब गध पैदा कर रही थी।

गध भरा भारी कोलाहल

चारो तरफ, तुम्हारे अपने भीतर भी।

आने-जानेवालो के भीतर और बाहर सिर को खाली कर देनेवाला कोलाहल था और उसके बीच डॉवॉडोल हो रही होगी उसकी अशात उम्मीदे। चद ही मिनट पहले उस स्थान पर, जहॉ हडताल करनेवालो का जमघट था, एक जोरदार धमाका हुआ था ओर लोग तितर-बितर हो गए थे। कुछ ही क्षणो बाद कुछ लोगा ने धमाके का कारण दो मोटरो का आपस मे टकरा जाना बताया था तो कुछ ने कुछ ओर।

फिर खामोशी ।

उस धमाके की मौत पर मातम मनाती हुइ वह लबी खामोशी बनी रही। अपने को सुरक्षित ठौर से हटाकर वह बूढा एक बार फिर प्रदशनकारिया के बीच जा पहुॅचा था। हडताल करनेवालो मे न होते हुए भी वह उस सनसनीखेज घटना का आनद लूटना चाहता था। वह भी हाथ मे तख्ती थामे उन तमाम प्रदशनकारियो की तरह हडताल मे भाग लेना चाहता था। पर हडताल तो वे लोग कर रहे थे जो अपनी नोकरियो से असतुष्ट थे। उसकी तो कोई नौकरी थी ही नहीं, वह भी तो एकदम तुम्हारी ही तरह था।

अरसे से बेकार

दुनिया का सबसे कठिन काम होता है यह, जिससे तुम दोना जूझ रहे थे।

वह अपनी जगह पर खडा रहा। हडताल करनेवालो की बुलद आवाजे रह-रहकर इधर भी सुनाई पड जाती थीं। नारे अस्पष्ट थे, पर उनमे ओज के जो भाव थ वे अस्पष्ट नही थे। लोग उधर जा रहे थे, उधर से आ रहे थे। उधर से आनेवाले लोग अपने साथ कुछ अधिक गरमी लिये लौट रहे थे। सरगर्मी और भीड के आवागमन से गरमी पराकाष्ठा पर पहुॅचने लगी। आने-जानेवाले लोगो के विचारो के टकरा जाने से भी गरमी को प्रोत्साहन मिल रहा था।

अकुलाहट गरमी की भी, जीवन की भी। और दोनो के बीच वह भी था, तुम भी थे।

माहौल अस्त-व्यस्त था। बहम, तर्क, तकरार और फिर इनका झगडे मे बदल जाने का डर। आवाजे, नारे, चीत्कार। और तुम एकटक उस ओर देखते रहे, जिधर वह गया हुआ था। रॉयट यूनिट के हथियारो से लैस सिपाहियो को उधर ही बढते देख तुम्हारी परेशानी बढ गई। परेशानी के कारण तुम्हारी ऑखे बरबस ही ऊपर उठ गई। आकाश से बाते करता हुआ बैंक, जिसमे बद पैसो की सडी-सी गध हवा मे व्याप्त थी। तुम इस आवारा और अनावश्यक खयाल से कॉप उठे कि कहीं यह बैंक अपने बोझ से चरमराकर तुम्हारे ऊपर लुढक न आए। इस हालत मे भी तुम्हे अपन प्राण प्यारे थे, यह बात सभवत उस समय सही होती जब तुम्हारे अपने इस द्वीप की

स्थिति कुछ और होती तब पर मरने का डर तुम्हे अवश्य था—इस तरह की सस्ती मौत का। तुम्हारा बाप प्राय अपने लबे जीवन पर गौर करता। उसका बेटा भी उसकी तरह लबी उम्र जी पाएगा, इसकी उम्मीद उसे बहुत कम थी। उसके अपने खयाल मे वे दिन अब नही रहे, जो आज के लोगो को लबी उम्र दे सके। अपने लबे जीवन के बारे मे सोचते हुए उसका हृदय भर आता, ऑखे डबडबा आतीं, पर चूँकि वह हमेशा मर्द के रोने के खिलाफ रहा है, इसलिए अपने ऑसुओ को किसी भी हालत मे वह बाहर नही आने देता। ऐसे तो सभी लोग अतीत के बोझ को सिर और पीठ पर लेते हे, मगर तेरा बाप उस बोझ को अपने हृदय पर ढोता आ रहा है। सबसे अधिक पश्चात्ताप उन बीते हुए दिनो का था, जो अब न उन दिनो और इन दिनो मे बहुत भारी भिन्नता थी। उसके इर्द-गिर्द आते-जाते लोग भी उससे एकदम भिन्न थे। उनमे क्लब-सोसाइटी, कैसिनो, कैफे-होटल, कॉलेज-किताबो और फैशन की आधुनिकता थी। तेरे बाप ने दुनिया देखी थी। उसने लोगो मे सभी कुछ पाकर सतोष ओर आत्मशाति का अभाव पाया।

अभाव ।

और इसी के कारण ।

गरमी और कोलाहल एक-दूसरे से होड लगा रहे थे।

लाउडस्पीकर लगाए एक मोटर आकर आवाज के साथ सामने से गुजर गई। उस ध्वनिवर्धक यत्र का आता स्वर इतना जोरदार था कि उससे आते एक शब्द को समझना भी तुमसे न हुआ। मोटर के पीछे-पीछे दो आवारा कुत्ते बेतहाशा दौड गए, गोया गालियॉ देती हुई भागी जा रही हो और दोनो कुत्ते उसे शिष्टाचार का पाठ पढाने के लिए उसे पकडने की कोशिश मे थे। एक लॉरी गुजरी—चीखते-चिल्लाते और हाथो मे झडियॉ लिये नाबालिगो से भरी हुई। तुम्हे समझते देर नही लगी कि आस-पास ही कही किसी पार्टी की मीटिंग होने वाली है। पर पार्टी की मीटिंग मे उपस्थित जनता की सख्या को बढाने की चिता देश की सभी चिताओ से अधिक भारी थी, इस बात को भी तुम जानते थे।

राष्ट्रचिता राष्ट्रगान।

बैंक की जिस छाया मे तुम खडे थे वहॉ भी धूप चमकने लगी थी। इसलिए अपने शरीर का बोझ लिये तुम कुछ पीछे हट गए। पीछे हटना अपने सिद्धात के विरुद्ध था, पर शहर के इस चिपचिपाहट भरे वातावरण मे उसूल का खयाल रखना अपने को बेवकूफ बताना होता। तुम घटो से यहॉ खडे थे। कहाँ के लिए निकला था और कहॉ पहुँच आया था। तुम्हारी जेब मे अगर सवारी के लिए पैसा होता तो इस

वक्त इस नरक मे न होकर तुम अपने उस कोने मे होते, जहॉ चूहो का विद्रोह इस विद्रोह से सशक्त था।

वह अपनी लाठी टेकता हुआ तुम्हारे एकदम पास आ गया था। तग आकर अपने आपसे कहते सुना उसको, 'कहॉ चला गया वह।'

आगे बढकर उसको ढूँढ निकालना भी तो उसके लिए कठिन था। आगे तो लोगो की भीड खचाखच थी। उस भीड मे जाने की हिम्मत नहीं कर सकता था। उसमे न जाने केसे-कैसे लोग होगे। चोर होगा, गुडे होगे, शराबी होगा तथा निखट्टू होगे। इन लोगो की परछाइयो से वह हमेशा अपने को बचाते आया था। उन सभी को वह पहचान तो नही सकता था, पर अनुमान से वह उनके चेहरो से कुछ-न-कुछ अर्थ अवश्य ही निकाल सकता था। उन लोगो मे से न जाने कब कोई किसी का दुश्मन बन जाए। उस भीड मे जेबकतरे ओर खूनी भी होगे। जेब कट जाने का डर तो उसे नही था, परतु जान चले जाने का डर उसे जरूर था। कम-से-कम उस वक्त जब तक कि उसके बेटे को नौकरी नसीब न हो जाए। इधर के कुछ दिनो मे 'आजादी के बाद' उसने जो कुछ देखा और समझा था, वह यही था कि यहॉ नौकरी पाना ही स्वग पा लेना था। बेकारी यहॉ सबसे सस्ती चीज थी और नौक्री सबसे महॅगी।

प्रतीक्षा से ऊबकर।

उसकी मदद के लिए आगे बढकर तुमने उसके बेटे को ढूँढ निकालने की बात सोची। तुमने अगल-बगल देखा, फिर ऊपर की ओर। बैक की ऊँची इमारत गोया अब ढहने ही वाली थी। उसकी छाया से हटकर तुमने राहत की लबी सॉस ली। तुम्हारे साथ-साथ वह लाठी भी उठी, फिर कदम उठा और वह अनजान डगर की ओर बढ गया। तुम्हे जोरो की प्यास लग आई थी, पर पानी का नामोनिशान भी कहीं नही था। दुकाने खुली हुई थी। बोतले भरी पडी थीं। वे भी तो पीने की चीजे थीं, लेकिन तुम्हे उनकी इच्छा नही थी, क्योकि तुम्हारी जेब खाली थी और तुम्हे इन चीजो की आदत भी नही थी।

झकृत स्वर । स्वर से टकराता स्वर

शोरगुल के बीच तुम चुपचाप चलते रहे। आस-पास की उस सक्रियता मे तुमने अपने को जीती-जागती लाश समझा। ओर अगर तुम लाश नहीं थे तो तुम्हारे इर्द-गिर्द के सारे लोग नीद मे चलनेवाले इनसान थे। बाद के लिए निर्णय छोडकर तुम चलते रहे। सभी लोग अपनी ही धुन मे थे। कोई तुमसे यह नहीं पूछ रहा था कि तुम कहॉ से आए थे और कहॉ जा रहे थे। तुम अपने को अजनबी पा रहे थे। शायद अपने गॉव मे तुमने जब भी किसी भूले-भटके को देखा होगा तब उसका हाल-चाल

पूछकर उसे अपने घर ले गए होओगे और उसकी यथायोग्य सेवा की होगी, पर वह तो गॉव की बात थी। अगर शहर मे भी गॉव ही की बाते दिखाई पडे तो फिर गॉव और शहर मे फर्क ही क्या रह जाएगा! तुम्हे हॅसी आ गई और तुम नीद मे चलनेवाले इनसान की तरह चलते रहे। अधाधुध

सामने बदरगाह मे चीनी-रूसी-अमेरिकी जहाज लगर डाले हुए थे। उन जहाजो को देखते हुए तुम्हारे भीतर एक जिज्ञासा-सी पैदा हुई—कही ये जहाज ही तुम्हारे देश की वे सभी समृद्धि तो उठा नही ले जाते ? अगर तुम्हारे पास इसका उत्तर होता तो फिर जिज्ञासा ही क्यो होती। और फिर जो समृद्धि तुम्हारी नही, उसकी चिता तुम्हे क्यो होने लगी।

तुमने एक व्यक्ति को डगमगाते कदमो से गुजरते हुए देखा। कुछ ही दूर जाकर वह आदमी नीचे लुढक गया। तुम चलकर उसके पास पहुँचे। उठने की कोशिश के साथ-साथ भी वह अपनी ही धुन मे कोई राग गुनगुनाए जा रहा था। तुमने उसे सहारा देकर उठाया। अगूरी शराब की उबकाई ला देनेवाली गध आ रही थी उसके मुँह से। उठते ही उसने तुमसे लबी-चौडी बाते शुरू कर दी। तुमने मन-ही-मन सोचा कि यह अपने आपसे भागने का विफल प्रयास है। कब तक अपने आपको भुलाया जा सकता हे ? सभी पीनेवाले 'तुम्हारे बाप की नजरो मे' वे कमजोर इनसान थे, जो अपने आपको भूलने के प्रयत्न मे रहते हे। अपने आपको भूलने-भुलाने के कारण अनेक हो सकते है, पर कुछ भी हो, यह अपनी कमजोरी बताना था। कभी तुमने भी गम गलत करने के लिए शराब की ओर देखा था, पर उस पहली ही नजर मे तुम्हे यह मालूम हो गया था कि यह क्षणिक मरहम है। इसलिए तुमने उसी क्षण उसपर से नजरे हटा ली थी। नजरे हट जाने का बडा कारण रहा पैसे का अभाव, आदत तो पैसे की लेई मे चिपकती है।

शराबी को अनाप-शनाप बकते छोडकर तुम आगे बढ गए।

सामने के चौराहे पर तुमने एक युवक को हाथ मे एक छोटा सा पार्सल लिये खडे पाया। उसपर तुम्हारी नजर ठहर जाने का कारण उस युवक के खडे होने का निराला ढग था। मैले-कुचेले कपडो मे गॅवारो की तरह भीड मे आते-जाते लोगो को वह हैरत के साथ देख रहा था। तुमको ऐसा लगा था कि ठीक तुम्हारी ही तरह वह युवक भी इस भारी भीड मे अपने को अकेला पा रहा था। उस तक पहुँचने मे तुम्हे कठिनाई नही हुई। उसकी ओर आकर्षित हो जाने का एक कारण था। तुमसे पहले ही वह बूढा उसके पास पहुँच गया। उसकी सूरत उसके बेटे से कुछ-कुछ मिलती थी, शायद तुम्हे ऐसा ही लगा। अगर उसे कुछ दूर से वह देखता तो उसे अपना बेटा

समझने की भूल कर जाता। इस अनजान युवक के एकदम पास पहुँचकर वह भीड से कुछ दूर आ गया था। भीड चारो तरफ थी, पर बीस-पच्चीस कदमो की दूरी पर।

यहाँ आत्मशाति का लबा श्वास लेते हुए उसने युवक की ओर देखा आर अपने अधसूखे होठो के बीच एक कठिन मुसकान लाकर पूछा, "तुम शहर क ही रहने वाले हो ?"

उस युवक ने सिर हिलाकर हामी भरी।

उसके शरीर से आ रही पसीने की गध उतनी अच्छी नही थी, फिर भी वह बिना नाक सिकोडे उसके एकदम नजदीक पहुँच गया था।

चमचमाती धूप  और झिलमिलाता सागर।

कडकती धूप सामने बदरगाह की नन्ही तरगो से आँखमिचौनी खेल रही थी।

इमारतो के शीशो पर जो इठला रही थी, वह चमचमाती धूप थी ओर जो सडको पर लोट रही थी, वह दमकती धूप थी। जिससे वह अकुला रहा था, वह खौलती हुई धूप थी। जिससे कान के परदे फटे जा रहे थे, वह युवा पीढी के जोशीले नारे थे, जो हडताल करनेवालो के साथ हमदर्दी जाहिर करने के लिए साथ दे रहे थे।

कडकती धूप। जोशीले नारे। घनघनाते जुलूस।

धूप, नारे और जुलूस, कोलाहल, सरगर्मी और चीख, और इन सभी के बीच तुम। क्षण भर के लिए अपने बेटे को भूलकर वह युवक को देखता रहा, फिर पूछा, "तुम भीड से अलग हो ?"

उसने होठो पर व्यग्य भरी मुसकान लाकर धीरे से कहा, "मैं खुद भीड हूँ—बाहर भी, भीतर भी।"

उसके धीमे स्वर से तुम्हे ऐसा आभास हुआ जैसे यह व्यक्ति लबी बीमारी के बाद अभी-अभी चारपाई छोडकर खडा हुआ था। उसकी आँखे कुछ अधिक धँसी हुई थीं। चेहरे के रग पर कडकती धूप के रग के साथ थकान और निराशा के भी रग थे, फिर भी उसके होठो पर एक चमक थी, मुसकान की-सी चमक।

उसे इधर-उधर नजर दौडाते देखकर उसने धीरे से प्रश्न किया, "तुम चचल दीखते हो ?"

वह चुप रहा। तुम्हे उसकी वह चुप्पी अच्छी नहीं लगी। पार्श्व के कोलाहल से अपने को बचाने के लिए वह कोई आवाज चाह रहा था। इमारते खामोश थीं। सामने का समुद्र भी मौन साधे हुए था, केवल गरमी बोल रही थी।

उसने फिर से पूछा, "किसी की प्रतीक्षा कर रहे हो ?"

"किसी को तलाश रहा हूँ।"

''मै भी अपने बेटे को खोज रहा हूँ।''

''तुम्हारा बेटा भीड मे खो गया होगा।''

''हॉ।''

''मै भी किसी को भीड मे खोज निकालना चाहता हूँ।''

''किसको ?''

''अपनी पत्नी के जेवर की कीमत वापस लेने के लिए।''

उसकी समझ मे बात नही आई। विस्फारित नेत्रो से वह उस व्यक्ति को देखता रहा।

''बात तुम्हारी समझ मे नही आई ?''

''नही।''

''लो, समझाए देता हूँ। मर्द अपनी पत्नी के जेवर बेचने के लिए उसी वक्त तैयार होता है, जब उसे यह उम्मीद-सी बॅध जाती है कि उस पुराने गहनो से वह नए और बेहतर गहने ला सके। मै भी इसी उम्मीद से अपनी पत्नी के वे सभी गहने बेचकर चद मिनटो के लिए पॉच हजार रुपए का मालिक बन बैठा था। पॉच ही मिनट ठहर पाए थे वे पॉच बडल मेरे हाथो पर कि वह आदमी मेरे सामने आ खडा हुआ था। मेरे हाथ से पैसे लेकर उसने ठोस स्वर मे कहा था, 'चिता मत करो, एक सप्ताह के भीतर तुम्हे नौकरी दिलाकर रहूँगा।'

''और आज सात सप्ताह होने को हैं। हर भीड मे उसे खोजता हूँ, पर वह कही नही मिर्लता।''

उसकी बात समाप्त होने पर तुमने मन-ही-मन कहा, 'अब वह क्या मिलेगा।'

उधर कोलाहल बढ जाने के कारण कुछ क्षणो तक दोनो चुप रहे, फिर तुमने उसके हाथो की ओर देखते हुए पूछा, ''तुम्हारे हाथ मे चुनाव के परचे और इश्तहार है ?''

''हॉ  और इश्तहार के भीतर जहर है।''

''जहर।'' तुम चौक पडे।

''हॉ।'' उसी व्यग्य भरी मुसकान के साथ उसने कहा।

''जहर किसलिए ?''

''अपनी पत्नी के लिए। डॉक्टर के आदेश पर दवाखाने से खरीदकर लिये जा रहा हूँ।''

''डॉक्टर और जहर।''

''डॉक्टर और दवा।''

"तो फिर "

"बेबसी और जहर। तुम नही समझोगे।"

उसने इस तरह कहा जैसे वह उसका दोस्त था।

"तुम समझते क्यो नही ? मेरी पत्नी को बच्चा होन वाला है। उसे अनमिया है डॉक्टर द्वारा लिखी पॉच दवाइयो मे से मेरे पास केवल एक ही को खरीदने के लिए पैसे थे डॉक्टर का कहना था कि एक दवा से मेरी पत्नी बच्चे को जन्म देने मे सफल हो जाएगी।"

"तब तो यह अमृत हुआ।" तुमने तपाक से कहा।

"कहा था न, तुम नही समझोगे। मेरी पत्नी ओर उस आनेवाले बच्चे मे से एक के लिए यह दवा अमृत होगी तो दूसरे के लिए जहर अब भी नहीं समझे। तुम नही समझोगे उधर देखो सुनो। वे नारे तुम्हे कुछ नही समझा पा रहे ह।"

वह हॅस पडा किसी पागल की तरह। अपने हाथ की लाठी के सहारे खडा होकर वह उसे एकटक देखता रहा। वह उसे समझने की कोशिश नहीं कर रहा था, क्योकि वह जानता था कि उसका ऐसा करना अपने को दु खी करना था। क्षण भर के लिए तुम उस व्यक्ति के उस आनेवाले बच्चे के बारे मे सोचते रहे उसके भविष्य क बारे मे। तभी तुम्हारी ऑखे एक बार फिर इश्तहार मे लिपटी उस दवा की शीशी पर जा रुकी, तुम्हे भी उसके दवा होने मे शक हो गया।

तुम खडे रहे ।

खुले माहौल मे बदी की तरह।

पसीने बहे जा रहे थे। धूप हर तरल पदार्थ को सोख लेने की शक्ति ¯खकर भी पसीने की चमकती बूॅदो को नही सोख पा रही थी।

दौड एकाएक, देखते-ही-देखते एक खलबली-सी मच गई।

भाग-दोड। चीत्कार।

वह भारी भीड चकनाचूर होकर तितर-बितर होने लगी। पथराव और धमाके। दुकानो के शीशे तोडे जा रहे थे। मोटरे उलटी जा रही थीं। नारे और गालियॉ एक साथ। आगे-आगे भागते हुए लोग थे और उनके पीछे थे पुलिस के जवान। अश्रु गेस का धुऑ वातावरण को स्याह कर गया। नाक पर रूमाल रखे गिरते-उठते लोग अपनी जान बचाने की फिक्र मे अधाधुध भागे जा रहे थे।

आपाधापी चिल्लाहट। रस्साकशी।

धूप और भी कडक उठी थी। आवाजे और भी प्रलयकर हो चली थीं। पथराव बढते गए। अश्रु गैस से माहौल काला, जहरीला होता गया। खलबली बढती गई।

हगामा  तूफानी लहर। लोग एक-दूसरे से टकराते हुए, एक-दूसरे को गिराते हुए, एक-दूसरे पर गिरते हुए भागे जा रहे थे।

चोराहे पर तुम अवाक् खडे थे। जो कुछ भी हुआ था, पल भर मे हो गया था और तुम तीनो कुछ भी नही समझ पाए थे। तुम तीनो के पास से गुजरते हुए कुछ लोगो ने भयभीत स्वर मे कहा, "भागो। भागो।।"

तुम्हारे 'क्यो' 'कहॉ' का उत्तर किसी ने नही दिया। उसको अब भी अपना बेटा नही दिखाई पड रहा था। वह जानता था कि इन भागनेवालो मे वह अपने बेटे को नहीं पा सकता, क्योकि उसने भागना नही सीखा था। चौराहे पर की लाबूर्दोने की मूर्ति की तरह तुम खडे रहे। तुम तीनो खडे रहे उस वक्त तक जब तक पुलिस के अनेक सिपाहियो ने तुम्हे घेर नहीं लिया। इससे पहले कि तुम कुछ कहते, तुम्हे पुलिस जीप मे धकेल दिया गया। जीप मे बीस से अधिक लोग थे। वे सब्जी मडी के लिए निकली लॉरी की फूलगोभियो की तरह एक-दूसरे से कसे हुए थे। यहॉ भी उसने अपने बेटे को पाने की उम्मीद नही रखी।

तुमने अपने साथी की ओर देखा। उसके हाथ की वह दवाई अब भी उसके हाथ मे उसी तरह थी। उसके होठो के बीच वही व्यग्य भरी मुसकान थी। वह चुप था, पर तुमने उसे कहते सुना, "अब तक मेरे बच्चे का जन्म हो गया होगा।"

गर्भपात तो किसी और चीज का हुआ था।

जीप के ठीक सामने प्रदर्शनकारियो की घनी भीड के कारण जीप को रुक जाना पडा। कइ पत्थर एक ही साथ आकर जीप से टकराए। वह अपनी लाठी से एक पत्थर को रोक पाया, पर उस दूसरे को नही रोक सका जो तुम्हारे साथी की कनपटी पर लगा।

खूँखार आवाजे

चारो ओर से बर्बर आवाजे आ रही थीं। नारे कोलाहल बनकर अस्पष्ट हो चले थे। तभी उसकी नजर सामने की भीड पर पडी और उस भारी भीड मे भी उसने अपने बेटे को पहचान ही लिया। उसपर भूत सवार था। एक हाथ मे काले रग का झडा और दूसरे मे पत्थर लिये वह पागलो की तरह चिल्ला रहा था। एक क्षण उसने अपने बेटे को इस बात के लिए सराहा कि वह उन पीठ दिखानेवालो मे नही था, पर दूसरे ही क्षण उसकी उस हिसक सक्रियता को देखकर वह कॉप उठा। उसने जीप के भीतर ही से कई आवाजे दी, ताकि उसका बेटा उसे सुनकर अपने हाथ के काले झडे और पत्थर को फेक दे।

पर पथराव जारी रहा। पुलिस बेबस हो चली थी। तभी तुमने कराहने की

आवाज सुनी। अपने साथी की ओर देखा—उसके माथे से खून की धारा बह रही थी। अपनी लाठी को फेककर उसने उसे अपनी कमजोर बॉहो मे थाम लिया, पर तब तक कुछ अस्पष्ट वाक्यो के साथ तुम्हारे उस साथी ने अपनी उस मुसकान को बनाए रखते हुए ऑखे बद कर ली थी।

उसकी सूखी ऑखो से अनायास ही दो गरम बूँदे टपक पडीं और तुमने मन-ही-मन केवल यह चाहा कि एक पल के लिए कोलाहल रुक जाए, ताकि कहीं दूर से आती हुई किसी नवजात बच्चे के पहले रोदन की आवाज तुम सुन पाओ। पर ऐसा नही हुआ।



# ऑंखों में ज्वार-भाटा

त्रुओबीश विलेज होटल के समुद्र-तट पर धूप का आनद लेते हुए सैलानियो के बीच मॅडराते रहनेवाले सभी फेरीवाले उसे एपूज-दे-ला-मेर कहा करते थे। यह नाम सुरैया को धरमेन ने एक फ्रेच फिल्म देखने के बाद दिया था। जब सुरैया उससे पूछ बैठी थी कि आखिर वह उसे 'समदर की पत्नी' क्यो कहता है, तो धरमेन की बगल मे खडे गणेश ने कहा था कि वह हमेशा नीली साडी पहने रहती है, इसीलिए। सभी जवान फेरीवालो के बीच वही सबसे अधिक उम्र की थी। उसी दिन गणेश ने उससे यह भी पूछ लिया था कि वह अन्य विधवाओ की तरह सफेद साडी क्यो नहीं पहने होती, तो सुरैया ने कोई उत्तर नही दिया था। वह अपने आपसे यह बोलकर रह गई थी कि जब मेरे पति को चिता पर चढाया ही नही गया तो मैं अपने को विधवा कैसे मान लूँ।

एक बार एक फ्रेच सैलानी ने फेरीवालो मे सबसे छोटे अजय को सुरैया को एपूज-दे-ला-मेर कहकर पुकारते सुन लिया था। बोल गया था कि जब इस उम्र मे वह इतनी सौम्यता लिये है तो जवानी मे तो सचमुच ही समदर की पत्नी ही होगी। धरमेन ने तो मजाक मे उसे वह नाम दे दिया था, पर सुरैया सोचती—वह उसके जीवन का कितना बडा सत्य था। सत्य या विडबना ? जब वह छोटी थी और उसका छोटा भाई उससे झगडने लग जाता तो उसका पिता उसके छोटे भाई को अपनी गोद मे उठाकर कहता, 'बैजू, तुम्हारी दीदी तो मुझे समदर किनारे मिली थी। मेरे सबसे प्यारे तो तुम हो।'

और वह बैजू सुरैया का भी बहुत ही प्यारा भैया था, जो तपेदिक का शिकार होकर ग्यारह वर्ष की उम्र मे चल बसा था।

सभी फेरीवाले सुरैया को चाहते थे। उनके अपने बीच व्यवसायवाली प्रतिस्पर्धा तो बनी रही थी, पर उसके साथ किसी से किसी की कोई होड नही थी। उसके ग्राहक को न तो कोई अपनी ओर खीचने की कोशिश करता और न ही वे कभी उसकी मदद करने के लिए आगे आने से अपने को रोकते। अगर उन आठ-दस

लडको से कभी तग आने की नौबत आती तो केवल उस वक्त, जब पहले दिए जा चुके उत्तरो का दोबारा उत्तर चाहने की कोशिश होती। इसलिए जब अजय ने उस दिन पूछ लिया था कि हिदू होते हुए उसका नाम सुरैया क्यो है, तो वह उसे डॉटकर बोली थी कि वह हिदू और मुसलमान—दोनो है।

वह केवल उसकी मॉ थी जो उसे सुरैया कहकर नही पुकारती थी। वास्तव मे सुरैया का बाप अपने जमाने की फिल्मो की अभिनेत्री और गायिका सुरैया का दीवाना रह चुका था। इसलिए जहॉ उसने जन्मपत्री मे अपनी बेटी का नाम शकुतला रामदीन रखा था वहीं घर पर पुकारने का नाम 'सुरैया' रख दिया था। सुरैया का बाप सोनालाल रामदीन इस हद तक सुरैया के गानो का आशिक था कि उसकी एक ही फिल्म को वह पॉच-छह बार देखता था। गन्ने के खेतो मे जब उसके दोस्त सहगल, सुरेद्र और सी एच आत्मा के गाने गुनगुनाते तो सोनालाल सुरैया का गाना गाता रहता था। सुरैया अपने बाप को वे गाने गाते इतनी बार सुन चुकी थी कि दो-तीन गाने तो उसे भी पूरे-के-पूरे याद हो गए थे। लडके कभी सचमुच खुशी हासिल करन के लिए और कभी मजाक के लिए उससे उन पुराने गानो को गाने की मॉगे करते रहते। उसे सुरैया के कई गाने याद थे, पर अपनी उदास ऑखो मे ज्वार-भाटा लिये ज्यादातर वह 'अनमोल घडी' का यह गाना गाया करती— सोचा था क्या, क्या हो गया।

उसकी छोटी बेटी अनुराधा जब उससे एक बार पूछ बैठी थी कि आखिर वह इस गाने को बार-बार क्यो गाती रहती है, तो सुरैया ने उससे कहा था कि जो मेरे साथ हुआ वही गाती रहती हूँ। यह कहकर वह अपने जीवन के उन दिनो को याद कर उठती, जब गन्ने के खेतो म अपने पति की बगल मे गन्ने काटती और रेलगाडी के खुले डिब्बे मे लादा भी करती थी। गायो के लिए गन्ने की हरी पत्तियॉ बटोरती हुई पास-पडोस की औरते उसकी स्फूर्ति और मेहनत की सराहना करतीं। उसकी शादी हुए बमुश्किल छह महीने हुए थे, जब उसका पहला बच्चा गर्भ मे था। उसी आने वाले के बारे मे वह सोचा करती। बलराम का हाथ बॅटाकर वह हर सप्ताह जो चार-पॉच रुपए अधिक कमा लेती थी उसी को आधार बनाकर वह सोचती—झुकी हुई ओरियानी और गन्ने के सूखे पत्तो के छप्परवाले घर की जगह वह नदू चाचा की तरह लकडी और टीनवाली छत का घर बनाएगी।

बरसात की रात जब उसके घर की छत रिसने लगती और उसे चार-पॉच ठौरो पर लोटे और थाली रखने पडते थे, ताकि घर मे पानी न फैले, तो बलराम उसे आश्वासन देता, कहता—अगर दोनो इसी तरह मिलकर दो-ढाई साल काम करते रहे तो उनका दूसरा बच्चा छप्परवाले घर मे नही, बल्कि टीन की छतवाले घर मे

जनमेगा। उसका पहला बच्चा जब जनमा तो चारपाई को उसकी जगह से हटाकर दूसरी जगह ले जाना पडा था, क्योकि ऊपर के छाजन से पानी चारपाई के बीचोबीच टपकने लगा था।

सुरैया जो सोचती आ रही थी, उसका उलटा होकर रहा। देश भर मे भारी सूखा पडा। गन्ने की उपज घटकर आधे से भी कम हो गई। शक्कर कोठी मे जो दस साल से अधिक की अवधि से काम कर रहे थे, उन्हे सप्ताह मे केवल चार दिनो की मजूरी दी गई, बाकी लोगो को तीन दिनो की। बलराम इस दूसरे दरजे के मजदूरो मे आता था। इसलिए उसे महज तीन दिन की नोकरी मिली। कोठी की औरतो के साथ भी सख्ती बरती गई। दस साल से ऊपरवालो को सप्ताह मे केवल दो दिन की नौकरी मिली। बाकी से यह कहा गया कि खेतो की हालत सुधरने के बाद ही उन्हे नौकरी पर रखा जाएगा। काम पर से लौटती हुई सुरैया अगौरे की पूलियॉ और कभी घास लिये घर लौटती थी, जिससे वह अपनी गाय और चार बकरियो को आसानी से पाल लेती थी। दो साल भारी सूखे के कारण अगौरे की पूलियॉ और घास का भी अभाव हो चला तथा गॉव की अन्य स्त्रियो की तरह सुरैया को भी घास और चारे की तलाश मे दूर तक के जगलो की खाक छाननी पडी।

अब भी वह अपने उस अतीत को याद कर जाती थी, पर उन बातो को सोचकर अब वह दु खी नहीं होती। अब वह होकर रहा। उसका बेटा दो साल का था ओर उसकी बेटी तीन महीने की थी, जब बलराम पायोनीर कोर्प्स मे भरती होकर तीन साल के लिए मिस्र चला गया था। सत्रह साल की उम्र मे उसकी शादी हुई थी और अठारह वर्ष की उम्र मे वह मॉ बन गई थी। आज देश की आजादी के पच्चीस साल बाद वह साठ वर्ष की उम्र पार कर गई थी। गणेश ने उससे कहा था कि सरकारी नौकरी करने वाले लोग साठ की उम्र मे अवकाश पा लेते है और वह थी कि साठ पार करके भी काम किए जा रही थी। सुरैया हॅस पडी थी और बोली थी कि उनमे से शायद ही कोई अपने हटाए जाने से खुश होता होगा। सुरैया को अपनी इस बात पर झटके के साथ बाते याद आ गई थीं। अपने पडोस के उस सरकारी स्कूल के मुख्य अध्यापक, अस्पताल के उस प्रमुख अफसर और वित्त मत्रालय के उस अधिकारी के बारे मे वह सोच उठी। ये तीनो इन दो वर्षो के भीतर अपने साठ साल पूरे होने पर अवकाश प्राप्त करके जिस स्थिति से गुजर रहे थे, वह किसी से अज्ञात नही था। कोई बेटे के लिए बोझ हो गया था तो कोई घर के मालिक से घर के नौकर मे परिवर्तित हो गया था। मुख्य अध्यापक का हाल तो और भी बुरा था। सुबह-शाम अपने पोते और पोतियो को स्कूल ले जाने तथा फिर स्कूल से ले आने तक की ही

बात नही थी। सुबह उठते ही रोटी लेने बहू के हर आदेश का पालन करने की विवशता को चुपचाप झेल लेने के अलावा कोई दूसरा चारा उसके सामने नहीं था।

गणेश से इन बातो की चर्चा करती हुई सुरैया बोली, "इसीलिए मैं भी अवकाश लेकर अपनी बेटी और दामाद का बोझ बनना नहीं चाहती। मैं तो काम करके जिदा हूँ। घर पर बैठी रहती तो मर गई होती। ये जो तीस-चालीस साल तक सरकार की गुलामी करते रहे और अपने परिवार की परवरिश को फर्ज मानकर चलते है, इनकी पहले ही से अपनी प्लैनिग होनी चाहिए। अवकाश शायद उन कम लोगो के लिए ही वरदान प्रमाणित होता होगा जो परिवार के झझटो मे न फॅसे हुए हो। बेटे, मै तो यह मानकर चलती हूँ कि जब तक आदमी खाने-पीने, चलने-फिरने की स्थिति मे हो तो उसे अपने को किसी के सहारे नही छोडना चाहिए। मे तो अपनी बडी बेटी, जो बहुत अच्छी है और जो बार-बार कहती है कि मैं अपना यह काम छोड दूँ, से यही कहती रहती हूँ कि जब बेटा मुझे कर्ज के बोझ से दबी छोडकर चला गया तो फिर पराई हो गई बेटी पर निर्भर रहूँ।"

बेटे को बुरा-भला कह-कहकर फिर मन-ही-मन सोच उठती—आखिर बेट का क्या दोष। उसका बाप घर जमाई तो पहले बना था। बेटे ने तो वह किया जो बाप कर चुका था।

सामने से सैलानियो की एक टोली को आते देखकर सुरैया अपनी झोली और हाथ मे लटकाए सीपी और कौडी के गहनो के साथ आगे बढ गई। इधर वह भी अपने साथियो से कुछ विदेशी भाषाओ के चद कामचलाऊ वाक्य सीख चुकी थी। सैलानियो की आपस की बातो से यह जानकर कि वे फ्रासीसी थे, वह उनके बीच पहुॅचकर बोली, "त्रे बो सुवेनीर दे लील मोरिस।" (ये दुर्लभ कौडियो और सीपियो के बने हुए है।)

झोली से सामान निकालते समय झोली के भीतर का हॅसिया बाहर आ गया तो सुरैया ने जल्दी से उसे झोली के भीतर रख दिया। उसने जब पाया कि सैलानियो को उन चीजो मे दिलचस्पी नही थी तो उसने झट झोली मे हाथ डालकर सफेद मूँगो और सीपियो का बना हुआ डोडो उनके सामने कर दिया। अपनी अर्धमिश्रित क्रिओली और फ्रेच मे वह बोली, "होटल के टूरिस्ट शॉप मे इसका दाम तीन सौ रुपए से ऊपर है। मै आपको डेढ सौ मे देने को तैयार हूँ।"

आगे बोली, "डोडो पक्षी से बेहतर सुवेनीर आप मॉरीशस से कोई दूसरी चीज ले ही नही जा सकते।"

उसने तुरत दिलचस्पी दिखानेवाली एक महिला के हाथो मे चार इच ऊँची वह

हस्तकला थमा दी।

महिला अपनी एक सहेली के साथ उसे घुमा-फिराकर देखती रही। फिर उसने अपने पति से बात की। उसके पति ने सुरैया से कहा, ''सौ रुपए मे दोगी तो हम ले लेगे।''

''मेस्ये। मैने कहा न कि बडी दुकानो मे इसका क्या दाम है। खैर, सवा सौ देकर ले लीजिए।''

फ्रेच महिला ने अपने पति को अधिक तोल-मोल करने की अपेक्षा पैसे दे देने के लिए कहा।

उसी लगे हाथ सुरैया पीले और चितकबरे रगो की दो कोडियॉ भी बेचने मे सफल हो गई। बाकी सामान को भीतर रखने से पहले उसने हॅसिया को बाहर किया और जब सभी सामानो को रखने के बाद वह हॅसिए को भीतर रखने को हुई कि गणेश सामने आ गया। वह पहले ही सुरैया से पूछ चुका था कि वह बस्ते मे उस हॅसिए को क्यो रखे रहती है ? सुरैया ने छोटा सा उत्तर दिया था, 'यह मेरा रक्षक है।'

जिस दिन सैलानियो के बीच उसकी बिक्री अच्छी नही होती, उस शाम सूरज के डूब जाने के बाद वह कुछ देर तक बालू पर बैठी रहती और समदर मे उठ रहे ज्वार-भाटो को देखती रहती। वह इस समदर को उस समय से जानती थी, जब उसमे केवल पालवाली नावे आती-जाती दिखाई पडती थी। कभी-कभार क्षितिज पर कोई जहाज दूसरे देशो से माल लिये पोर्ट-लुई के बदरगाह की ओर अग्रसर होते दिखाई पड जाता तो कभी मॉरीशस से चीनी का बोझ लिये कोई जहाज अपने देश को लौटता दिखाई दे जाता। इसी ठोर पर बैठकर एक दिन उसने उस जहाज को भी देखा था जो उसके पति को तीन वर्षो के लिए उससे दूर लिये जा रहा था। तब इस ठोर पर इतना बडा होटल नही था। दूर तक हरियाली-ही-हरियाली थी ओर नारियल तथा झावे के पेड थे। तब वह इधर सूखी हुई लकडी या घास की तलाश मे अपनी साथियो के साथ आती थी।

अपने पति के मिस्र चले जाने के बाद वह जब भी किसी जहाज को देश के बदरगाह की ओर आते देखती तो अपने आपसे पूछ बैठती कि वह जहाज उसे कब दिखाई पडेगा जो उसके पति को अपने साथ लिये हुए आएगा ? समय के कटने की उसकी प्रतीक्षा मे जितनी बेसब्री थी, समय उसे उतना ही लबा प्रतीत होता था। वह लबा समय उसे उस वक्त और भी लबा तथा निष्ठुर प्रमाणित हुआ था, जब उसके साथ वह घटना घट कर रही थी। शादी के छह-सात महीने बाद उसका पति घरजमाइ के रूप मे आ बसा था। सुरैया के न चाहने पर भी बलराम अपने मॉ-बाप

का घर छोडकर कारण बताते हुए ससुराल मे आ गया था—यह कहकर कि इधर नौकरी मिल जाने की पूरी सभावना थी। पर असली कारण तो सुरैया जानती थी। उसका पति अपने परिवार का चौथा बेटा था और जो तीन उससे बडे थे, व सुरैया के ससुर की पहली पत्नी के बच्चे थे। उसके पति के जनमने से पहले ही जायदाद का बँटवारा तीन भाइयो और दो बहनो के बीच हो गया था। उस घर मे बलराम छोटे भाइ से कही अधिक नौकर समझा जाता था।

सुरैया अपने सामने के विस्तृत फैले समदर के ऊपर की लालिमा को धीरे-धीरे मिटते हुए देख रही थी और उसके साथ बढते आ रहे धुँधलके के बीच उसने क्षितिज पर एक जहाज को शहर के बदरगाह की ओर बढते हुए देखा था। इसी तरह का कोई जहाज वर्षो पहले उसके पति को देश लौटा लाया था। फिर उसकी नजर मछुआरो की दो बादवानवाली नावो पर पडी, जो रात मे मछलियाँ फँसाने के लिए गहराई की ओर बढे जा रही थी। उस धुँधलके मे उन दोनो नावो को प्रवाल रेखा पर उठ रही फेनिल लहरो को पार करते देख वह अपने पति के उन दिनो को याद कर गई, जब तीन साल बाद पायोनीर कोर्प्स की अपनी अवधि को पूरा करके लौटने पर वह नौकरी की तलाश मे भटकता फिरता रहा था। अग्रेज सरकार की उस सेवा के बावजूद जब उसे कोई नौकरी नहीं मिली तो उसे समदर की ओर मुडना पडा था।

अपने दोस्त के साथ उसकी नाव मे वह मछलियाँ फँसाने के काम मे जुट गया था। मिस्र से उसके वापस आने के एक ही साल बाद सुरैया के तीसरे बच्चे का जन्म हुआ था। जीवन के सबसे अधिक तगहाली के दिन थे वे। तीन साल जब अपने दोनो बच्चो के साथ सुरैया अपनी माँ के घर अपने पति से दूर रहती थी तो माँ और बडे भाई के सरक्षण मे।

कभी किसी ने उसकी ओर बुरी नीयत के साथ देखने की हिम्मत नहीं की थी। बलराम की वापसी के सात महीने पहले सुरैया के भाई की मृत्यु भी बैजू की तरह तपेदिक के कारण हो गई थी और उसके तीन महीने बाद उसकी माँ भी उस शोक मे चल बसी थी। बलराम की मौजूदगी मे जो घटना घटते-घटते भी नहीं घट पाई थी, बलराम की अनुपस्थिति मे वह एक शाम सुरैया के साथ घट कर रही। चाँदो और फूलो के साथ वह इसी समुद्री इलाके मे गाय के लिए घास काटने आई हुई थी। डॉक्टर झब्बू की उस कोठी मे उन दिनो गाँव के छोटे खेतिहर जमीन किराए पर लेकर सब्जियाँ उगाते थे। उन्ही खेतो की अगल-बगल मे बिना जोती जमीन हरे-भरे अकासिया से भरी हुई थी। तीनो सहेलियाँ तीन अलग दिशाओ मे घास काट रही थी, जब पडुवा अपने खेत के अहाते से निकलकर सुरैया के सामने आ खडा हुआ

था। पडुवा, जो छह बेटो का बाप था। गॉव के लोग उसे 'चाचा' कहते थे। और सुरैया द्वारा 'चाचा-चाचा' की रट लगाकर उससे अपने को छुडा पाने की सारी कोशिशो के बावजूद उस तगडे अधेड व्यक्ति की जकड मे वह आ ही गई थी। वह रोती-चिल्लाती रह गइ थी, पर कुछ ही दूरी पर एक जगल की सफाई कर रहे ट्रैक्टर की भारी घडघडाहट मे उसकी आवाज अनसुनी रह गई थी। उसे जब लगा कि वह एक हाथ से अपनी धोती के भीतर हाथ पहुँचाकर दूसरे हाथ से उसकी साडी को उठाकर रहेगा तो सुरैया ने अपने हाथ के हॅसिए को उसकी छाती पर दे मारा था। सुरैया ने दूसरी बार और भी जोर से प्रहार किया—और पडुवा चिल्ला उठा था।

इसी बीच कुछ दूरी पर समुद्र-तट पर के कुछ सैलानियो के बीच से अजय की पुकार सुनकर वह वर्तमान मे लौट आइ। चॉदो और फूलो झपटती हुई वहॉ पहुॅच आइ थी।

तीन घटो मे पूरे दिन भर का काम कर जाने की खुशी के साथ सुरैया बालू पर जा बैठी। टूटे हुए आइने के टुकडो की तरह सामने समदर झिलमिला रहा था। जून की ठडी दोपहर थी। तट पर गन्ने के सूखे पत्तो के छाजनवाली छतरिया से बाहर पयटक बालू पर पसरे घाम सेक रहे थे। समदर के बीच की बेशुमार तरगे सूरज की किरणो के साथ ऑखमिचौनी खेलती प्रतीत हो रही थी। सुरेया के सामने उन झिलमिलाती तरगो मे अपने अतीत की कई परते सामने आती रही।

पडुवा अपनी छाती पर के दोनो गहरे घावो के कारण तब तीन सप्ताह अस्पताल मे बिताकर लौटा था। सुरेया पर लगाए इस आरोप पर कि वह उसके खेत मे घास और सब्जियॉ चुरा रही थी और पकडे जाने पर उसने हॅसिया के जोरदार प्रहार से उसकी जान लेने की कोशिश की थी, वह मुकदमा दायर करके ~हा था। अगर चॉदो ओर फूलो सुरैया के पक्ष मे गवाही देने नही खडी होती तो सुरैया को जेल की सजा होकर रहती।

वकील के सहारे के बावजूद जब वह मुकदमा हार गया तो उसने धमकी देते हुए कहा था 'जो मै तुम्हारे साथ नही कर सका, मेरे बेटे तुम्हारी बेटी के साथ करके रहेगे।'

यह धमको चूॅकि एक पुलिस अफसर और बलराम तथा उसके दो साथियो के बीच दी गइ थी, इसलिए पुलिस की चेतावनी पाकर उसके बेटो मे बाप का बदला लेने का साहस नही हो पाया था।

दो सप्ताह बाद रास्ते मे सुरैया को अकेले पाकर पडुवा के बडे बेटे ने सुरैया को नए सिरे से धमकी दी थी, 'कुतिया। हम तुम्हे विधवा बनाकर तुमसे भीख मॅगवाकर रहेगे।'

सुरेया की मुट्ठी मे उसकी हॅसिया जकडी रह गई थी। उसी रात सुरया न बलराम से कहा था कि वह ओरास की उस पालवाली नाव म रात का मछली के शिकार के अपने काम को छोडकर कहीं दूसरी जगह काम ढूँढे।

इस बात से बलराम भी डरे बिना नही रहा था। पडुवा के दा बेटा की मोटर वाली दो नावे थी और वे भी रात मे मछली फॅसान गहरे पानी म जाते थे। जब उसने अपने दोस्त ओरास को यह बात बताई तो ओरास ने उससे कहा था कि वह अपन मन से इस तरह के डर को निकाल दे। ओरास बोला था, 'ये खून खराबे जमीन पर की बाते होती हे। समदर मे ऐसा नही होता।'

अपने सामने के समदर को सुरेया देखती रही। सोचती रही आर अपने आपस बोली, 'पर समदर म ऐसा होकर रहा।' सात दिनो तक पुलिस और गाताखारा की टोली ओरास की नाव ओर उसके दोनो मछुआरो को ढूँढती रही। न नाव मिली ओर न ही बलराम ओर उसका साथी। पडुवा के बडे बेटे की धमकी को सुरैया पुलिस के सामने रखकर भी कोई गवाह सामने नही ला सकी। पुलिस ने अपनी आर से तहकीकात तो जरूर की, लेकिन कोई भी ऐसा सुराग हासिल नही कर पाई जिसस उस दुर्घटना को फाउलप्ले माना जा सके। तीन दिन पहले से मीटिओ मौसम को खराब बताता आ रहा था। मछुवारो तथा समदर मे भ्रमण के लिए निकलनेवालो को समदर की खराबी के कारण समदर मे न जाने की हिदायते दी गइ थी।

सप्ताह के आखिरी दिन तक गॉव के लोग दो सभावनाओ की बाते कर रहे थे। कोई कहता—ओरास इलाके का सबसे कुशल नाविक माना जाता था। उसका तूफान मे इस तरह फॅसकर ओझल हो जाना आसानी से मानी जानेवाली बात नही थी। जो लोग नाव के डूब जाने की बात मान बेठे थे उनमे से कोइ कहता कि अगर आदमखोर मछली की चपेट मे दोनो नहीं आ गए होगे तो शायद किसी नाव या जहाज मे पनाह पा गए होगे। जो निराशावादी थे, वे कहते कि समदर लाश को अपने भीतर नही रखता। वह उसे तट को लौटाकर रहेगा। पर न कोई लाश मिली ओर न दोनो मे से कोइ जीवित लौटा।

दोनो समदर मे खो गए व्यक्तियो के क्रिया-कर्म बारहवे दिन पास-पडोस के लोगो के बीच उनके अपने-अपने धर्म के मुताबिक पूरे कर दिए गए। सभी कुछ हो जाने के बाद भी सुरैया अपने पति को मृत मानने के लिए तैयार नहीं हुई। उसका बाप उसके छोटे भाई को खुश करने के लिए कहा करता था कि उसका अपना बेटा तो केवल बैजू था। सुरैया को तो वह समुद्र किनारे से उठा लाया था। उसके बाप ने तो

था। पडुवा, जो छह बेटो का बाप था। गॉव के लोग उसे 'चाचा' कहते थे। और सुरेया द्वारा 'चाचा-चाचा' की रट लगाकर उससे अपने को छुडा पाने की सारी कोशिशो के बावजूद उस तगडे अधेड व्यक्ति की जकड मे वह आ ही गई थी। वह रोती-चिल्लाती रह गई थी, पर कुछ ही दूरी पर एक जगल की सफाई कर रहे ट्रैक्टर की भारी घडघडाहट मे उसकी आवाज अनसुनी रह गई थी। उसे जब लगा कि वह एक हाथ से अपनी धोती के भीतर हाथ पहुँचाकर दूसरे हाथ से उसकी साडी को उठाकर रहेगा तो सुरैया ने अपने हाथ के हँसिए को उसकी छाती पर दे मारा था। सुरैया ने दूसरी बार और भी जोर से प्रहार किया—और पडुवा चिल्ला उठा था।

इसी बीच कुछ दूरी पर समुद्र-तट पर के कुछ सैलानियो के बीच से अजय की पुकार सुनकर वह वर्तमान मे लौट आइ। चॉदो और फूलो झपटती हुई वहॉ पहुँच आइ थी।

तीन घटो मे पूरे दिन भर का काम कर जाने की खुशी के साथ सुरैया बालू पर जा बेठी। टूटे हुए आइने के टुकडो की तरह सामने समदर झिलमिला रहा था। जून की ठडी दोपहर थी। तट पर गन्ने के सूखे पत्तो के छाजनवाली छतरियो से बाहर पयटक बालू पर पसरे घाम सेक रहे थे। समदर के बीच की बेशुमार तरगे सूरज की किरणो के साथ ऑखमिचौनी खेलती प्रतीत हो रही थी। सुरेया के सामने उन झिलमिलाती तरगो मे अपने अतीत की कई परते सामने आती रही।

पडुवा अपनी छाती पर के दोनो गहरे घावो के कारण तब तीन सप्ताह अस्पताल मे बिताकर लौटा था। सुरैया पर लगाए इस आरोप पर कि वह उसके खेत मे घास ओर सब्जियॉ चुरा रही थी और पकडे जाने पर उसने हँसिया के जोरदार प्रहार से उसकी जान लेने की कोशिश की थी, वह मुकदमा दायर करके रहा था। अगर चॉदो और फूलो सुरैया के पक्ष मे गवाही देने नही खडी होती तो सुरैया को जेल की सजा होकर रहती।

वकील के सहारे के बावजूद जब वह मुकदमा हार गया तो उसने धमकी देते हुए कहा था 'जो मै तुम्हारे साथ नही कर सका, मेरे बेटे तुम्हारी बेटी के साथ करके रहेगे।'

यह धमकी चूँकि एक पुलिस अफसर और बलराम तथा उसके दो साथियो के बीच दी गई थी, इसलिए पुलिस की चेतावनी पाकर उसके बेटो मे बाप का बदला लेने का साहस नही हो पाया था।

दो सप्ताह बाद रास्ते मे सुरैया को अकेले पाकर पडुवा के बडे बेटे ने सुरैया को नए सिरे से धमकी दी थी, 'कुतिया। हम तुम्हे विधवा बनाकर तुमसे भीख मॅगवाकर रहेगे।'

सुरेया की मुट्ठी मे उसकी हॅसिया जकडी रह गइ थी। उसी रात सुरेया न बलराम से कहा था कि वह ओरास की उस पालवाली नाव म रात का मछली के शिकार के अपने काम को छोडकर कही दूसरी जगह काम ढूँढे।

इस बात से बलराम भी डरे बिना नही रहा था। पडुवा के दो बेटा का मोटर वाली दो नावे थी और वे भी रात मे मछली फॅसान गहरे पानी म जात थ। जब उसन अपने दोस्त ओरास को यह बात बताइ तो ओरास ने उससे कहा था कि वह अपन मन से इस तरह के डर को निकाल दे। ओरास बोला था, 'ये खून खराबे जमीन पर की बाते होती ह। समदर मे ऐसा नही होता।'

अपने सामने के समदर को सुरेया देखती रही। सोचती रही ओर अपने आपसे बोली, 'पर समदर मे ऐसा होकर रहा।' सात दिनो तक पुलिस ओर गोताखोरा की टोली ओरास की नाव और उसके दोनो मछुआरो को ढूँढती रही। न नाव मिली और न ही बलराम ओर उसका साथी। पडुवा के बडे बेटे की धमकी को सुरेया पुलिस के सामने रखकर भी कोई गवाह सामने नही ला सकी। पुलिस ने अपनी भार से तहकीकात तो जरूर की, लेकिन कोई भी ऐसा सुराग हासिल नही कर पाइ जिसस उस दुर्घटना को फाउलप्ले माना जा सके। तीन दिन पहले से मीटिओ मोसम को खराब बताता आ रहा था। मछुवारो तथा समदर मे भ्रमण के लिए निकलनेवाला को समदर की खराबी के कारण समदर मे न जाने की हिदायते दी गई थी।

सप्ताह के आखिरी दिन तक गॉव के लोग दो सभावनाओ की बाते कर रहे थे। कोई कहता—ओरास इलाके का सबसे कुशल नाविक माना जाता था। उसका तूफान मे इस तरह फॅसकर ओझल हो जाना आसानी से मानी जानेवाली बात नहीं थी। जो लोग नाव के डूब जाने की बात मान बैठे थे उनमे से कोइ कहता कि अगर आदमखोर मछली की चपेट मे दोनो नहीं आ गए होगे तो शायद किसी नाव या जहाज मे पनाह पा गए होगे। जो निराशावादी थे, वे कहते कि समदर लाश को अपने भीतर नही रखता। वह उसे तट को लौटाकर रहेगा। पर न कोई लाश मिली ओर न दोनो मे से कोइ जीवित लौटा।

दोनो समदर मे खो गए व्यक्तियो के क्रिया-कर्म बारहवे दिन पास-पडोस के लोगो के बीच उनके अपने-अपने धर्म के मुताबिक पूरे कर दिए गए। सभी कुछ हो जाने के बाद भी सुरैया अपने पति को मृत मानने के लिए तैयार नहीं हुई। उसका बाप उसके छोटे भाई को खुश करने क लिए कहा करता था कि उसका अपना बेटा तो केवल बैजू था। सुरैया को तो वह समुद्र किनारे से उठा लाया था। उसके बाप ने तो

उसे समदर की बेटी बना ही डाली थी। उसके साथियो ने भी उसे समदर की पत्नी बना दी थी। ये दोनो मजाक की बाते थी, लेकिन नियति ने तो वह सचमुच समुद्र की पत्नी बना दी थी। समदर मे बस गए अपने पति को वह समदर किनारे बैठी निहारती रहती, उससे बाते करती रहती।

सूरज के बादलो से घिर जाने पर कॉच के टुकडो की तरह समदर का चमकना बद हो गया। उसका नीलापन भी धुँधलके मे खो गए। सुरैया ने धूमिल पड गए समदर के ज्वार-भाटो को देखते हुए कहा, "तुम जो बोला करते थे बली, वही करके रहे। जब भी मै तुम्हारे पॉव दबाती तो तुम कहते थे—सुरैया, मै तुमसे पहले चला जाना चाहता हूँ क्योकि तुम्हारी कमी की पीडा को मै सह नही पाऊँगा। जब जवान था तो दूर-दराज मिस्र मे तुमसे तीन साल दूर रहकर उस विरह को झेल सका। बुढापे मे मेरे पास वह सहन-शक्ति नही होगी।"

उसके पति के भीतर बुढापे के डर का कारण गॉव के बडे-बूढो की दुर्दशा ही थी।

अपने कधे पर किसी के हाथ का स्पर्श पाकर सुरैया ने सिर ऊपर करके देखा। धरमेन उसकी बगल मे खडा था। बोल गया, "आज तो तुम्हे दो बजे घर पहुँच जाना था न ?"

"क्यो ?"

"सुबह बोल रही थी कि आज ढाई बजे कुछ लोग तुम्हारी बडी बेटी को देखने आ रहे है। तीन बजने को है।"

बिना कुछ कहे वह झट खडी हो गई। झोली को कधे के हवाले करके वह घर की ओर लपक पडी। तभी दाई ओर से गणेश ने आवाज दी, "एपूज दे ला मेर। तुम्हारे पास सीपियो का एक डोडो है ?"

गणेश की बात को अनसुनी करके वह तट को छोड नारियल और झावे के पेडो के बीच की पगडडी पर आ गई।

गणेश ने इस बार अपनी आवाज को ऊँचा करके कहा, "एक अमेरिकी सीपियो का डोडो खरीदना चाह रहा है।"

सुरैया ने आवाज सुनी, पर रुकी नही। समुद्र से आ रहे ज्वार-भाटो के नाद के साथ अपने कान मे अपने पति की आवाज की अनुगूँज रास्ते मे उसने सुनी—'सुरैया, आज भी तुम मेरे खयाल मे डूबी जरूरी कामो को भूल जाया करती हो।'

उसका घर समदर से डेढ किलोमीटर के फासले पर था। रास्ते भर वह यही सोचती हुई चल रही थी कि रिश्तेदार बेसब्री से इतजार कर रहे होगे, पर घर

पहुँचकर उसने पाया कि वहाँ तो अभी तक कोई पहुँचा ही नहीं था। तसल्ली हुइ। फिर तसल्ली की जगह आशका ने उसे दबोच लिया। सुबह वह चाँदो ओर फूलो से कह गई थी कि अगर उसके घर लोटने मे थोडी देर हो जाए तो वे मेहमानो को आदर से बिठाए और सेवा-सत्कार से न चूके। वे दोनो भी उसे दिखाइ नहीं पडी। घर के दूसरे कमरे मे पहुँचकर उसने अनुराधा को चारपाई पर बठे पाया।

सुरैया ने उससे पूछा, "लोग अभी तक नही आए?"

"नही आएँगे। मैने चाँदो चाची के घर से फोन करके उन्हे आन से मना कर दिया।"

"क्या?"

"माँ। मै जब किसी दूसरे लडके से प्यार करती हूँ ता फिर "

"क्या कह रही हो?"

"मै सुरेन से प्यार करती हूँ। ब्याह भी उसी से करूँगी।"

"सुरेन? पडुवा का छोटा बेटा? गाँव की दो लडकियो की जिदगी तबाह कर जानेवाले से?"

सुरैया की बेटी सिर झुकाए चुप बैठी रही, पर अपनी आँखो से बह आई आँसू की दो धाराओ को वह अपनी माँ की नजरो स नहीं छिपा पाइ।

सुरैया का सिर झनझना उठा। उसके मस्तिष्क मे यह वाक्य अनुगूँज पैदा कर गया, 'जो मैं तुम्हारे साथ नही कर सका, वह मेरे बेटे तुम्हारी बेटी के साथ करके रहेगे।'

सुरैया का हाथ झोली के भीतर गया और बाहर आया तो मुट्‌ठी मे हँसिया कसे हुए।

रात आठ बजे पुलिस ने पडुवा के घर से एक लाश उठाई—शव-परीक्षा के लिए।

उसी रात पुलिस ने नौ बजे त्रु ओ बीश विलेज होटल क आगे समुद्र-तट पर खून से रँगा एक हँसिया बरामद किया।

□

# बवंडर बाहर-भीतर

रविवार का सूरज सोमवार की तलाश मे पश्चिमी क्षितिज मे डुबकी लगा चुका था। हवा के जोरदार झोको के सामने अडकर भी नाव को पानी के भीतर ले जाने मे हरनाम सफल हो गया। जबकि लगभग दस घटे पहले समुद्र से सभी छोटी नावो को पानी से हटाकर बालू पर लाया जा चुका था। रइसो की बडी नावो को किनारो से टकराकर चूर-चूर होने से बचाने के लिए कुछ और भीतर तथा सुरक्षित ठौरो पर बॉध दिया गया था, जहॉ बवडर का भय कम था। अँधेरे के साथ हवा की रफ्तार भी बढती गई। उस अँधेरे और भयावह मौसम मे किसी ने हरनाम को अपनी नाव के साथ समुद्र मे जाते नही देखा।

उसे तो अखबार पढना आता ही नही था। अगर वे अखबार हिदी मे होते तो वह भलीभॉति पढ लेता। खबर उसे पढकर सुनाई थी चदू ने। सुबह के लगभग आठ बजे हरनाम रसोई मे चाय बना रहा था। तभी चदू रविवार का अखबार लिये भीतर आ गया था। बिना कुछ कहे उसने अखबार के उस पन्ने को हरनाम के सामने कर दिया था, जिसमे चार अन्य लडकियो के चित्रो की बगल मे सोनिया की भी तसवीर थी। हरनाम को तो पहले यकीन ही नही हुआ था कि वह उसकी बेटी की तसवीर थी। इसलिए नही कि चेहरा वही नही था, बल्कि इसलिए कि इस तरह अखबार मे सोनिया की तसवीर छप जाने की बात का खयाल तो उसे कभी सपने मे भी नही आया था। चदू के हाथ से 'वीक-एड' की वह प्रति लेकर वह अपनी बेटी की उस तसवीर को एकटक देखता रह गया था। फिर बिना सिर उठाए चदू से कहा था, 'यह तो सोनिया का फोटो है।'

दो कमरो के घर मे वैसे तो चार कुरसियॉ थी, पर उनमे बैठने लायक एक ही थी। उसी पर बैठकर चदू ने पूरे पन्ने भर के उस लेख को पढकर हरनाम को समझाया था। फ्रेच के कुछ शब्द उसकी समझ मे भी नही आए थे, लेकिन उसके बावजूद पूरा लेख हरनाम की समझ मे आ ही गया था। और फिर चूल्हे से उतरी देगची की चाय को न तो उसने अपनी कटोरी मे उडेला और न ही उसमे चीनी

मिलाने की जरूरत हुइ। चदू तो अपने अखबार के साथ लाट गया था, पर हरनाम अपने कमरे के भीतर खामोशी मे भी छटपटाता रहा। मौसम गरमी का था, पर सुबह-सुबह उतनी अधिक गरमी उसने कभी नहीं महसूस की थी। बाहर जोरो की हवा थी, पर उस हवा मे जरा भी ठडक नही थी।

पिछले दो दिनो से रेडियो से यह घोषणा होती आ रही थी कि मॉरीशस के उत्तरी इलाके मे एक भारी तूफान जोर पकड रहा है। कल रात हरनाम शभू के घर मे हो रहे रामायण के सत्सग मे उपस्थित था। वही उसने रेडियो की वह घोषणा भी सुनी थी जो हर घटे अग्रेजी, फ्रेच, हिदी और क्रिओली मे प्रसारित की जा रही थी। तब की ताजा सूचना यह थी कि द्वीप से लगभग दो सौ मील की दूरी पर 'साबीना' नामक तूफान पॉच मील प्रति घटे की रफ्तार के साथ टापू की ओर बढा आ रहा था। तूफान का पता मीटियोलॉजिकल विभाग को चार दिन पहले सेटलाइट द्वारा भेजी गइ तसवीरो से चल गया था। तब उसका रूप एक मामूली तूफान का था, पर इन पिछल चौबीस घटो मे उसने असाधारण शक्ति हासिल कर ली थी। यह अनुमान किया जाने लगा था कि अगर हवा का रुख वही रहा और टापू की ओर उसके बढने की गति भी बनी रही तो चौबीस घटो के भीतर वह प्रचड रूप धारण कर सकता हे ओर वेसी स्थिति मे देश भर मे हवा की रफ्तार एक सौ से डेढ सौ मील प्रति घटे तक पहुँच सकती है।

खासकर मछुओ तथा पिकनिक पर निकलनेवाले लोगों को यह हिदायत दी गई थी कि वे किसी भी हालत मे अपनी नावो को समुद्र मे न ले जाएँ। रविवार की सुबह की ताजा खबर सुनने के बाद ग्रॉ-बे के मछुए और वे धनपति, जिनके अपने समुद्री सैर-सपाटे के लिए भव्य नावे हुआ करती थी, सभी अपनी-अपनी नावो को सुरक्षित ठौर पर पहुँचाने मे जुट गए थे। हरनाम तब भी अपने कमरे मे बद, बाहर के विद्रोही मौसम के खयाल से मुक्त उससे भी भारी-भरकम खयाल के बोझ के नीचे दबा हुआ था। गाबी अगर उस तक नही पहुँचता तो वह उसी तरह अपने को औरो की नजरो से बचाए रखता। उसे अपने पास-पडोस के लोगो की निगाहो से इतना डर कभी नही लगा था। गाबी जब उसे लेने आया था तो हरनाम ने उसकी ऑखो मे झॉककर पहले उसी चीज को देखना चाहा, जिससे वह डर रहा था, पर गाबी की ऑखो मे वैसी कोई भी चीज नहीं थी।

उसकी उन ऑखो मे तो शराब की खुमारी के सिवा कुछ था ही नहीं। वही खुमारी उसकी आवाज मे भी थी—

"कि आरीवे तो पापूर चीर तो बातो ऑ दे ओर   एना ग्रॉ सीक्लोन देओर।"

हरनाम को इस बात की चिता नही थी कि बाहर तूफान जोर पकडता जा रहा था और उसे भी अपनी नाव को समदर के प्रलयकर ज्वार–भाटो से बचाकर बालू पर ले आना था। लगभग दस वर्षो से गाबी उसका सहयोगी था। उसके बिना हरनाम कभी मछलियाँ फँसाने निकला ही नही। जब वह उसके साथ समदर के किनारे पहुँचा तो उस विस्तृत समदर मे लहरो के साथ अठखेलियाँ करती अपनी नाव को अकेला देखकर उसे खुशी हुई थी। चार अन्य मित्रो के सहयोग से मस्तूल को बालू पर रखकर और उसपर नाव को सरकाकर उसे ऊपर तक ले आया गया था, जहाँ तूफानी ज्वार–भाटो के पहुँचने का भय कम था। जिस नाव को कोई दो घटे पहले छह व्यक्तियो ने समदर से बाहर किया था, उसे उस एकात और धुँधलके मे हरनाम लबे और भारी प्रयत्न के बाद अकेले ही फिर से समदर तक ले जाने मे कामयाब हो गया था। जब वह घर से निकला था तब भी उसे इस बात का डर था कि लोग उसे उस नजर से न देखने लग जाएँ, जिसके खयाल मात्र से उसकी पलके नीची थी। लेकिन लोग तो तूफान का भय अपने भीतर लिये आवश्यक सामान जुटाने मे लगे हुए थे।

नाव को सुरक्षित ठौर पर पहुँचा चुकने के बाद गाबी ने भी हरनाम को वही परामर्श देते हुए कहा था, 'देखना, रात मे तूफान के जोरदार हो जाने पर बिजली कट जाएगी। तुम दुकान से मोमबत्तियाँ ले लेना और अपने खाने–पीने की कुछ चीजे भी लेना मत भूलना।'

गाबी ने उसे यह भी बताया था कि वह रेडियो से ताजा खबर सुनकर आया था। द्वीप के कुछ इलाको मे इस समय हवा की गति चालीस मील प्रति घटे की थी। रात मे उसके अस्सी मील प्रति घटे और शायद कल दिन तक सौ मील प्रति घटे तक उसके पहुँच जाने का अँदेशा था, पर हरनाम तो उससे भी खूँखार तूफान को अपने भीतर झेल रहा था।

समदर के भीतर पहुँच जाने पर ही उसे उस बाहरी तूफान का एहसास हआ। उसने उस धुँधलके मे समुद्र किनारे के झावे और नारियल के पेडो को पौधो की तरह हवा के थपेडो से अठखेलियाँ करते देखा। हवा के दहाडने की आवाज को भी उसने समदर के भीतर ही से सुना। उसने अब तक अपनी नाव के इजन को चलाया नही था। उसने जिस दिशा मे नाव को बढाना चाहा था, उसकी विपरीत दिशा मे ही हवा के झोको के कारण नाव बढ रही थी। उसे पतवार खेने की भी जरूरत महसूस नही हुई थी। तट से लगभग मील भर के फासले तक पहुँच आने पर उसने सामने के घरो और झुरमुटो के बीच अपने उस छोटे से घर को देखना चाहा। वह जानता था वह

उसकी चेष्टा असभव थी। अँधेरा जितना गहन होता गया, हवा का दहाडना भी उतना ही तेज था। समदर के भीतर उसकी अपनी नाव से कोई आधे ही मील की दूरी पर प्रवाल रेखाओ पर उठ रहे ज्वार-भाटो को भी अब वह देख नहीं पा रहा था, पर जानता था कि वहाँ ज्वार-भाटे अपने फेनिल झागो के साथ बारह-पद्रह फीट ऊँचे उठने लगे होगे।

उसने अपने आपसे पूछा कि वह इस भयकर तूफान मे कहाँ जा रहा है ? उसे अपने आपसे कोई भी उत्तर नहीं मिला। वह जानता था कि यदि तूफान की गति बढती गई तो डेढ-दो घटे मे उसे अपनी नाव को उफन रही उन लहरा के ऊपर टिकाए रखना नितात असभव हो जाएगा। लेकिन उसके जेहन मे सभव और असभव की कोई भी ऐसी कशमकश नहीं थी। वह तो जायज और नाजायज या मान-अपमान से जूझ रहा था। अखबार मे यह भी सूचना थी कि उसकी बेटी अपनी उन चार सहेलियो के साथ चद ही दिनो मे स्वदेश लौट रही है। वह उसके लिए खुश-खबरी थी या शर्म-खबरी।

इधर हरनाम अपने इलाके मे बने नए मदिर का साल भर से प्रधान था। जब उसके प्रधान बनाने की बात चली थी तो कुछ लोगो ने यह आपत्ति की थी कि मछली फँसानेवाले को मदिर का प्रधान नहीं बनाया जा सकता। इसपर खुद पुजारीजी ने कहा था कि उसे पुजारी बनाने की बात नहीं की जा रही है। उसके यह कहने पर कि प्रधान बनने का अधिकार तो उन सभी को होता है जो सभा के सदस्य हैं और मदिर मे पूजा-पाठ करने के अधिकारी है, उस प्रस्ताव को तत्काल मान लिया गया था।

उसकी नियुक्ति हो जाने पर मदिर के पुजारी ने कहा था, 'इस गाँव मे छोटे-बडे सभी इसलिए हरनाम महतो का इतना सम्मान करते है, क्योकि इस गाँव के हित मे इन्होने जितने काम किए है, उन्हे यहाँ के छोटे-बडे सभी लोग भलीभाँति जानते हे। इन जैसे ईमानदार और रहमदिल अब इस गाँव मे बहुत कम ही लोग रह गए हैं। आदमी की जीविका के साधन कुछ भी हो सकते हैं। उससे उसके व्यक्तित्व पर कोई असर नही होता। अभी पिछले दिनो इस इलाके मे जोर पकड रहे नशीले पदार्थो के धधे इन्होने जिस निर्भीकता के साथ रुकवाए, उसे हम कभी नहीं भूल सकते। सैलानियो की बाढ मे हमारी बहू-बेटियाँ जिस गलत रास्ते पर चल पडी थीं, उसे भी बद करने मे हरनाम महतो का ही सबसे बडा हाथ है।'

हरनाम को सभी कुछ एक दु खदायी परिहास-सा प्रतीत हुआ। उसे लक्ष्मी के जीवित न होने का पहली बार एक सतोष सा हुआ, एक राहत सी महसूस हुई। अगर आज वह होती तो इस कदर कराह उठती कि तूफान भी तिलमिला उठता।

उसने अपने जीवन मे अपनी बेटी को कभी भी 'सोनिया' नाम से नही पुकारा था। वैसे भी सोनिया का नाम 'सोनिया' नही था। बचपन से ही पडोस के मीस्ये गास्तो ने उसे उस नाम से पुकारना शुरू किया था और सुनते-ही-सुनते पूरे गॉव मे वही उसका नाम बनकर रह गया था। सोनिया का नाम तो उसकी मॉ ने सुनदा रखा था, पर उसे पुकारती थी 'दकतू बिटिया' कहकर। हमेशा यही चाहती रह गई थी कि सोनिया बडी होकर डॉक्टर बने। अपनी उसी इच्छा को पूरा करने के लिए वह मो स्वाजी कोठी मे काम करके सोनिया की पढाई के लिए पैसा जमा करती थी और हरनाम से कह बैठी थी कि दकतू बिटिया के उस खाते से एक भी पैसा लेने का अधिकार मॉ-बाप मे से किसी को भी नही था।

लक्ष्मी की मृत्यु हुए अधिक-से-अधिक साल भर हुआ होगा। एक शाम सोनिया ने अपने पिता से कहा था कि वह कॉलेज जाना अब बद कर देगी। हरनाम ने अपनी बेटी की उस बात पर ध्यान नही दिया था। लेकिन जब सचमुच ही उसने दूसरे ही सप्ताह से पढाई बद कर दी और कॉलेज जाने के लिए तैयार नही हुई थी तो हरनाम के सारे सपने बिखर से गए। उसका अपना बचपन समुद्री किनारो और चट्टानो पर बीता था। उसे चॉदी जैसी चमचमाती सफेद बालू पर घरौदे बनाने मे बडा आनद आता था। वह उन्हे घटो तक मस्ती के साथ बनाता रहता—और जब बढते आते समदर के ज्वार-भाटे उन्हे चकनाचूर कर जाते तो उसे बहुत दु ख होता था। वह तो एक बार मे एक ही और कठिनाई से दो-तीन घटो के बनाए घरौदे की बात थी। तो भी हर बार उसे उसका दु ख होता था। सोनिया ने तो एक ही बार मे उसके बेशुमार घरौदो को तोड दिया था—वे घरौंदे, जिन्हे वह वर्षो से बनाता आ रहा था।

हरनाम ने अपनी बेटी के दोनो कधो को अपने कठोर हाथो मे लेते हुए कहा था, 'पढना बद कर देगी तो डॉक्टर कैसे बनोगी ?'

'मैं डॉक्टर बनना नही चाहती।'

'फिर क्या बनना चाहती हो ?'

'मुझे नौकरी मिल रही है। मै नौकरी करूँगी।'

'इस उमर मे ?'

'मै अठारह पार कर चुकी हूँ।'

'तुम पागल तो नही हो गई।'

'नए बने होटल मे बहुत अच्छी तनख्वाह पर मुझे अच्छी नौकरी मिल रही है।'

'अच्छी नौकरी और अच्छी तनख्वाह। तुम क्या जानो अच्छी नौकरी और

अच्छी तनख्वाह के बारे मे।'

'जो आप कमा पाते हैं, उससे पॉच गुने अच्छे पैसे मिल रहे हैं मुझ। होटल म रिसेप्शनिस्ट का काम है। लडकियॉ वर्षो तक कतार मे खडी रहकर भी इसे नहीं पाती।'

'तो फिर तुम्हे इतनी आसानी से कैसे मिल गई ?'

'सुरेश उस होटल का सहायक मैनेजर नियुक्त हुआ है। वही दे रहा हैं मुझे यह सुनहरा अवसर।'

हरनाम अपनी बेटी को एकटक देखता रह गया था। सुरश का झमेला फिर शुरू हो गया था। उसकी पत्नी जीवित थी, तभी सुरेश ने अपनी हरकते शुरू की थीं। लक्ष्मी ने उसे घर आने से रोक दिया था और उससे न मिलने की कसम सोनिया को दे रखी थी। सुरेश के साथ उसके सबध फिर से शुरू हो जाने का बहुत दु ख हरनाम को था और उससे भी अधिक दु ख उसके पढाई छोडकर होटल मे नौकरी करने का था। उसने अपनी बेटी को बहुत मनाया, पर वह मानी नही।

अत मे उसने सोनिया से केवल इतना ही कहा था, 'बेटी, तुमने सिर्फ मेरे ही सपनो को नही तोडा, बल्कि अपनी मॉ के भी सपनो को ताडा है। जिस सुरेश के बहकावे मे तुम आ गई हो वह इस गॉव के सबसे धनी बाप का लडका है। पर वह जितना धनी है, उससे दुगुना अधिक जलील है।'

और पूरा एक वर्ष लगा था सोनिया को यह जानने-समझने मे। तब उसका पिता समदर से लौटा था। अभी उसके कपडे से बिसाइँध गई भी नही थी कि सोनिया उससे लिपटकर रोने लगी थी। अपने पिता के एक वर्ष पुराने वाक्य को सिसकियो के साथ दोहराया था, 'वह जितना धनी है उतना ही जलील भी।'

यह बात तो हरनाम को तीन-चार दिन पहले ही मालूम हो गई थी वि सुरेश की शादी इलाके के मत्री की बेटी से होने जा रही है। गॉव भर की चर्चा वही तो थी इन तीन-चार दिनो से। इसलिए हरनाम को आश्चर्य नहीं हुआ उस ब्याह की बात सोनिया से सुनकर। दु ख भी नही हुआ, क्योकि वह इस तरह की बात के लिए बहुत पहले से तैयार था। दु ख उसे इस बात का हुआ कि सोनिया पेट से थी। उसे इस बात का भी दु ख हुआ कि उसी शाम मादाम जोसलीन उसके घर आई थी और हरनाम से बोली थी कि उसकी इज्जत इसी मे है कि वह सोनिया की बात मानकर उसे उस बच्चे से रिहाई पा लेने दे। हरनाम को वह बात मान लेने मे और भी अधिक दु ख हुआ था।

मादाम जोसलीन गाबी की मॉ थी। उसे हरनाम के घर से भारी लगाव था।

बोली थी, 'अभी यह बात केवल तीन व्यक्तियो तक ही सीमित है।' अधिक देर का मतलब था—ढिढोरा पीटकर पूरे गॉव को उसकी जानकारी दे बैठना। हरनाम के लिए एक ओर अपनी बेटी के भविष्य तथा अपनी इज्जत का खयाल था और दूसरी ओर एक निर्दोष नन्ही सी जान का, पर उसे अपनी बेटी का भविष्य और अपनी इज्जत के सामने उस गुनाह को भूल जाना पडा था।

उसने जो कुछ किया था, उसमे अपनी इज्जत से अधिक उसे अपनी बेटी का खयाल था। साल भर पहले जब सोनिया यह खयाल रखे बिना कि उसका पिता खाने पर बैठा था, उसके सामने वह बात कह डाली थी, जिससे हरनाम को लगा था कि उसकी अपनी नाव समदर के बीच की किसी बहुत बडी चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो गइ है। तब भी उसे इस बात के लिए इजाजत देते हुए हरनाम के भीतर बेटी की खुशी का ही खयाल अधिक था। पर उसने उससे यह पूछा जरूर था कि क्या उससे उतनी दूर जाकर वह उसके बिना रह सकती है? उसकी उस खामोशी मे 'हॉ' की गूॅज थी। उसने उससे यह नही पूछा था कि उस अजनबी पर उसे उतना अधिक विश्वास कैसे हो चला था। वह व्यक्ति स्विट्जरलैड का था। सारा कुछ पत्र-व्यवहार के द्वारा शुरू हुआ था। हरनाम को इस बात का पता तो बाद मे चला था कि उन सारी बातो के पीछे कुछ दलाल लोग थे। साल भर मे देश की कोई चालीस-पचास लडकियो को उस चगुल मे फॅसा लिया गया था। पहले पत्र-व्यवहार, फिर तसवीरो के आदान्-प्रदान और महीने भर से कम समय मे उधर से बहुत सारे प्रलोभनो के बीच शादी के प्रस्ताव होते थे।

गाबी ने समदर के बीच मे नाव को रोककर अकुश से ऑक्टोपस फॅसाने के दौरान हरनाम से कहा था, 'मॉरीशस मे लडको की कमी है क्या? तुम उसे उन प्रलोभनो मे आने से रोकते क्यो नहीं?'

'कैसे रोकूॅ? जब छोटी थी तो माटी खाने या चूल्हे की ओर बढने से रोक सकता था। अब कैसे रोकूॅ?'

तीन महीने बाद फ्रेदेरीक ब्याह के लिए सिर से पॉव तक तैयार मॉरीशस पहुॅच आया था। उसने दामाद की तरह नही, किसी दोस्त की तरह हरनाम से हाथ मिलाकर यह जाहिर किया था कि उससे मिलकर उसे बेहद खुशी हुई थी। उसकी फ्रेच समझने मे हरनाम को थोडी दिक्कत होती थी। जो वह नही समझ पाता था, उसे सोनिया समझा देती थी। जो पद्रह दिन उसे मॉरीशस मे रहने पडे, उनमे तीन दिन उसने हरनाम के घर मे बिताए थे। शादी से पहले की तीन राते और उसके बाद की चार राते वह सोनिया के साथ होटल मे बिताकर पॉचवे दिन विदाई के लिए

हरनाम के सामने उपस्थित हो गया था। फ्रेदेरीक ने हरनाम की एक बात मानकर उसके एकदम झुके हुए सिर को थोडा सा ऊपर उठ आने का अवसर दिया था। वह सोनिया के साथ अपने ब्याह की कुछ रस्मो को हिदू विवाह-पद्धति मे मान लेने के लिए तैयार हो गया था और मदिर भी पहुँच गया था पुजारीजी से आशीर्वाद लेने के लिए। हॉ, यह दूसरी बात थी कि उसने वह आशीर्वाद पॉव पर झुककर नहीं, बल्कि पुजारीजी से हाथ मिलाकर हासिल किया था।

अपनी बेटी और दामाद को विदाई देकर हरनाम सात दिनो तक चारपाइ नहीं छोड सका था। गॉव के सभी लोग आ-आकर उसे धैर्य बॅधा जाते, यह कह जाते कि बेटी तो यो भी जीवन भर अपने घर की नही होती। वहॉ खुशी से रहेगी।

देश छोडने के पूरे दो महीने बाद उसकी चिट्ठी आई थी, जिसमे उसने लिखा था कि वह बहुत खुश है उस सुदर देश मे। उसने साथ मे उस सुदर देश की दो तसवीरे भी भेजी थी। हरनाम ने उन दो सुदर चित्रो मे सोनिया को बहुत ढूँढा था, पर वह उनमे उसे नही मिली थी। इसके बाद छह महीने उसके पत्र का प्रतीक्षा मे बीत गए। हरनाम को वे दिन बडे लबे प्रतीत हुए थे। उसके बाद जो चिट्ठी आई थी, उसमे सोनिया ने न कोई खुशी जाहिर की थी और न ही कोइ दु ख। वह चिट्ठी हिदी मे थी और हरनाम ने उसे कई बार पढा था उसके उन वाक्यो मे वह शब्द निकालने के लिए, जिससे उसे इस बात का आश्वासन मिल जाता कि उसकी बेटी वहॉ खुश थी। इसके बाद तो उधर से कोई चिट्ठी आई ही नहीं।

आज 'वीक-एड' के पन्ने पर उसने उसके चित्र को देखा। उस चेहरे पर की उदासी को देखकर उसे समझते देर नहीं लगी थी कि वह खुशहाली की तसवीर नही थी। उसने जब अखबार पढकर उसे समझना शुरू किया था तो हरनाम को लगा था कि इससे बेहतर तो यही था कि उसे उसकी खबर बिलकुल ही न मिली होती। दु ख चाहे कितना ही बडा क्यो न हो, उससे आदमी का सिर नहीं झुकता, लेकिन अखबार की उन बातो ने तो उसके सिर को झुका दिया था। लेख का शीर्षक था—

'स्विट्जरलैड मे ब्याही मॉरीशसीय लडकियो की वेश्या बनने की मजबूरी'

उस लेख से हरनाम यह जान सका था कि उस देश मे शादी करके गई मॉरीशस की तीस लडकियो मे उसकी इकलौती बेटी भी थी। जो आदमी उसे ब्याहकर ले गया था उसने उसकी बेटी को भी उन अन्य लडकियो की तरह दो महीने पत्नी के रूप मे रखा। फिर जिस तरह बाकी के पतियो ने उन्हे वेश्यालयो मे जा छोडा था, ठीक उसी तरह सोनिया से भी उसके सारे कपडे, गहने—यहॉ तक कि पासपोर्ट भी छीनकर उसे वेश्यालय के हवाले कर दिया गया था। मॉरीशस के एक

पत्रकार की तहकीकात के बाद और पडोसी देश के मॉरीशसीय उच्चायुक्त की सहायता से उन तीस लडकियो मे से पॉच को उस चगुल से छुडाया जा चुका था। उन्हे सरकारी खर्च पर मॉरीशस लौटाया जा रहा था। सोमवार की शाम के हवाई जहाज से वे पॉचो अपने देश को लौट रही थी। पर मॉरीशस के स्वास्थ्य अधिकारियो को प्राप्त सूचनाओ के तहत इस बात का डर था कि उन लडकियो मे से दो-तीन को यौन-सबधी जानलेवा रोग लग चुका है। इसलिए मॉरीशस पहुँचकर उन पॉचो को स्वास्थ्य विभाग के ऑब्जरवेशन मे सात दिनो तक रहना होगा।

हरनाम के भीतर बेटी का मोह खडित हो गया था। उसे अपनी पत्नी का मोह जकडे हुए था। उसे चिता थी उसकी आत्मा के जार-बेजार होने की। दस दिनो के भीतर देश भर मे महाशिवरात्रि का त्योहार था। ग्रामसभा की ओर से यह तय हुआ था कि उस अवसर पर मदिर मे प्रधानमत्री, शिक्षा मत्री और कृषि मत्री की उपस्थिति मे हरनाम के सामाजिक और धामिक कार्यो के लिए उसका भव्य स्वागत किया जाएगा। गॉव का मदिर पूरे गॉव के साथ एकदम पीछे छूट चुका था। अँधेरा फैलता ही गया था। तूफान की गति बढती ही गई थी। समुद्र के ज्वार-भाटे ऊँचे उठते गए थे। एक बार गगा-स्नान के अवसर पर गॉव के बडे बच्चो को नौका-विहार करा चुकने के बाद उसने गाबी को घर भेज दिया था और अपनी पत्नी के साथ नाव मे घूमने निकल गया था। दो या तीन बार स अधिक उसकी पत्नी उसकी नाव पर नही चढी थी। उस दिन भी हरनाम की जिद पर ही वह सूर्यास्त को कुछ अधिक करीब से देख आने के लिए तैयार हो गई थी। उस दिन हरनाम ने डूबते सूर्य की सुनहली रोशनी के बीचोबीच नाव को खेकर तट तक लौटा था।

बीच मे उसकी पत्नी ने उससे कहा था, 'तुमने देखा, हमारे गॉव मे ज्यादा पत्नियॉ अपने पतियो से पहले मरती हैं।'

'क्या मतलब ?'

'हो सकता है कि मैं भी तुमसे पहले मरूँ।'

'तुम मुझसे ग्यारह साल छोटी हो।'

'मौत उम्र देखकर बहुत कम आती है। मै अगर तुमसे पहले मर गई तो तुम सोनिया को डॉक्टर बनाना भूल मत जाना। मेरे पिता ने जो दो बीघे खेत दिया है, उसे बेच दोगे तो पूरा खर्च '

'क्या बोलने लगीं ?'

'तुम अगर मेरी बेटी को डॉक्टर नहीं बना पाए तो मैं मरकर भी शाति नही पाऊँगी।'

'तुम्हे मरने दूँगा, तब तो मरोगी तुम।'

हरनाम उस दिन चार-पॉच सौ लोगो को किसी से बिना एक पैसा लिये नाव मे घुमा चुका था। इस बात से वह खुश था। इसलिए मजाक करने की भी स्थिति मे था।

'तुम अगर मुझसे पहले मर भी गई तो मैं इस नाव मे तुम्हे ढूँढने निकल जाऊँगा और तुम्हे मौत से छुडाकर ही लौटूँगा।'

प्रलयकर गति ले चुका था तूफान। मूसलधार वर्षा भी शुरू हो चुकी थी। ज्वार-भाटे बढते ही गए। नाव मे पानी भरता गया। फिर भी हरनाम उसे आगे बढाने की हर कोशिश करता रहा। उस घटाटोप अँधेरे और दहाडते समदर के बीच उमे इतना ज्ञान अवश्य था कि उसकी नाव क्षितिज की ओर ही बढी जा रही थी।

उसकी पत्नी की मृत्यु पर जब सोनिया उससे पूछ बैठी थी कि उसकी माँ मरकर कहाॅ पहुॅची होगी, तो उसने कहा था, 'क्षितिज के उस पार।'

□□□



**अभिमन्यु अन**

**जन्म** ९ अगस्त, १९३७ क

**प्रकाशन** तीस उपन्यास,
सग्रह, पॉच कविता-सग्रह
दो इतिहास पुस्तके तथा दो

इसक अलावा पॉच विवि
साथ-साथ फ्रेच मे अनूदित

**पता** सवादिता, त्रिओले,